

30.00

JULY 2012

मरयाम

औरत:

सलाहियों का खजाना

उस्ताद का गुस्सा

बरसात,

हुस्न और तंदुरुस्ती

युरोप की बेहयाई
और बेशर्मी

इम्तेहान दुनिया के

मजाक उड़ाना

मेहदी :

एक इंकेलाब में 10 इंकेलाब

यतीम बच्चे

بہارِ مہدی



Turn Page
for Gift
Coupon

25

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौके पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

खुशियों की सौगात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 खुशानसीबों को मिलेंगे खूबसूरत
ज्वेलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतज़ार कीजिए अपनी बारी का।

इस महीने जिन 5 खुशानसीबों को
मरयम की तरफ से खूबसूरत तोहफे दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:

Subscription ID: A-00487
Ms. Bilqees Fatima, Lucknow

Subscription ID: A-00780
Mr. Hasan Raza Zaidi, Varanasi

Subscription ID: A-00227
Mr. Aale Nabi, Lucknow

Subscription ID: A-00343
Mr. T. Haider, Noida

Subscription ID: A-00633
Ms. Adeeba, Ghaziabad



इमामे ज़माना!
दुनिया आपके इस्तेज़ार में है...



इमाम मंहदी:

किसी भी इन्सान के लिए जायज़ नहीं है कि मालिक की इजाज़त के बिना
उसकी किसी चीज़ को इस्तेमाल करे।

RNI No: Title Code: UPHIN41897

Monthly Magazine

मरयम

Vol:1 | Issue: 5 | July 2012

इस महीने आप पढ़ेंगी...

मेहदी ^अ : एक इंकलाब में 10 इंकलाब	6
जिंदगी की शाम	9
औरत: सलाहियों का खज़ाना	10
इम्तेहान दुनिया के	12
ज़बान की सख्ती-नर्मी	14
बरसात, हुस्न और तंदुरुस्ती	15
अदालत और इन्साफ़	17
हमारे बच्चे	18
उस्ताद का गुस्सा	21
यतीम बच्चे	22
मज़ाक़ उड़ाना	25
जीने का मक़सद	27
फ़ूट जूझ (डिज़)	28
यूरोप की बेहयाई और बेशर्मी	30
हज़ और ज़ियारत	33
पीछा करने वाली आंख	34
करेले (कहानी)	36
सेहत	38
नफ़रत	40
दुश्मनी की बुनियाद मत डालिए	42

Editor

Mohammad Hasan Naqvi

Editorial Board

Nazar Abbas Rizvi
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor

Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor

Fasahat Husain


Assist. Exec. Editor

M. Aqeel Zaidi

Contributors

Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Fatima Qummi
M. Mohsin Zaidi
Tauseef Qambar

Graphic Designer

 Siraj Abidi
9839099435

Typist

S. Sufyan Ahmad

15 SHABAN
Wiladat

Imam

MEHDI
a.s.

‘मरयम’ में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नहीं है।

‘मरयम’ में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और ‘मरयम’ में छपे लेख और तस्वीरें ‘मरयम’ की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले ‘मरयम’ से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। ‘मरयम’ में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम ज़वाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक ‘मरयम’ के लिए आने वाले कंटेंट्स में ज़रूरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprietor S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

حضرت امام رضا علیہ السلام

...علیک ابداً باطل الوقت

سار

الوقت

इमाम अली रज़ा:

वमाज़

हमेशा अव्वले वक़्त पढ़ो !

मेहदी^{अ०} एक इंक़ेलाब में 10 इंक़ेलाब



■ प्रोफ़ेसर हसन रहीमपूर अज़ग़दी
तेहरान युनिवर्सिटी

हम इमामे ज़माना^{अ०} के इंक़ेलाब को जिस एंगल से भी देखेंगे, हमें मालूम होगा कि यह एक अज़ीम इंक़ेलाब है। यह इंक़ेलाब सिर्फ़ सियासी इंक़ेलाब नहीं है बल्कि रिवायतों की रौशनी में देखा जाए तो यह इन्सानि ज़िंदगी के हर एंगल से एक बड़ा इंक़ेलाब है।

1- इंट्लेक्चुअल इंक़ेलाब: रिवायत में आया है कि जब इमामे ज़माना^{अ०} जुहूर करेंगे तो इन्सान की अक्ल मुकम्मल हो जाएगी। उसके सामने से सारे बंद रास्ते खुल जाएंगे और इन्सान का अख़लाक और कैरेक्टर बेहतरीन हो जाएगा। यानी इन्सानियत की सारी दिली तमन्नायें पूरी हो जाएंगी।

इस्लामी कल्चर में अक्ल और अख़लाक दोनों जमा हो सकते हैं। जबकि वेस्टर्न सोच रखने वालों का कहना है कि यह दोनों एक साथ नहीं रह सकते यानी अगर इन्सान इल्म, तरक्की और अक्ल व फ़िक्र में आगे बढ़ना चाहे तो फिर अख़लाक़ी उसूलों के साथ नहीं चला जा सकता...! पश्चिम वाले इल्म और अख़लाक़ को हमेशा अलग-अलग रखते हैं।

रिवायत में मिलता है कि मेहदवी दौर में

इन्सानों की अक्ल व समझ और इल्म का आलम यह होगा कि घर में बैठी हुई औरतें अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों के अलावा इल्म और Wisdom, अक्ल और Logic की ऊँचाइयों पर होंगी। यानी वह अपने दीनी व दुनियावी तमाम इल्मी मामलात खुद हल कर सकेंगी।

2- Rights का इंक़ेलाब: मेहदवी इंक़ेलाब, इल्मी इंक़ेलाब के अलावा Rights का भी इंक़ेलाब होगा। कैरेक्टर की पाकीज़गी और शराफ़त औरत का बुनियादी हक़ और ज़ेवर है जो आज के समाज में छीन लिया गया है। मेहदवी इंक़ेलाब में यह सब चीज़ें वापस अपनी जगह पर पलट आएंगी और औरत के समाजी रोल को इमामे ज़माना^{अ०} दोबारा से ज़िंदा करेंगे। रिवायत में मिलता है कि इमाम के 313 ख़ास सहाबियों में से 50 औरतें होंगी। इस तादाद से अच्छी तरह अंदाज़ा हो जाता है कि एक ग्लोबल इंक़ेलाब में औरतों का कितना रोल है। इसके अलावा हर ज़ालिम से मज़लूम और कमज़ोरों के हक़ में हिसाब लिया जाएगा।

3- एकोनॉमी और टेक्नॉलोज़ी का इंक़ेलाब:

इमाम मोहम्मद बाकिर^{अ०} से रिवायत है, “सारी ज़मीन इमाम मेहदी^{अ०} के कंट्रोल में आ जाएगी। ज़मीन के ख़ज़ाने, तमाम नेमतें और रहमतें उनके हाथ में होंगी।” इस रिवायत का मतलब यह है कि उनके ज़माने में तमाम ज़मीनी ख़ज़ाने इन्सानों के हक़ में Cash होंगे। ज़ाहिर सी बात है कि जब तमाम ख़ज़ाने कैश हों तो फिर लोगों की एकोनॉमिकल सूरते हाल भी ज़बरदस्त होगी और उन तमाम ख़ज़ानों को बेहतर तौर पर इस्तेमाल किया जाएगा जो नई टेक्नॉलोज़ी से ही मुमकिन है। एक और रिवायत में है, “उनके ज़माने में दौलत व नेमत की ऐसी ज़्यादती होगी कि इन्सान जिस जगह भी क़दम रखेगा वहाँ हरियाली होगी।” रिवायत में यह भी मिलता है कि खुदा ने दुनिया की शुरुआत से अब तक जितनी नेमतें इन्सानों को दी हैं वह सब इमामे ज़माना^{अ०} के दौर में रहने वालों को देगा लेकिन यह फ़र्क़ ज़रूर रहेगा कि उन नेमतों से इन्सान का दिमाग़ ख़राब नहीं होगा।



4- इन्सानी रिश्तों में इंकेलाब: एक शख्स

इमाम बाकिर^{३०} के पास आया और कहा, “कूफा शहर में हमारी यानी आपके चाहने वालों की तादाद काफी हो गई है और हम अच्छे खासे सिस्टमेटिक भी हैं। अगर आप सही समझते हों तो हम लोग बनी अब्बास के खिलाफ जंग करने के लिए तैयार हैं?” इमाम ने फरमाया, “क्या तुम लोगों को एक-दूसरे पर इतना भरोसा है कि अगर तुम में से कोई दूसरे की जेब से बिना बताए कुछ उठा ले तो दूसरा शख्स नाराज न हो? यानी क्या तुम्हारे ताल्लुकात इतने गहरे हैं कि एक दूसरे के माल को अपना समझकर इस्तेमाल करो?” उस शख्स ने कहा, “मौला! ऐसा रिश्ता तो नहीं है।” तब इमाम ने फरमाया, “तो फिर यह लोग एक दूसरे के लिए जान और खून का नज़राना कैसे पेश करेंगे? जो लोग अभी पैसे के मामले में साफ नहीं हैं वह लोग जान के मरहले से कैसे गुजरेंगे...?”

लेकिन इमाम^{३०} के ज़माने में यह इंकेलाब भी आया।

5- इंसाफ के साथ दौलत का डिस्ट्रीब्यूशन:

रसूल इस्लाम^{३१} से एक रिवायत है कि जिसमें आप ने फरमाया, “मेहदी बैतुलमाल को सारी इन्सानियत में बराबर से बांटेंगे। बैतुलमाल की तकसीम के बारे में उनके लिए कोई काला, गोरा न होगा, कोई आका और गुलाम न होगा। उनके लिए सब लोग एक जैसे होंगे। इसीलिए लोग ज़कात लेकर मोहताजों को ढूँढ़ेंगे तब भी कोई ज़रूरतमंद नहीं मिलेगा।”

आज के ज़माने में कुछ शहरों या मुल्कों के बारे में ऐसा ग़लत नज़रिया पाया जाता है कि फुल्ल शहर या मुल्क. में सब अमीर हो

गए हैं। लेकिन ज़रा ध्यान दें तो पता चलेगा कि उसी शहर में सैकड़ों लोग अब भी फुटपाथ पर सोते हैं? उसी शहर में माइनोंरिटी को पहले दर्जे का और मेजोरिटी को दूसरे दर्जे का शहरी समझा जाता है?

6- Human Rights का इंकेलाब:

इस्हाक बिन अम्मार इमाम जाफर सादिक^{३२} से रिवायत नक़ल करते हैं, “एक दिन मैं इमाम के पास था तो आप ने Human Rights के बारे में कुछ ऐसी बातें बयान कीं जो देखने में छोटी-छोटी हैं और लोग इस तरफ ध्यान नहीं देते। जैसे रसूल इस्लाम^{३३} ने फरमाया है कि अगर तुम अपने घर में खा पी कर सो गए और तुम्हारे पड़ोस में कोई भूका सो गया है तो तुम्हें अपने लिए मुसलमान का टाइटिल इस्तेमाल करने का हक नहीं है। आप ने यह भी कहा कि अगर कहीं से गुज़र रहे हो तो आँखें बंद करके मत गुज़रो, तुम्हारे आसपास बहुत से मरीज़ और ग़रीब इन्सान मौजूद हो सकते हैं।

रावी कहता है कि जब इमाम ने यह बातें बयान कीं तो मैं घबरा ने लगा और सोचने लगा कि अगर यह सब Human Rights हैं तो फिर हमारा क्या बनेगा? क्या हम भी मुसलमान हैं? इसलिए मैंने फ़ौरन इमाम से सवाल किया कि मौला! हम लोग तो तबाह व बरबाद हो गए? क्योंकि आप ने जो कुछ कहा है वह सब हम में मौजूद नहीं है। तब इमाम ने मेरी हालत महसूस करते हुए फरमाया कि मैंने जो कुछ

बयान किया है वह एक आइडियल समाज की तस्वीर थी और ऐसी खूबसूरत तस्वीर सिर्फ़ और सिर्फ़ तब ही बन सकती है जब हमारे काएम क़याम फरमाएंगे। लेकिन यह बात याद रहे कि ऐसा समाज हमारे सारे इमामों के दिल की आरजू है इसलिए तुम से जितना हो सके इस खूबसूरत तस्वीर में रंग भरने की कोशिश करते रहो और तुम पर आज भी ज़रूरी है कि एक-दूसरे की हालत को जानो और एक-दूसरे की मदद करो। कोई भी दूसरे की हार या कमज़ोरी पर खुश न हो। एक-दूसरे के गुम और खुशी को दिल की गहराईयों से महसूस करो। एक-दूसरे को भूल मत जाना क्योंकि इस तरह Status Gap बढ़ जाता है जिस से समाज में बुराईयों और फ़साद का बोलबाला हो जाता है और फ़साद न खुदा को पसंद है और न हमें।

लेकिन अफ़सोस कि आज-कल भाई को भाई के गुम और खुशी की परवाह नहीं होती। पड़ोसी को पड़ोसी का नाम तक पता नहीं होता। मोमिन, मोमिन से दूर भागता है। टीचर को स्टूडेंट्स की सलाहियतों का पता नहीं और स्टूडेंट्स को टीचर की हैसियत मालूम नहीं है।

7- ‘सिर्फ़ अपना फ़ाएदा’ वाली सोच ख़त्म:

रिवायत में है कि सब लोगों की माली हालत बहुत अच्छी होगी लेकिन दूसरों से फ़ाएदा उठाने वाली सोच ख़त्म हो जाएगी। ऐसा नहीं होगा कि जितना

खा सकते हो खाओ और जो बच जाए फ़िज में रख दो और हो सके तो दूसरे के हाथ से यहाँ तक कि मुँह से छीन लो, यह सब नहीं होगा। और अगर कहीं हुआ भी तो वह इमाम के इंसाफ़ से बच नहीं सकेगा। सच्चाई तो यह



الحمل مولدنا

है कि माल और दौलत बुरी चीज़ है लेकिन दौलत की वजह से हैवान बन जाना निहायत बुरा है।

किसी ने इमाम जाफर सादिक^{रह} से पूछा कि हम ने सुना है कि आप ने फरमाया है कि मोमिन का मोमिन से फाएदा लेना सूद है। इमाम ने फरमाया कि हाँ! यह सही है। मैंने कहा है लेकिन यह मेहदवी समाज की तस्वीर है कि उस समाज में सब एक-दूसरे की खिदमत करेंगे, कोई किसी से मज़दूरी नहीं लेगा। सब लोग इसी तरह होंगे। एक-दूसरे से सूद (फाएदा) लेना हराम होगा सब एक-दूसरे की खिदमत करेंगे।

8- अन्न और सेफ्टी का इंकैलाब: किसी भी समाज में कुछ चीज़ें रीढ़ की हड्डी की तरह होती हैं। जैसे एजुकेशन, हेल्थ, कैरेक्टर... वगैरा। ऐसी ही एक अहम चीज़ पब्लिक सेफ्टी और अन्न है। अन्न के बिना कोई भी समाज, कोई भी कौम आगे नहीं बढ़ सकती। जिसकी सामने की मिसाल हमारे मौजूदा हालात हैं कि कोई छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या ग़रीब कोई भी खुद को सेफ नहीं समझता। बदमाश, दहशतगर्द, गुंडे, डाकू और लुटेरे सबके सब आज़ादी के साथ दनदनाते फिर रहे हैं और कोई पूछने वाला नहीं है, जिस तरफ़ रुख़ करें वहीं बम फट रहे हैं। जिसकी वजह से एजुकेशन और बिज़नेस से लेकर लोगों के आराम व सुकून से रिलेटेड हर तरह के काम ठप होकर रह गए हैं। मेहदवी समाज में सबसे ज़्यादा ध्यान अन्न और पब्लिक सेफ्टी की तरफ़ दिया जाएगा।

9- पैदावार और हरियाली का इंकैलाब: रिवायत में है कि बंजर ज़मीन इमाम मेहदी के ज़रिए आबाद और हरी-भरी हो जाएगी। हर तरफ़ हरियाली, खुशहाली और ताज़गी की झलक होगी... दिलों में भी बहारें लौट आएंगी। गुम और खुशी होगी लेकिन इन्सानी गुम और खुशी, हैवानी खुशी का बिल्कुल वुजूद नहीं होगा। आज के ज़माने के

जैसा नहीं कि जहाँ लोग दूसरों के गुम से खुश और दूसरों की खुशी पर गुमगीन होते हैं!! मेहदवी समाज में सब कुछ बदल जाएगा। इन्शाअल्लाह!

10- दीन को समझने का इंकैलाब: मेहदवी समाज में दीन की पहचान अपनी आखिरी बुलंदी को पहुँच जाएगी। इमाम हर तरह के सवालों और बिदअतों को ख़त्म कर देंगे। कुरआन के नूरानी चेहरे से सदियों पुरानी धूल को हटा देंगे। तब दिलों में बहार और सोच में निखार आएगा। लेकिन दीन के जाली ठेकेदारों को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आएगी और वह लोग सिफ़्फ़ीन की जंग की तरह एक बार फिर कुरआन हाथों में उठाकर मेहदी^{रह} के मुक़ाबले में आ जाएंगे और इल्ज़ाम लगाएंगे कि यह क्या नया दीन लाए हो? जो बातें कर रहे हो वह सब की सब नई हैं। तुम से पहले न किसी ने यह बयान की है और न ही किसी ने सुनी है।

इमाम^{रह} पर इल्ज़ाम लगाने वाले दो तरह के लोग होंगे। कुछ वह लोग जो ख़यालों ही ख़यालों में अपने आपको बहुत पढ़ा-लिखा समझते हैं और दूसरे वही दरबारी व साम्राज्यी मुल्ला जिनको अपनी दुकान के बंद हो जाने का ख़तरा होगा। इन लोगों ने हर बहाने से दीन का नाम तो लिया है मगर दीन के लिए ज़रा सा भी कुछ नहीं किया। इन लोगों ने दीनी माल व दौलत से कोठियाँ और गाड़ियाँ तो बना ली हैं लेकिन दीन की खातिर कभी एक थप्पड़ भी नहीं खाया। यह लोग मुरीद बनाने में उस्ताद हैं और शोहरत के आशिक हैं। ऐसे लोग खुद को मास्टर माइंड समझते हैं और मोजिज़े और करामात के दावेदार होते हैं।

इमामे ज़माना^{रह} की असल जंग जुल्म व जेहालत से होगी। वह दीने खुदा को वैसा ही बयान करेंगे जैसा नाज़िल हुआ था। अब अगर किसी की दुकान को नुक़सान पहुँचता है या किसी के मुरीद कम हो जाते हैं तो होते रहें। आप किसी जाहिल

की परवाह नहीं करेंगे। और किसी बिदअती दुकानदार को बिल्कुल माफ़ नहीं करेंगे।

आखिर में यह कि शियों पर इल्ज़ाम लगाया जाता है कि शिया किसी और कुरआन को मानते हैं, यह सरासर ग़लत और इल्ज़ाम है। शिया नज़रिया कभी यह नहीं रहा कि हमारा कुरआन दूसरा है या इस कुरआन की तहरीफ़ हुई है। दरअसल दूसरों को हमारी रिवायत के समझने में ग़लत-फहमी हुई है। हमारी रिवायत का मतलब यह है कि रसूल इस्लाम^{रह} के बाद जितनी भी बिदअतों ने जन्म लिया और कुरआन करीम की जितनी भी ग़लत तफ़सीरें और तावीलें हुई हैं इमाम^{रह} आकर उन सबको ख़त्म करके असली तफ़सीर बयान करेंगे। ●

मरयम' के सब्सक्राइबर्स ध्यान दें

मेगजीन हर महीने नार्मल डाक के ज़रिए ही पोस्ट की जाती है। इसलिए रजिस्टर्ड डाक के लिए बार-बार ज़ोर न दें।

अगर किसी को रजिस्टर्ड डाक से मेगजीन मगाना हो तो उसके लिए अलग से 240 रूपए सालाना देने होंगे।



जिंदगी की शाम ■ राजिया रिज़वी

आज-कल 'डे' का चलन बहुत आम हो गया है जिसमें मदर्स-डे और फ़ादर्स-डे भी बहुत धूम से मनाया जाता है (हालांकि माँ-बाप के लिए एक डे बना देना ही इंसाफ़ नहीं है)। वहीं दूसरी तरफ़ कुछ माँ-बाप तो साल के एक दिन भी "मम्मी" या "पापा" सुनने के लिए तड़पते रहते हैं, कोई अपना उनके पास फटकता भी नहीं है। आज के दौर की एक कड़वी हकीकत माँ-बाप की बूढ़ी आँखों से बहते आँसू की दास्तान है जिनके दिल के दर्द को एक शायर ने इस तरह बयाँ किया है:

“सूनी निगाहों में यादों का मंज़र

बेबस दिल में दर्द का समन्दर

यह तोहफ़ा दिया है जिगर के उन टुकड़ों ने
जिनके नाम लिख दी सारी उमर।”

आए दिन अखबारों में बुजुर्गों के साथ गलत सुलूक या मर्डर की खबरें आती रहती हैं जिन्हें हम पढ़ते हैं और पढ़कर भुला देते हैं। इंडिया में सर्वे के हिसाब से 40 साल से ऊपर के 20% बुजुर्ग खुद को अपने ही घर में अनजाना महसूस करते हैं। इनमें से कुछ बुजुर्गों को फिज़िकल टार्चर और मेन्टल टार्चर के साथ जीना पड़ता है जैसे उनको चोट पहुँचाना, इलाज से महसूस रखना, ज़रूरत से ज़्यादा दवा देना, झूठे इल्ज़ाम लगाना, अकेला छोड़ना, बेइज़्जत करना, बहुत ज़्यादा कंट्रोल में रखना वगैरह... बुढ़ापे में वैसे भी इन्सान बहुत थक चुका होता है उस पर से बच्चों के दिये हुए ज़ख्म नासूर बन जाते हैं। वहीं माँ-बाप जो अपनी खुशियों की परवाह किए बगैर हमें इस काबिल बनाते हैं क्या हमें उन्हें बदले में इस तरीके की तकलीफ़ देना चाहिए? यहाँ पर मैं एक आँखों देखा किस्सा बता रही हूँ। एक दिन मैं अपने एक रिश्तेदार को देखने लखनऊ के एक हॉस्पिटल गई। वहाँ पर मैंने एक औरत को बहुत ख़राब कंडीशन में एडमिट देखा, नर्स वगैरह ही उनकी देखभाल कर रही थी। नर्स ने ही बताया कि यह औरत बहुत अमीर घर से है। इसके तीन बच्चे हैं और यह अपने बड़े बेटे के साथ रहती थी। इसका घर

तीन फ़्लोर का बना है पूरे घर के हर रूम में A.C. लगे हैं लेकिन क्या आप को पता है कि यह बूढ़ी औरत किस रूम में रहती थी? घर के टेरेस पर टीनशेड के नीचे जहाँ पर गर्मी का अंदाज़ा आप लगा सकती हैं। जब इनको हॉस्पिटल के लोग लेने गए तो देखा इनके सर में विस्तर पर जुओं का अंबार है। जिस्म पर जगह-जगह ज़ख्म हो गए थे। किस तकलीफ़ में यह माँ थी इसका अंदाज़ा शायद इसके बच्चों को तो नहीं था लेकिन दूसरों को अफ़सोस हो रहा था क्या इस माँ ने कभी इन बच्चों की परवरिश करते वक़्त सोचा था कि आखिरी वक़्त में यह बच्चे इस तरह का सुलूक करेंगे। ऐसे ही न जाने कितने लोग हैं जिनके साथ इस तरह का सुलूक होता है। यह वही माँ-बाप हैं जिन्होंने हमें वुज़ूद दिया, हमारी हिफ़ाज़त का ख़याल दुनिया में आने से पहले भी रखा और बाद में भी, क़दम-क़दम पर साए की तरह साथ रहे, आज अगर बूढ़े माँ-बाप को सहारे की ज़रूरत है तो हम उन्हें बेसहारा छोड़ दें यह बात हमारी सोसाइटी के लिए भी ख़राब है और Next जनरेशन के लिए भी। आज हम जैसा सुलूक अपने माँ-बाप के साथ करेंगे तो कल अपने बच्चों से भी उसी सुलूक के लिए तैयार रहें।

ऐसे बुजुर्ग माँ-बाप को एक ख़ास सजेसन

बुढ़ापे का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि इन्सान जीना छोड़ दे और बेड पर पड़े-पड़े मौत

का इंतज़ार करे। वैसे तो इस उम्र में ज़िम्मेदारियाँ ख़त्म हो जाती हैं इसलिए अपने नमाज़ और इस्तेग़फ़ार के अलावा अपनी केयर के लिए भी कुछ वक़्त निकालें। हंसमुख रहें लोगों से मिलते-जुलते रहें ताकि दर्द का एहसास कम हो। घर में दख़लअंदाज़ी से बचें और बच्चों को अपनी ज़िंदगी जीने दें। बच्चों की भी तारीफ़ करें। अपनी ज़रूरत बनाए रखने के लिए घर के छोटे-बड़े कामों में हिस्सा लीजिए। सबसे मेन बात सारी प्रापर्टी, बैंक-बैलेंस बच्चों के नाम न कर दें बल्कि उसमें से कुछ अपने लिए भी बचा कर रखिए क्योंकि आप अपने हाथों से पैसा खर्च करेंगे तो आप में कांफिडेंस भी रहेगा और घर में अहमियत भी बनी रहेगी।

बच्चों से ख़ास रिक्वेस्ट

यह ज़रूरी नहीं है कि हर बार बच्चे ही ग़लत हों। कहीं-कहीं बुजुर्ग बहुत गुस्सेवर और चिड़चिड़े होते हैं फिर भी हमें बुजुर्ग माँ-बाप के चिड़चिड़ेपन या गुस्से को समझना चाहिए। ज़्यादातर इस उम्र में बीमारियाँ घेर लेती हैं, कुछ हार्मोनस प्रॉब्लम भी होते हैं और इसके अलावा मौत का ख़ौफ़, अकेलापन उन्हें चिड़चिड़ा बना देता है जिसकी वजह से अक्सर घर का माहोल ख़राब हो जाता है। इसके लिए हमें समझदारी और सही देखभाल पर थोड़ा वक़्त देने की ज़रूरत है। मदर्स डे और फ़ादर्स डे जो कि अभी जल्दी ही गुज़रे हैं, इस मौके पर यह आर्टिकल लिखकर हम उन बच्चों तक यह मैसेज पहुँचाना चाहते हैं कि हम अपने घर में या अपने आसपास इस तरह का सुलूक बुजुर्गों के साथ होता देखते हैं और ख़ामोश रहते हैं। इसके लिए हमें आवाज़ उठानी चाहिए और उनकी तकलीफ़ को समझकर उनके आँसुओं की जगह उन्हें मुस्कुराने का मौका देना चाहिए। बस ज़रूरत है तो थोड़ी कोशिश और ख़ौफ़े खुदा की। ●



औरतः सलाहियतों का खज़ाना

■ उज़्मा हुसैनी

मियाँ-बीवी का रिश्ता असल में मोहब्बतों का रिश्ता है, आपसी समझौते का और एक-दूसरे की मदद और हमदर्दी का रिश्ता है।

जैसा कि खुदावंदे आलम कुरआने करीम में फरमाता है, “उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम ही में से पैदा किया है ताकि तुम्हें इस से सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे दरमियान मोहब्बत और रहमत करार दी है।”⁽¹⁾

खुदा के बनाए हुए उसूलों और हकों को मियाँ-बीवी तब इस्तेमाल करते हैं जब उनके बीच आपसी इस्तेलाफ़ और झगड़े पैदा होने लगें। ऐसे में इससे बचने का रास्ता यही है कि अपने-अपने हकों का सही इस्तेमाल किया जाए, वैसे हर तरह

के इस्तेलाफ़ और झगड़े से बचने का सबसे अच्छा रास्ता यह है कि मोहब्बत और फ़िदाकारी से काम लिया जाए।

आमतौर पर लोग अजीब-अजीब सवाल करते हैं कि औरत को किसी काम में शौहर से इजाज़त लेने की ज़रूरत क्यों है? या तलाक़ मर्द का हक़ क्यों है? वगैरा-वगैरा जबकि उनको यह नहीं मालूम कि खुदा का कोई भी क़ानून हिक्मत से ख़ाली नहीं होता।

ऐसा ही एक सवाल अभी कुछ दिन पहले सुनने में आया।

दरअसल मैं अपनी एक दोस्त के यहाँ गई थी।

मेरी वह दोस्त अपनी सास के साथ रहती थीं। मैं जब वहाँ पहुँची तो देखा कि उसकी अपने शौहर से किसी बात पर डिस्कस चल रही है। पूछने पर मालूम हुआ कि उसके हज़्बेन्ड के ज़हन में एक सवाल है जिसका कोई भी सही जवाब उसको अभी तक नहीं मिल सका है।

वह सवाल यह था कि “इस्लाम ने औरत पर मर्द के घर में खाना बनाना, सफ़ाई करना और दूसरे घरेलू काम करना वाजिब क्यों नहीं किया, अगर औरत खाना न बनाए तो क्या हम भूखे रहें? हमारी माँ क्या खाएँ? या फिर मैं सर्विस और बाहर के काम छोड़कर खाना बनाऊँ?”

मैंने अपनी दोस्त से कहा कि जिस तरह से मर्द के अंदर तरह-तरह की सलाहियतें पाई जाती हैं और अगर इन सलाहियतों को निखारने का सही मौक़ा और तरीक़ा मिल जाए तो उस से वह समाज में अपनी एक शख्सियत बना लेता है, उसी तरह औरतों के अंदर भी हज़ारों तरह की सलाहियतें पाई जाती हैं। अगर उनको भी सही मौक़ा दिया जाए तो वह भी दीन, क़ौम और समाज की ख़िदमत करके अपनी एक शख्सियत बना सकती हैं। ऐसे में उनको किचन में क़ैद करना दरअसल उनकी शख्सियत को कुचल देना है।

घर की सफ़ाई और किचन का काम तो किसी भी जाहिल औरत को हज़ार-दो हज़ार रूपए देकर कराया जा सकता है। ऐसे में अगर औरत को इस काम के लिए मजबूर किया जाए तो उसकी पूरी शख्सियत वही दो हज़ार रुपये में ही सिमट कर रह जाएगी और उसकी पढ़ाई-लिखाई और दूसरी सलाहियतों का कोई नतीजा नहीं निकलेगा।

इस्लाम मर्द और औरत के बीच की इस दो नज़री से औरत को बचाना चाहता है, इसलिए उसने घर के कामों को वाजिब करके औरत को क़ैद नहीं किया बल्कि उसे अपनी सलाहियतों को उभारने की पूरी आज़ादी दी।

लेकिन जिस तरह हर ख़िदमत की कुछ शरतें होती हैं उसी तरह इसकी भी कुछ शरतें हैं:

1- अच्छे काम

जिस तरह मर्द की अच्छी और क्रिएटिव सलाहियतें ही समाज के काम आती हैं और उसकी शख्सियत को बनाती हैं उसी तरह औरत की भी अच्छी और क्रिएटिव सलाहियतें ही समाज के काम आती हैं। अगर औरत यह कहने लगे कि हुस्न वह नेमत है जो खुदा ने हम को दी है, हम समाज पर इसकी नुमाईश करना चाहते हैं और वह कम से कम लिबास में बेहिजाब अपने हुस्न की नुमाईश

करने लगे तो औरत के इस काम से समाज मरीज़ तो हो सकता है, मगर समाज का इसमें कोई फायदा नहीं है।

2- दर्जाबंदी

हर इंसान के लिए कुछ काम ऐसे होते हैं जो दूसरे सारे कामों से अहम होते हैं। इसलिए उनको सबसे पहले करना चाहिए।

जैसे मर्द के लिए यतीमों की हेल्प, पड़ोसियों की हेल्प, गरीबों की हेल्प और ज़रूरतमंदों की मदद करना बहुत अच्छी बात है मगर अपनी फैमिली और बच्चों का खर्च सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

अगर कोई अपनी फैमिली का खर्च न चलाए और दूसरे सारे अच्छे काम करता रहे तो हर आदमी उसको बुरा कहेगा और शायद खुदा भी उसके इस अमल को कुबूल न करे।

इसी तरह औरत के लिए भी कुछ काम ज़्यादा ज़रूरी और अहम हैं और वह उसकी ज़िम्मेदारी है, जिनको पहले करना उसके लिए ज़रूरी है। अगर वह इन कामों को न करे तो भले ही कुछ भी करे, उसकी ज़िम्मेदारी कभी भी पूरी नहीं होगी।

जैसे एक मैनेजर की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपने आफिस के पूरे काम और सारे काम करने वालों को मैनेज करे। अगर वह अपनी ज़िम्मेदारी को छोड़कर किसी क्लर्क की जगह उसके काम को दिन-रात करे, चाहे उसने अपने काम और ज़िम्मेदारी से कहीं ज़्यादा मेहनत की हो मगर उसकी अपनी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं हुई। जिसके नतीजे में आफिस का सारा सिस्टम ख़राब हो जाएगा।



इसमें कोई शक नहीं कि औरतें हद से ज़्यादा मेहनत करती हैं लेकिन अगर वह अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं करेंगी तो नतीजे में घर, मोहल्ला और धीरे-धीरे पूरे समाज का सिस्टम ख़राब हो जाएगा। ग़लती एक की और नुक़सान पूरे समाज का होगा क्योंकि पूरी भरी देग में सिर्फ़ एक बूँद ज़हर डाल दिया जाए तो वह सबको मार

कर ख़त्म कर देता है इसी तरह ग़लत परवरिश का एक लड़का या लड़की पूरे समाज को ख़राब कर सकते हैं।

3- जिसकी जो जगह है

कभी-कभी कुछ औरतें यह चाहती हैं कि मर्दों की तरह बेहिजाब होकर वह भी ज़्यादा वक़्त बाहर गुज़ारें और इसकी दलील यह देती हैं कि हमको कोई फ़र्क़ नहीं करना चाहिए क्योंकि मर्द और औरत सब बराबर हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि सब बराबर हैं लेकिन हर एक की जगह और मुक़ाम अलग-अलग है। अब अगर कोई अपनी जगह को छोड़कर दूसरे की जगह को ले ले तो उसकी जगह का क्या होगा।

जैसे: किसी बिल्डिंग को बनाने में हम कुछ ईंटें नींव में लगाते हैं, कुछ दीवार में और कुछ छत में। अगर सारी ईंटें हम चाहें कि स्लेब में ही लगा दें तो बुनियाद कैसे बनेगी और जब बुनियाद नहीं तो दीवार और छत मुमकिन ही नहीं।

इसी तरह औरत समाज की बुनियाद है। बच्चों की सही तरबियत, सही परवरिश और उनकी सलाहियतों को उभार कर सही रास्ता दिखाना औरत का ही काम है, समाज को एक अच्छा समाज बनाना औरत का हुनर है। इसके मुक़ाबले में मर्द की यह ज़िम्मेदारी है कि वह बाहर जाकर काम करके घर के खर्च के लिए कुछ कमाकर लाए। अब अगर दोनों कमाने लगे तो परवरिश कौन करेगा और बिना परवरिश के बच्चे बर्बाद होकर नालायक निकल सकते हैं। पेट भरने का खाना तो दूसरे से बनवाया जा सकता है या रेस्टोरेंट से मंगाया जा सकता है मगर रूह की गिज़ा में किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।

हाँ! अगर अपनी इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने के बाद औरत के पास वक़्त बचता है तो इस्लामी क़ानून के अंदर रह कर वह कुछ भी कर सकती है और उसको पूरी आज़ादी है।

1-सूरए रूम/21 ●



تلاوات



इम्तेहान दुनिया के

■ फातिमा कुम्भी

रिज़ल्ट्स सामने आएंगे।

ठीक यही हाल इंसानी सोसाइटी का भी है।

रसूले इस्लाम^ﷺ की हदीस है कि हर बच्चा इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा होता है। और उसकी फ़ितरत का सेंटर बस एक ही होता है और वह यह है कि वह नेचुरली बस अच्छाईयों यानी सच्चे रास्ते यानी सिराते मुस्तकीम को ही पसंद करता है। उसे पैदाईशी तौर पर अच्छाईयों से मोहब्बत होती है और बुराईयों से नफ़रत यानी पैदाईशी तौर पर वह न तो चोर बनना चाहता है और न डाकू, न किसी को धोखा देना चाहता है, न फ़रेब... उसकी अंदर से ख़्वाहिश बस यही होती है कि वह एक साफ़ सुथरी और सच्ची ज़िंदगी गुज़ारे। जितनी भी अच्छाईयां होती हैं वह सबको पसंद करता है और पसंद ही नहीं बल्कि वह उन्हें अपनाना भी चाहता है...खुदा उसे इसी इस्लामी फ़ितरत पर पैदा करता है मगर समाज में रहकर धीरे-धीरे वह सारी बुराईयां सीख जाता है जो उसकी फ़ितरत के ख़िलाफ़ होती हैं। वह सच बोलना चाहता है मगर समाज उसे झूठ बोलना सिखा देता है। वह अपने हर वादे को पूरा करना चाहता है मगर सोसाइटी उसे वादा तोड़ना सिखा देती है। उस पर दूसरे जुल्म करते हैं जिससे वह भी जुल्म करना सीख लेता है। चोरों से बदला लेने का जज़्बा उसे भी चोरी करने पर तैयार कर देता है, वह अपनी बेइज़्ज़ती का बदला दूसरों की बेइज़्ज़ती करके लेता है, रिश्तवत लेने वाले दोस्तों के साथ रहकर खुद भी

यकीनन दुनिया हमारे इम्तेहान और आजमाईश की जगह है। खुदा हमारा तरह-तरह से इम्तेहान लेता है। कभी औलाद के ज़रिए और कभी माल के ज़रिए, कभी बीमारी के ज़रिए तो कभी दुख-तकलीफ़ के ज़रिए... लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि खुदा अपने बंदों को मुसीबत में और उन्हें तड़पते हुए देखना चाहता है या यह देखना चाहता है कि बंदे किस तरह सिसकते और कैसे रोते हैं और आंसुओं को रोकने में किसके अंदर कितनी सलाहियत है?

यह दुनिया है ही दुख-सुख के साथ। इस दुनिया को बनाने वाले ने इसे अदल व इंसाफ़ और अक्ल व लॉजिक की बुनियाद पर बनाया है, जहां इंसान की एक-एक सांस और एक-एक पल का हिसाब हो रहा है, उस पर और दुनिया के पूरे सिस्टम पर अदल और इंसाफ़ की निगाहें निगरानी कर रही हैं। अगर एक पल के लिए भी यह निगाहें हट जाएं तो सारा सिस्टम तबाह और बर्बाद हो

जाएगा।

जैसे अगर हम बहुत सारी सीधी लाईनें किसी कागज़ पर खींचें और सबका एंगल एक ही प्वाइंट या एक ही सेंटर की तरफ़ हो तो यह लाईनें चाहे जितनी ही ज़्यादा क्यों न हों लेकिन एक लाईन दूसरी लाईन से नहीं टकरा सकती। लेकिन अगर कोई लाईन बाल बराबर भी टेढ़ी हो गई तो वह एक-एक करके सब लाईनों को टेढ़ा कर देगी। ऐसा नहीं हो सकता कि वह दूसरी लकीरों को टेढ़ा न करे। एक टेढ़ी लकीर दूसरी लकीर को टेढ़ा कर देगी, दूसरी तीसरी को, तीसरी चौथी को... यहां तक कि सारी लाईनों का पूरा सिस्टम ख़राब हो जाएगा। देखिए! एक लाईन ने कैसे सारी लाईनों पर अपना असर डाल दिया। ज़रा सी भूल ने इतने छोटे से सिस्टम में भी ख़राबी पैदा कर दी। अब अगर इतनी बड़ी दुनिया में ज़रा सी भी चूक हुई तो हम समझ सकते हैं कि इस पूरे सिस्टम पर उसका क्या असर पड़ेगा और कैसे-कैसे भयानक



Islam

रिश्वत लेना सीख लेता है। माली हालात उसे चोरी, डकैती, जुवा, धोखा-धड़ी, झूठ, फरेब और दूसरों का माल हड़प करने के रास्ते पर डाल देती है।

आगे चलकर पूरा सोशल सिस्टम क्रप्ट होने की वजह से एक साथ उस पर दबाव डालता है और बिगड़े हुए हालात उस पर अपना असर दिखाते हैं। दुनियावी झटके उसके जज़्बात को झंझोड़ कर रख देते हैं। जिसकी वजह से वह सीधा और सच्चा रास्ता छोड़ कर शॉर्ट-कट के ज़रिए ज़िंदगी की दौड़ में लोगों के बराबर पहुंचना चाहता है। और इस तरह “सिराते मुस्तकीम” से हटने के बाद वह शैतान के चुंगल में फंसता चला जाता है। सिर्फ यही नहीं बल्कि वह दूसरों को भी इस रास्ते से हटाने की एक बड़ी वजह बन जाता है। खुलासा यह कि उसकी अच्छी फितरत और नेचर पूरी तरह क्रप्ट हो जाता है और उसकी जगह तरह-तरह की बुराईयां, जुर्म और कमियां पैदा हो जाती हैं।

यहीं से उसकी आजमाईश और उसका इस्तेहान शुरू हो जाता है। अब उसके पास अपनी ज़िंदगी के सफर को तय करने के लिए दो ऑप्शन होते हैं: एक तरफ सीधा और सच्चा रास्ता है जो अक्ल और ईसाफ का रास्ता है। दूसरी तरफ ग़लत या शैतान का रास्ता है जो ईसानियत को बुराई के दल-दल में फंसाता चला जाता है।

बस यही हैं ज़िंदगी के ऐसे सख्त इस्तेहान और आजमाइशें जहां इंसान इन सब के बीच रहते हुए कभी भी भटक सकता है। भटक जाए तो इस इस्तेहान में फेल और अगर इन तमाम हालात के बावजूद भी वह खुद को “सिराते मुस्तकीम” से हटने न दे तो कामयाब। अपने जज़्बात में अंधा हो जाए तो फेल और अगर इन जज़्बात की उंगली थाम कर चलने के बजाए इल्म, लॉजिक और अक्ल के रास्ते पर चलने की कोशिश करे तो कामयाब। और यही रास्ता दीन का रास्ता भी है।

औलाद की मोहब्बत, दौलत की हवस, ऐशो-आराम की ललक, इज़्ज़त और शोहरत की चाहत, हर तरफ फैली

हुई ग़रीबी....यानी सोसाइटी का यह बेईसाफ सिस्टम हर वक़्त इन्सान को ‘सिराते मुस्तकीम’ से हटाना चाहता है। इसीलिए खुदा के बंदे दिन में कम से कम दस बार अपनी नमाज़ों में दुआ करते हैं कि पालने वाले हमें ‘सिराते मुस्तकीम की हिदायत कर’।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इस सीधे रास्ते से हटते हैं तो हटते ही चले जाते हैं। न खुदा का डर रहता है न ही क़यामत का। और फिर सिराते मुस्तकीम से इतनी दूर हो जाते हैं कि पलट कर वापस आने के चांसेस ही ख़त्म हो जाते हैं। ऐसे ही लोगों के लिए कुरआन में है, “खुदा ने उनके दिलों और कानों पर जैसे मोहर लगा दी है कि न कुछ सुनते हैं और न समझते हैं और आंखों पर भी पर्दे पड़ गए हैं, उनके लिए आख़िरत में बहुत बड़ा अज़ाब है।”

(सूर अक़रा/7)

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो हालात के दबाव में ग़लत रास्ते पर चल तो पड़ते हैं मगर कुछ दूर चलने के बाद वापस पलट आते हैं। अपनी ग़लतियों पर शर्मिंदा होते हैं और उसके बाद खुदा से सच्चे दिल से तौबा करते हैं जिसके बाद खुदा का जवाब आता है, “ऐ मेरे बंदो! जिन्होंने अपने ऊपर ज़्यादाती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस मत हो जाना! अल्लाह सारे गुनाहों को माफ करने वाला है।” (सूर जुमर/53)

इन सब से हटकर खुदा के कुछ बंदे ऐसे भी होते हैं जो कुछ भी हो जाए, इस सिराते मुस्तकीम से ज़रा सा भी नहीं हटते। चाहे उन पर कैसी ही मुसीबतें क्यों न पड़ जाएं, कितना ही जुल्म क्यों न हो जाए, कितने ही सख्त हालात क्यों न आन पड़ें और चाहे उनका सर ही क्यों न कट जाए और घर-बार लुट जाए मगर उन पर कोई फर्क नहीं पड़ता...यह हमेशा की तरह खुदा पर भरोसा करते हुए इसी सीधे रास्ते पर चलते रहते हैं।

और सबसे बड़ी बात यह कि यही वह पाकीज़ा और खुदा के ख़ालिस बंदे होते हैं जिनको देखकर दूसरे भटक जाने वाले सिराते मुस्तकीम की तरफ वापस आ पाते हैं। ●

घमंड से हमेशा बचो

■ डॉ. कल्बे सिब्वैन नूरी

हज़रत अली^अ ने फ़रमाया है, “तकब्बुर (घमंड) से दूर रहो क्योंकि यह बहुत बड़ा गुनाह, बदतरीन ऐब और शैतान का ज़ेवर है। घमंड ने ही शैतान को इस बात पर उभारा था कि आदम^अ को सजदा न करे।”

एक दूसरी हदीस में है, “घमंड करने वाले को अल्लाह ज़लील कर देता है।”

हदीसों में घमंड और तकब्बुर को बहुत बुरा कहा गया है। यह घमंड और तकब्बुर ही था जिसने शैतान को फ़रेब दिया और उसने खुद को हज़रत आदम^अ से बेहतर समझ कर अल्लाह का हुक्म मानने से इन्कार कर दिया, जिसके नतीजे में क़यामत तक के लिए गुमराह करार दे दिया गया।

घमंड और गुरूर उस आग की तरह है जो इन्सान के सारे आमाल को जलाकर खाक कर देता है, इसलिए उन लोगों को ख़बरदार हो जाना चाहिए जो दौलत, शोहरत, मुक़ाम या पोस्ट की वजह से खुद को दूसरों से बुलंद समझते हैं और दूसरों को हिक़ारत या ज़िल्लत की निगाहों से देखते हैं। उनको ख़बरदार हो जाना चाहिए है क्योंकि अल्लाह ने हर घमंडी और मग़ूर को ज़लील करने का वादा किया है। उन्हें घमंड छोड़कर इन्केसारी (Humbleness), अख़लाक़ और सादगी को अपना लेना चाहिए ताकि अल्लाह उनके मुक़ाम को और बढ़ा दे।

ज़बान की सख्ती नर्मी



सै. आले हाशिम रिज़वी
aleyhashim@yahoo.co.in

ज़बान इन्सान के जिस्म का एक बहुत अहम पार्ट है। यह बोलने, खाने और ज़ाएकों के समझने में हमारी हेल्प करती है। इसका कुछ हिस्सा मुँह में और कुछ हिस्सा गले में होता है। इसकी सतह पर एक पतली झिल्ली की तह होती है जिस पर छोटे-छोटे उभार होते हैं जिनकी वजह से ज़ाएकों में फर्क महसूस होता है। जिस्म के बाकी हिस्सों की तरह ज़बान को भी कुछ प्रॉब्लम्स का सामना करना पड़ता है। साइंस के मुताबिक ज़बान पर लगी चोट बहुत जल्दी ठीक हो जाती है। इस फ़ैक्ट का एहसास आपने उस वक़्त ज़रूर किया होगा जब आपकी ज़बान दाँतों से कटी हो या उस पर कभी छाले वगैरा निकल आए हों। ज़बान से जुड़ी ऐसी प्रॉब्लम बिना किसी खास इलाज के बहुत कम टाइम में ही दूर हो जाती है। यहाँ पर ध्यान देने की बात यह है कि ज़बान पर लगने वाली चोट तो बहुत जल्दी ठीक हो जाती है लेकिन ज़बान से लगने वाली चोट जल्दी ठीक नहीं हो पाती। आप मेरा इशारा समझ गई होंगी। ज़बान से लगने वाली चोट दिखाई नहीं देती है लेकिन उसका असर बहुत गहरा होता है। जब इन्सान ज़बान पर कंट्रोल खोता है तो उसका अंजाम बहुत बुरा हो जाता है। रिश्तों में दरार आ जाती है, रिलेशनशिप खराब हो जाती है और काम बनने के बजाए बिगड़ जाते हैं। ज़बान से निकली बात बंदूक से निकली गोली की तरह होती है। जो एक बार निकल जाए तो फिर वापस नहीं होती। इसीलिए कहा जाता है कि पहले सोचो फिर बोलो। ऐसा न हो कि बोलने के बाद सोचना पड़े। हज़रत अली^{३०} ने तो ज़बान को दरिदा कहा है। नहज़ुल बलाग़ह में उनका एक क़ौल है, “ज़बान एक ऐसा दरिदा है कि जिसे अगर खुला छोड़ दिया जाए तो वह फाड़ खाता है।” इस बात की रौशनी में आप ज़बान से निकलने वाले सख्त अलफ़ाज़ के असर को बख़ूबी समझ सकती हैं। अगर ज़बान में मिठास हो,

लहजा नर्म हो और चेहरे पर मुस्कुराहट हो तो आप किसी अजनबी को भी अपना दोस्त बना सकती हैं। इसी के अपोज़िट अगर ज़बान में कड़वाहट, लहजे में सख्ती और चेहरे पर गुस्सा हो तो नए दोस्त बनाना मुश्किल और पुराने दोस्तों को नाराज़ कर देना आसान हो जाता है। किसी भी इन्सान का नेचर उसकी ज़बान से काफी हद तक ज़ाहिर हो जाता है। हज़रत अली^{३०} ने फ़रमाया है, “इन्सान अपनी ज़बान के नीचे छिपा है।” किसी भी इन्सान की नॉलेज, सोच और मिज़ाज का अंदाज़ा उससे बातचीत करके बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है।

इन्सान की जैसी थिंकिंग होगी उसी तरह की उसकी बातचीत होगी, जैसी बातें होंगी वैसा ही उसका अमल होगा। यही अमल हमारा कैरेक्टर ज़ाहिर करता है। अब अगर अपना कैरेक्टर सही रखना है तो अपनी ज़बान और बयान को भी सही रखना होगा। किसी भी इन्सान की शकल चाहे जितनी खूबसूरत हो अगर उसके बोलने का तरीका अच्छा नहीं है तो वह लोगों की पसंद बनने में नाकाम रहता है। जबकि एक मामूली शक्ल सूरत वाला इन्सान अपनी बातचीत के खूबसूरत अंदाज़ से लोगों का चहीता बन जाता है। ज़बान की नर्मी से दिलों को जीता जा सकता है। ज़बान का ज़ख़्म तलवार के ज़ख़्म से भी ज़्यादा गहरा होता है लेकिन उस ज़ख़्म पर मरहम भी ज़बान से ही लगाया जाता है। ज़बान से फूल भी झड़ते हैं और काँटे भी। किसी के बोलने से सुकून हासिल होता है तो कुछ लोग अपनी बदमिज़ाजी से टेंशन पैदा कर देते हैं।

किसी को नसीहत देना यकीनन एक बहुत अच्छा अमल है लेकिन नसीहत हमेशा नर्म लहजे में करनी चाहिए क्योंकि सख्त ज़बान में की गई नसीहत पर अक्सर पॉज़िटिव रिस्पॉन्स नहीं मिलता है। यानी सही बात भी अगर ग़लत अंदाज़ में कही जाए तो

वह सुनने में बुरी लगती है। नसीहत तभी कारगर होगी जब वह सलीके के साथ की जाए। कड़े अलफ़ाज़ में की गई नसीहत, सुनने वाले को फ़ज़ीहत लगती है। जिसका नतीजा यह होता है कि नसीहत बेअसर हो जाती है। आपने देखा होगा कि अस्पतालों में नर्सिंग की जॉब ज़्यादातर औरतों के ज़िम्मे होती है। दरअसल इसकी वजह ‘स्पीच थैरेपी’ है जिसे मेडिकल साइंस बहुत अहमियत देती है। मरीज़ के साथ बहुत नर्मी से पेश आना चाहिए। यह एक फ़ैक्ट है कि औरतों का लहजा मर्दों के मुकाबले काफी सॉफ़्ट होता है। नर्म ज़बान से की गई बातचीत मरीज़ों के री-कवर होने में बहुत अहम रोल निभाती है। जबकि सख्त ज़बान में बात करने से मरीज़ ज़हनी तौर पर परेशान हो जाते हैं, जिसकी वजह से उनमें बीमारी का एहसास बढ़ जाता है। यही एहसास उनके जल्दी ठीक होने में रुकावट डालता है। आमतौर से देखा गया है कि ज़बान से सख्त अलफ़ाज़ उस वक़्त ज़्यादा निकलते हैं जब हम गुस्से में होते हैं। यही वजह है कि हज़रत अली^{३०} ने गुस्सा टालने की आदत को बहुत पसंद किया है। इसका ज़िक्र मैं अपने एक पिछले आर्टिकल “दो कदम, दो घूँट, दो बूँद” में कर चुका हूँ। दरअसल इमाम^{३०} नहीं चाहते कि हम गुस्से में आकर ज़बान का ऐसा इस्तेमाल करें जो हमारी ज़िल्लत की वजह बने और जिस पर हमें बाद में पछताना पड़े।

आखिर मैं मैं यही कहूँगा कि ज़बान की सख्ती और नर्मी से होने वाले असर पूरी तरह से साबित हैं, जिनसे कोई इन्कार नहीं कर सकता। इसलिए ज़बान पर कंट्रोल रखना बहुत ज़रूरी है। इस्लाम और मेडिकल साइंस दोनों ज़बान की नर्मी को बेहतर और सख्ती को ग़लत बताते हैं। किसी शायर ने क्या खूब कहा है:

फ़ितरत को ना पसंद है सख्ती ज़बान में
पैदा हुई न इस लिए हड्डी ज़बान में



बरसात

हुस्न और तंदुरुस्ती

■ सारा जमाल

गर्मी के मौसम में सूरज सर पर चमकता है तो उसकी गर्म-गर्म किरनें खड़ी-खड़ी नीचे आती हैं और ज़मीन से टकरा कर वापस चली जाती हैं। इस से गर्मी में तेज़ी आ जाती है। ऐसे हालात में जानवर, चौपाय, परिंदे और इन्सान सब बेचैन होकर साए की तलाश और ठंडी हवा की खोज में परेशान हो जाते हैं। परिंदे पेड़ों की शाखों में मुँह खोले बैठे होते हैं। हवा में कोई परिंदा उड़ता हुआ नज़र नहीं आता और बाज़ार सुंसान हो जाते हैं।

जून और जुलाई के महीने में यही हालत रहती है और फिर अचानक आसमान पर एक तरफ़ से बादलों का काला गोल आता दिखाई देता है तो नेचर खुशी से झूमने लगता है। हर जानदार चीज़ खुशी से नाचने लगती है।

जुलाई और अगस्त के महीनों में बादल आते और बारिश करते रहते हैं। इस मौसम को बरसात का मौसम कहा जाता है। इस मौसम में आबो हवा नम होती है। बारिशों की ज़्यादाती की वजह से गली-कूचों और नालों में पानी भर जाता है। मच्छर, कीड़े-मकोड़े, मक्खी, बीर-बहूटी में इस मौसम में कई गुना इज़ाफ़ा हो जाता है। पानी के गंदा और बैक्टीरिया से भरे होने की वजह से मलेरिया, हैज़ा, बुखार, पेचिश, कै और दस्त की बीमारियाँ जन्म लेती हैं। इसलिए इन बीमारियों से बचे रहने के लिए पानी को उबाल कर पीना चाहिए। साथ ही खाना ढॉप कर धूल और गंदगी से महफूज़ और मक्खी की पहुँच से दूर रखना चाहिए। अगर किचन और कमरों में मच्छर और

मक्खी से बचाव के लिए जालीदार दरवाज़े इस्तेमाल किए जाएं या डी.डी.टी. की तरह कीड़े-मकोड़ों को ख़त्म करने वाले स्प्रे किए जाएं तो यह एक बहुत अच्छी चीज़ है। रोज़ाना दिन में तीन-तीन बार ऐसा करना चाहिए इस से स्किन और जिस्मानी सेहत तंदुरुस्त रहती है और स्किन वाली बीमारियाँ होने के चांसेज़ बहुत कम हो जाते हैं।

बरसात का मौसम खाने के मामले में बहुत ख़तरनाक मौसम है क्योंकि इस मौसम में खाने-पीने की ज़्यादातर चीज़ों को अगर एहतियात से न रखा जाए तो उसमें बैक्टीरिया पैदा हो जाते हैं इसलिए खाना तैयारी से लेकर खाने के वक़्त तक बैक्टीरिया और कीड़े मकोड़ों की पहुँच से दूर होना चाहिए। इस मौसम में अक्सर पानी में पेचिश के बैक्टीरिया मिले रहते हैं जबकि मक्खियाँ डायरिया के बैक्टीरिया खाने-पीने की चीज़ों पर उंडेलती रहती हैं। इसलिए यह एहतियात रखनी चाहिए कि खाने पर मक्खी न बैठने पाए। गंदे पानी से ख़तरनाक बुखार, दस्त, पेचिश और डायरिया जैसी बीमारियाँ होती हैं इसलिए बरसात में पानी को उबाल कर पिया जाए। पानी में नमक और नींबू का रस मिलाकर पीना भी बहुत फ़ायदेमंद है। नींबू के रस से पानी में मौजूद बैक्टीरिया ख़त्म हो जाते हैं, साथ ही जिस्म में मौजूद डायरिया और पेचिश वगैरा के बैक्टीरिया

के लिए भी यह क़ातिल होता है।

अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से हर मौसम में पैदा होने वाली बीमारियों से महफूज़ रखने के लिए कीमती जड़ी-बूटियों से इन्सान को नवाज़ा है। इस मौसम में लीमू, जामुन और नीम की ज़्यादाती इस बात का सुबूत है कि इन चीज़ों का इस्तेमाल सेहत के लिए बहुत ज़रूरी है।

जामुन के इस्तेमाल से खून में बढ़ती हुई गर्मी और जोश, बलगम की ज़्यादाती, बदहज़मी, उलटी, दस्त और पेशाब की ज़्यादाती में कमी हो जाती है। इसके अलावा मौसम का यह बेहतरीन फल, शूगर जैसे जानलेवा मर्ज़ में भी फ़ाएदेमंद है। बरसात की अक्सर बीमारियाँ जैसे डायरिया, जानलेवा बुखार, उलटी और दस्त में भी इसको फ़ाएदेमंद माना गया है। बरसात में हवा के बंद होने से जो घुटन पैदा होती है उसकी वजह से स्किन पर अंघूरियाँ पैदा होते हैं जिनकी तेज़ी और गर्मी को कम करने के लिए जामुन का इस्तेमाल बहुत फ़ाएदेमंद है।

हकीमों ने जामुन में बहुत से फ़ाएदों को परखने के बाद ही इस से सिरका तैयार किया है जो बरसात में अपनी बहुत सी क्वालिटीज़ की वजह से वायरल में इस्तेमाल होता है ख़ास तौर पर मेदा और मसाने की बीमारियों में अपना ख़ास असर दिखाए बिना नहीं रहता। हकीमों के मुताबिक़ बरसात में हफ़्ते भर में एक बार में 5 से 10 मिली लीटर जामुन का सिरका इस्तेमाल करना

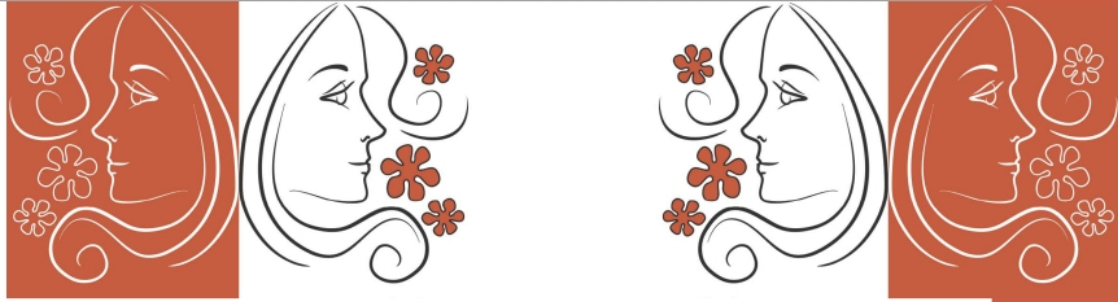


मेदे की बीमारियों से बचाए रखता है।

बरसात का एक दूसरा फल, निमोली (नीम का फल) भी इस मौसम की बीमारियों को कम करने के लिए बहुत खास चीज़ है। खास कर इस मौसम में होने वाली छोटी-छोटी फुंसियों और गर्मी दानों के लिए तो इसका जवाब नहीं। जिस घर में नीम का पेड़ हो उसमें रहने वालों में फोड़े-फुंसियाँ कम निकलते हैं। पेट के कीड़े भी इससे ख़त्म हो जाते हैं और यह बुखार में भी फ़ाएदेमंद है।

इसके अलावा मौसम में नमी होने की वजह से बाढ़, देर में हज़म होने वाली और बहुत नमी रखने वाली गिज़ाओं से परहेज़ करना चाहिए। अंडा और मछली खाना इस मौसम में बहुत नुकसानदेह है क्योंकि अंडे से बदहज़मी और मछली से बहुत सी स्किन की बीमारियाँ जन्म ले लेती हैं। जानवरों के सिरि पाए और लेसदार सब्जियाँ भी न खाई जाएं। इस मौसम में कब्ज़ को दूर करने के लिए Laxatives से बचना बहुत ज़रूरी है। बरसाती मौसम होने की वजह से हैवी एक्ससाइज़ से भी बचना चाहिए क्योंकि इस मौसम में हड्डी वगैरा जल्द टूट जाती है और ज़ख्म जल्दी नहीं भर पाते।

बरसात के मौसम में टाईट कपड़े नहीं पहनना चाहिए क्योंकि इस मौसम में पसीना बहुत आता है, इसलिए ढीला-ढाला लिबास मुनासिब होता है। सूती कपड़े से तैयार लिबास ज़्यादा अच्छा है। रंगों के एतेबार से सफ़ेद रंग ज़्यादा बेहतर है।



गर्मी में स्किन की हिफ़ाज़त

औरतें बेहद मेहनत और वक़्त खर्च करके खुद को संवारती हैं और उनकी इस सारी मेहनत का मकसद ख़ूबसूरत और पुरकशिश नज़र आना होता है। यह एक हकीकत है कि कुदरत ने औरतों को हुस्न अता किया है तो साथ ही उनको उसकी हिफ़ाज़त और आरआईश की समझ भी दी। यह समझ वक़्त, हालात और ज़माने की तेज़ रफ़्तार तरक्की के एतेबार से बदलती रहती है जिसको फैशन कहते हैं। यूँ तो सभी मौसम अच्छे होते हैं लेकिन गर्मियों का मौसम तेज़ गर्मी होने की वजह से स्किन पर अपना असर डाल ही देता है और उधर मेकअप के स्टाइल भी बदलते रहते हैं, कभी हल्के शैड और कभी गहरे।

गर्मी के मौसम में स्किन की अपनी अलग प्राब्लम्स हैं खास तौर पर स्किन अगर ऑयली हो तो बहुत परेशानी होती है। सूरज की गर्मी स्किन को न सिर्फ़ झुलसा देती है बल्कि रंगत भी काली कर देती है, आमतौर पर औरतों के पैरों पर आधी चप्पल या सैंडल के निशान बन जाते हैं जो बहुत बुरे लगते हैं। आप ने सुना होगा कि मोर एक बहुत ख़ूबसूरत जानवर है मगर उसके पैर बदसूरत होते हैं जिनको देखकर वह रोता है, ऐसे ही अगर औरतें अपने चेहरे को संवार लें और पैरों की हिफ़ाज़त न करें तो बिल्कुल ऐसे ही मामला होगा जैसे मोर का।

गर्मियों के मौसम में चेहरे पर से शादाबी ख़त्म हो जाती है जो बदनुमा लगती है उसे निखारने और तरोताज़ा करने के लिए पानी का इस्तेमाल ज़्यादा से ज़्यादा करें और ठंडी तासीर वाली चीज़ें खाएं। गर्मी के मौसम में टम्प्रेचर ज़्यादा होने की वजह से पसीना ज़्यादा आता है ताकि जिस्म का अंदरूनी टम्प्रेचर नार्मल रह सके इसकी वजह से स्किन को बहुत ज़्यादा काम करना पड़ता है, इसके मसाम खुल जाते हैं और उनमें मैल-कुचैल जमा होकर बदनुमा दाने बन जाते हैं इसी से बचने के लिए कम से कम तीन-चार बार चेहरा धोएं और घर से बाहर निकलें तो कोशिश करें कि छतरी का इस्तेमाल करें।

हिजाब या स्कार्फ़ हल्के रंग का या सफ़ेद इस्तेमाल करें क्योंकि काला और गहरा रंग गर्मी को ज़ब़ करता है। ग्लासेज़ और सन-ब्लॉक लगाना न भूलें। एक बार लगाया हुआ सन-ब्लॉक पूरे दिन के लिए काफ़ी नहीं होता बल्कि बार-बार फ़्रेश करना पड़ता है।

आपको पता होना चाहिए कि आपकी स्किन कैसी है: ऑयली, ड्राई, नार्मल या मिली जुली

क्योंकि हर स्किन में अलग तरह की प्राब्लम्स होती हैं, इसलिए जो भी प्रोडक्ट ख़रीदें वह अपनी स्किन के हिसाब से ख़रीदें और ख़रीदते वक़्त उस पर प्रोडक्ट बनने और ख़त्म होने की तारीख़ ज़रूर देखें। आमतौर पर मेकअप प्रोडक्ट्स एक साल तक इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

ऑयली स्किन: इसकी निशानी यह है कि माथा, ठोड़ी चिकनी और बाकी चेहरा खुश्क होता है। चिकनी स्किन वाली औरतों को आमतौर पर दाने या कील-मुहासे की शिकायत रहती है। गर्मियों में तो इनमें इज़ाफ़ा हो जाता है। इसके लिए मुलतानी मिट्टी का मास्क बेहतरीन है। इसके अलावा नीम के पत्तों को उबाल कर पानी ठण्डा करके मुँह धोएं तो मुहासों में कमी आ सकती है।

ड्राई स्किन: ड्राई स्किन गर्मियों में नार्मल रहती है और सर्दियों में अकड़ जाती है, दाग़ धब्बे झाईयाँ और झुर्रियाँ होने लगती हैं। इस के लिए शहद, जैतून का तेल, गुलाब का अर्क मिलाकर लगाएं तो स्किन की ख़ूबसूरती बाकी रह सकती है। ड्राई स्किन के लिए फ़ेस-वाश इस्तेमाल करें।

नार्मल स्किन: न ज़्यादा ड्राई न ऑयली, इस किस्म की स्किन के लिए ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती और ज़रा से ध्यान और एहतियात से भी आप अपनी ख़ूबसूरती को बाकी रख सकती हैं। गर्मियों में जब धूप में से आए तो गुलाब के अर्क का छिड़काव चेहरे पर कर लें इसके अलावा आप क्लीज़निंग क्रीम इस्तेमाल कर सकती हैं। इसको घर पर बनाने के लिए खाने का एक चम्मच मिल्क पाउडर और गुलाब के अर्क की कुछ बूँदें लेकर मिक्स कर लें और चेहरे के साथ-साथ गर्दन पर भी लगाएं क्योंकि कुछ औरतें गर्दन की तरफ़ ध्यान नहीं देती जिसकी वजह से गर्दन काली और बुरी लगती है। चेहरे और गर्दन को मैच करने के लिए यह नुस्खा बहुत कामयाब है।

इन सब के अलावा अगर आप चाहती हैं कि आपकी स्किन तरोताज़ा रहे तो सही गिज़ा लें और पानी ख़ूब पिएं, मौसम के फल खाएं, नींद पूरी करें, काम के साथ-साथ अपना ख़याल भी रखें और अगर आप अपने आपको वक़्त दें तो गर्मियों के मौसम में भी तरोताज़ा और फ़्रेश नज़र आ सकती हैं। लेकिन इन सब के साथ अपनी ख़ूबसूरती और हुस्न की नुमाईश सिर्फ़ अपने शौहर के लिए ही करें क्योंकि गैर मर्दों के सामने हिजाब का ख़याल रखना हर इस्लामी औरत की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।



अदालत और इंसाफ

■ खुशतर बाकरी
जामेअतुज्जेहरा लखनऊ

“ऐ ईमान वालो! अदल और इंसाफ के साथ क़्याम करो और अल्लाह के लिए गवाह बनो, चाहे अपनी ज़ात या अपने वालदेन और रिश्तेदारों के खिलाफ ही क्यों न हो। जिसके लिए गवाही देना है वह अमीर हो या फ़कीर, अल्लाह दोनों के लिए तुम से औला है। इसलिए ख़बरदार! ख़ाहिशों पर मत चलना ताकि इंसाफ़ कर सको और अगर तोड़-मरोड़ से काम लिया या बिल्कुल ही किनारे हो गए तो याद रखो कि अल्लाह तुम्हारे आमाल को अच्छी तरह जानता है।” (सूरए निसा/135)

यह आयत एक बुनियादी और आम क़ानून के ज़रिए सारे मोमिनों को अदालत और इंसाफ़ से काम लेने का हुक्म दे रही है और कह रही है कि अदालत क़ायम करो और इंसाफ़ से काम लो।

आयत में ‘क़्याम करो’ का लफ़ज़ भी आया है यानी हर हालत में, हर काम में और हर दौर में अदालत व इंसाफ़ के साथ क़्याम करो। ताकि यह अमल तुम्हारे अख़लाक़ और अदालत का हिस्सा बन जाए और इससे तुम्हारे नेचर, मिज़ाज और रूह से गुमराही का ख़ात्मा हो जाए। क़्याम का मतलब यह है कि पक्के और मजबूत इरादे से कोई क़दम उठाया जाए। इसके बाद ज़ोर देने के लिए खुदा फ़रमाता है कि ख़ासतौर पर गवाही के मामले में सारे ज़ाती फ़ाएदों और ताल्लुकात को एक तरफ़ करके सिर्फ़ खुदा के लिए गवाही दो चाहे वह खुद तुम्हारी ज़ात, तुम्हारे माँ-बाप और रिश्तेदारों के नुक़सान में ही क्यों न हो।

यह बात हर समाज में मौजूद है और ख़ास कर अभी भी समाज इसका शिकार है कि लोग

आमतौर पर गवाही देने में अपनी मोहब्बत व नफ़रत के ज़ुबात में आकर गवाही देते हैं और हक़ व इंसाफ़ की उनके यहाँ कोई अहमियत नहीं होती। जबकि हकीकी मोमिन वही है जो हक़ और इंसाफ़ के सामने किसी का लेहाज़ न करे, यहाँ तक कि अपने और अपने रिश्तेदारों के फ़ाएदे की भी परवाह न करे। यह आयत समाजी इंसाफ़ के बारे में इस्लाम की गहरी दिलचस्पी को ज़ाहिर करती है। और उसकी हर शक़ल व सूरत को मुकम्मल तौर पर क्लियर करती है। इस सिलसिले में समाजी इंसाफ़ के बारे में इस आयत में मौजूद तरह-तरह की ताकीदें इस बात को बताती हैं कि इस्लाम इस अहम इन्सानि मसले में कितना सेंसिटिव है। वैसे यह बात बड़ी अफ़सोसनाक है कि हमारे अमल और इस्लाम के इस हुक्म के बीच ज़मीन-आसमान का फ़ासला है। और हमारे पीछे रह जाने का एक फ़ैक्टर हमारी यह सोच भी है। इस्लाम का यह वह सख़्त तरीन क़ानून है जिसकी रौशनी में इन्सान अपने किरदार का जाएज़ा ले तो खुद को इस्लाम से कोसों दूर पाएगा। वह कौन सा इन्सान है जो अपने नफ़्स के अंदर इतना हौसला पैदा कर ले कि अपनी ज़ात या अपने रिश्तेदारों के मुक़ाबले में हक़ को आगे रख सके और सही गवाही दे सके। इन्सान हमेशा अपनी ज़ात को सबसे आगे रखता है और उसकी रौशनी में सारे काम और फ़ैसले करना चाहता है।

लेकिन हमारे अइम्मा वह हैं कि जिन्होंने दुश्मन के मुक़ाबले में भी अदल और इंसाफ़ से काम लिया। हज़रत अली^{३०} का एक वाकिआ

मिलता है कि एक आदमी ने अपने दौर के ख़लीफ़ा के दरबार में शिकायत पेश कर दी। फ़ाएदे के मुताबिक़ दोनों गिरोहों के लोगों को अदालत में हाज़िर होना था ताकि मुक़द्दमा सुनाया जा सके। जिसकी शिकायत की गई थी वह हज़रते अली^{३०} थे। हज़रते उमर ने ख़िलाफ़त पर बैठ कर दोनों तरफ़ के लोगों को दरबार में तलब किया। इस्लामी अहक़ाम के मुताबिक़ दोनों गिरोहों के लोगों को एक दूसरे के पहलू में बैठना था ताकि इस चीज़ में कोई शक़ न रह सके कि अदालत की निगाह में सब बराबर हैं। ख़लीफ़ा ने मुद्दई को उसके नाम से पुकारा और हुक्म दिया कि फुलों जगह पर काज़ी के सामने खड़ा हो जाए। इसके बाद ख़लीफ़ा ने हज़रत अली^{३०} की तरफ़ देखा और कहा कि या अबल हसन! अपने मुद्दई के पहलू में आप भी खड़े हो जाइए। यह जुमला सुनकर हज़रत अली^{३०} के चेहरे पर नाराज़गी के आसार ज़ाहिर हो गए। यह देखकर ख़लीफ़ा ने कहा, “या अली! क्या आपको अपने मुद्दई के पहलू में खड़ा होना ग़बारा नहीं है?” आप ने जवाब दिया, “मेरी नाराज़गी की वजह यह नहीं है कि मुझे मुद्दई के पहलू में क्यों खड़ा किया बल्कि मैं इसलिए नाराज़ हुआ हूँ कि तुम ने इस्लामी अदालत के उसूल की पैरवी नहीं की। मुझे तो बड़े अदब व एहतेराम के साथ मेरी कुन्नियत या अबल हसन कहकर पुकारा लेकिन दूसरी तरफ़ तुम ने मुद्दई के नाम के साथ किसी भी तरह के अदब व एहतेराम का सुबूत नहीं दिया। मेरी नाराज़गी की असल वजह यही थी।” ●



हमारे बच्चे

रूसो के मुताबिक इन्सान कमज़ोर होता है और उसे एनर्जी की ज़रूरत होती है। वह मोहताज होता है और उसे मदद की ज़रूरत होती है। वह नासमझ होता है इसलिए उसे समझदारी की ज़रूरत है। जो चीज़ें उसके पास पैदाईश के वक़्त नहीं होतीं वह उसे जिस्मानी और ज़ेहनी ग्रोथ के साथ-साथ एजुकेशन से मिलती हैं और एजुकेशन के लिए बच्चे का पहला स्कूल माँ की गोद है। वह ज़िंदगी का पहला सबक वहीं सीखता है।

साइंस की लेटेस्ट रिसर्च ने यह साबित कर दिया है कि बच्चे की ज़ेहनी, अख्लाकी और जिस्मानी परवरिश की असल जगह स्कूल और कालेज नहीं बल्कि माँ की गोद और घर का माहौल है। इसलिए घर के माहौल का बच्चे की ज़िंदगी पर बहुत घहरा असर पड़ता है। बच्चा बहुत सारी बातें अपने पैरेंट्स और घर के दूसरे लोगों से सीखता है, उनके तौर-तरीकों की नक़ल करने की कोशिश करता है जो बाद में उसकी शख्सियत का पार्ट बन जाते हैं। घर के लोगों के अंदाज़ से वह मुहब्बत और हमदर्दी के ज़बात या फिर खुदगर्ज़ी, बेईमानी और नफ़रत के ज़बात को पहचानता है। अगर पैरेंट्स और घर के दूसरे लोग कल्चर्ड, एजुकेटेड, नेक चलन और खुश अख्लाक हों तो कहा जा सकता है कि घरेलू हालात अच्छे हैं फिर बच्चे वहां यकीनन अच्छी बातें सीखेंगे और अगर

पैरेंट्स कल्चर्ड, एजुकेटेड, नेक चलन और खुश अख्लाक न हों तो हम कह सकते हैं कि घरेलू हालात अच्छे नहीं हैं। ऐसी सूरत में बच्चे वहां बुरी बातें ही सीखेंगे। इस तरह बच्चे के कैरेक्टर की बुनियाद घर पर ही पड़ जाती है।

आज अक्सर पैरेंट्स को यह शिकायत है कि वह अपने बच्चों की तरफ़ से सेटेस्फ़ाइड नहीं हैं। उनके बच्चे झूठ बोलते हैं, कहना नहीं मानते, बड़ों की इज़्ज़त नहीं करते, पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं लेते, बुरी फिल्में देखते हैं और बेहूदा डायलाग बोलते हैं। जैसे उनकी औलाद उनके लिए अज़ाबे जान या ज़हमत बनी हुई है। वह उनको सुधारने का जो भी तरीका अपनाते हैं, उसका नतीजा उलटा ही निकलता है। दूसरी तरफ़ औलाद की शिकायतें भी कम नहीं हैं। इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि पैरेंट्स और औलाद की इस कशमकश पर ठंडे दिल से गौर किया जाए और यह जानने की कोशिश की जाए कि वह बुनियादी उसूल क्या हैं जिन पर चल कर इन मुश्किलों को दूर किया जा सकता है।

एक्सपर्ट्स ने अपनी लम्बी-चौड़ी रिसर्चेंस के बाद यह उसूल भी क्लियर कर दिया है कि एक बच्चे की अच्छी बुरी किस्मत पहले छह साल की उम्र में तय हो जाती है। यह किस्मत आसमान की कोई गैबी ताक़त नहीं बनाती बल्कि खुद माँ-बाप बनाते हैं।

औलाद का अच्छा फ़्युचर सबकी आरजू होती है। कोई भी पैरेंट्स ऐसे नहीं होंगे जो इस इल्ज़ाम को मान लें कि वह अपने बच्चों के दुश्मन हैं और बच्चों के साथ दुश्मनी कर रहे हैं। हालांकि सच्चाई

यह है कि वह अपने बच्चों के दुश्मन होते हैं। जब भी उनके बच्चे के साथ कोई छोटा या बड़ा नाइंसाफी करता है तो वह उसी वक़्त बदला लेने के लिए तैयार हो जाते हैं लेकिन वह खुद बड़ी-बड़ी नाइंसाफ़ियाँ करते रहते हैं। यह नाइंसाफ़ियाँ बच्चे की शख्सियत का खून करती हैं और शख्सियत का खून हकीकत में ज़िंदगी का खून कर देने से भी ज़्यादा ख़तरनाक जुर्म है।

रूसो के मुताबिक एक बाप जो अपने बच्चों के लिए साफ़ खाना और कपड़ा अरेंज कर देता है, वह अपनी जिम्मेदारी का सिर्फ़ एक तिहाई हिस्सा पूरा करता है। समाज का उस पर हक़ है कि वह ऐसे ख़ानदान पैदा करे जो समाज के लिए फ़ायदेमंद हों और मुल्क का उस पर हक़ है कि वह अच्छे शहरी पैदा करे। हर वह शख्स जिसके ऊपर यह तीन हक़ हैं और जो उनको अदा नहीं करता वह एक मुजरिम है। जो बाप अपनी जिम्मेदारी अदा न करे उसे बाप बनने का कोई हक़ नहीं।

बच्चा चाहे एक महीने का ही क्यों न हो, उसे गोश्त का एक नासमझ लोथड़ा नहीं समझना चाहिए बल्कि यह समझ लेना चाहिए कि वह घर के माहौल की एक-एक एक्टिविटी को अपने दिल व दिमाग़ में रिकार्ड कर रहा है। इसलिए पहली और बुनियादी ज़रूरत यह है कि पैरेंट्स कुछ बुरी बातों को अपने बच्चों के सामने यह

समझ कर न करें कि बच्चों में सूझ-बूझ नहीं। बेशक बच्चों में सूझ-बूझ नहीं होती लेकिन उनके सब कान्शस में हमारी एक-एक एक्टिविटी को कुबूल करने का जज्बा बराबर मौजूद होता है। कोई झूठ, कोई नाराज़गी, कोई धुड़की और कोई बुरा काम ऐसा नहीं जो बच्चे के नन्हे से दिमाग में अपने अमिट नक्श न छोड़ जाए। इसलिए बेहतर है कि अपनी औलाद के सामने जहाँ तक हो सके अपने अख्लाक और आदतों का अच्छे से अच्छा नमूना पेश करें।

बच्चों की पर्सनाल्टी का एहतेराम भी ज़रूरी है लेकिन बहुत कम लोग अपने बच्चों की पर्सनाल्टी का एहतेराम करते हैं। जाहिल तो जाहिल अच्छे-अच्छे एजुकेटेड लोग भी इसका ध्यान नहीं रखते। वह करीब-करीब हर रोज़ बच्चों की तौहीन करते हैं, उन्हें गालियां देते हैं, डांटते-डपटते हैं और झिड़कते रहते हैं, बात-बात पर टोकते रहते हैं। उनके कामों और बातों में ऐब निकालते रहते हैं। उन्हें निकम्मा, नालाएक, कामचोर, बेवकूफ और गधा कह कर पुकारते हैं। यह लान-तान बच्चे की पर्सनाल्टी पर बहुत बुरी तरह असरअंदाज़ होती है। इस परवरिश से

कभी-कभी बच्चे के दिल में पैरेंट्स के खिलाफ ऐसी गहरी नफ़रत पैदा हो जाती है कि आखिरी उम्र तक दूर नहीं हो सकती। साथ ही हम अपने बच्चों की तौहीन करके आगे चल कर अपनी तौहीन की वजह बन जाते हैं।

कुछ पैरेंट्स अपने बच्चों से ज़रूरत से ज़्यादा लाड-प्यार करते हैं। इसका असर भी उन पर अच्छा नहीं पड़ता और कुछ पैरेंट्स ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों पर बहुत ज़्यादा सख्ती करते हैं। इससे भी उन्हें नुक़सान पहुंचता है। इससे उनका आज़ादी से काम करने का जज्बा ख़त्म हो जाता है क्योंकि तमाम खूबियों का सोर्स आज़ादी है और जब आज़ादी से काम करने के मौके नहीं मिलते तो हौसला पस्त हो जाता है और उनमें दूसरी बुराईयाँ पैदा हो जाती हैं। इसलिए पैरेंट्स के बिहैवियर में बैलेंस ज़रूरी है।

बच्चों को अख़लाक सिखाने के लिए आम तौर पर दो तरीके चुने जाते हैं। एक तो वह जिसमें बच्चों को डर, खौफ़, धमकी और मार-पीट के ज़रिए बुरे कामों से रोक कर ज़बरदस्ती अच्छे कामों पर उभारा जाता है और दूसरा तरीका वह है जिसमें सख्ती से बिल्कुल काम न लिया जाए यानी न डराया जाए, न सज़ा दी जाए बल्कि सिर्फ़ अच्छे और पसंदीदा कामों का शौक़ दिलाया जाए और बच्चा कोई अच्छा काम करे तो तारीफ़ करके उसकी हौसला अफ़ज़ाई की जाए। डराने और धमकाने के मुक़ाबले में

शौक़ दिलाने और तारीफ़ से काम लेना चाहिए। यह ज़्यादा असरदार और कामयाब तरीका है और इससे बच्चों की पर्सनाल्टी बनाई जा सकती है।

बच्चे के ऐब कभी उसके मुंह पर बयान मत कीजिए। अगर वह ज़हीन नहीं है, अपना लेसन याद नहीं करता है, वक़्त पर स्कूल नहीं पहुंचता है, झूठ बोलता है या घर से पैसे चुराकर ले जाता है तो उसे उसकी यह कमियाँ और कमज़ोरियाँ याद दिला-दिला कर शर्मिंदा करने की ज़रूरत नहीं है। यह तरीका कभी फ़ायदेमंद साबित नहीं हो सकता।

मार-पीट करने या शर्मिंदगी दिलाने से बच्चे के दिल में सुधरने का ख़्याल तो दरकिनार उल्टी बगावत पैदा हो जाती है। जिस बच्चे में किसी भी तरह की कमी पाई जाती हो उसे दूसरे बच्चों के मुक़ाबले ज़्यादा हमदर्दी और प्यार की ज़रूरत होती है ताकि वह अपने आपको एक साज़गार माहौल में फील करे। हमदर्दी और हौसला अफ़ज़ाई निकम्मे से निकम्मे बच्चे में भी बड़ी अच्छी तबदीली पैदा कर सकती है। बच्चे को शाबाशी दीजिए और उसकी तारीफ़ कीजिए। फिर आप देखेंगे कि ज़रा सी तारीफ़ और ध्यान से बच्चे की ज़िंदगी का रुख़ बदल जाएगा।

बच्चे की आदतों और सोच में सुधार या उसको अख़लाक और तहज़ीब सिखाना एक बहुत ही कठिन मसला है। कुछ पैरेंट्स अपने बच्चों को उनके हाल पर छोड़ देते हैं और समझते हैं कि स्कूल की एजुकेशन और माहौल से वह खुद बख़ुद सुधर जाएंगे मगर यह एक ग़लत सोच है। दरअसल बच्चों की अख़लाकी परवरिश एक मुश्किल फ़न है। इसलिए जब तक बच्चे की ज़ेहनी सतेह और उसके नेचरल रुजहान को उसके माहौल की रौशनी में समझने की कोशिश नहीं की जाती उस वक़्त तक हम उसके फ़युचर को बनाने में कोई मदद नहीं कर सकते। जब भी बच्चा कोई ग़लत काम करे जैसे चोरी, झूठ, धोखा वगैरा तो हमारा फ़र्ज़ है कि मर्ज़ के इलाज से पहले मर्ज़ की वजह ढूँढ़ें। इस दुनिया में कोई बुराई ऐसी नहीं है जिसके पीछे कोई हकीक़ी मजबूरी न हो। इस मजबूरी को समझना और उसे दूर करना ही किसी बुराई या बुरा अख़लाकी का असल इलाज है।

अक्सर बच्चे से ग़लती हो ही जाती है लेकिन इसकी वजह उस बच्चे के पास नहीं होती बल्कि हमारे पास होती है। जब हम अपनी रोज़ाना की ज़िंदगी पर एक नज़र डालेंगे तो हमको मालूम हो जाएगा कि हम जाने-अंजाने में खुद अपने बच्चों में झूठ बोलने की आदत डालते हैं। जैसे जब कोई शख्स जिससे हम मिलना नहीं चाहते, अगर हमारे दरवाज़े पर आए तो हम अपने किसी बच्चे से कहलवा देते हैं कि “पापा घर पर नहीं हैं” या अगर कोई पड़ोसी कोई चीज़ मांगने के लिए आए तो हम कह देते हैं कि “वह तो कोई और मांग कर ले गया है।” हमारे एक दोस्त ने अपने बेटे



को नसीहत की कि वह डांस शो देखने के लिए कभी न जाए क्योंकि वहां उसे वह सब कुछ देखने को मिलेगा जो उसे हरगिज़ नहीं देखना चाहिए। इस नसीहत के बावजूद एक रात बेदा शो देखने के लिए पहुँच गया और उसे वाकई वह देखने को मिला जो उसे नहीं देखना था यानी अपना बाप। अब आप सोचेंगी कि हम खुद झूठ बोलकर और झूठी नसीहत करके अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं। वह हमारे बिहैवियर से झूठ बोलने और गुलत रास्ते पर चलने की ट्रेनिंग ले रहे हैं। हम अपने बच्चों से झूठे वादे भी करते हैं और इस तरह हम उनके ज़ेहन में ढाल देते हैं कि सच्चाई की कोई अहमियत नहीं है।

पेरेंट्स को चाहे उनके बच्चे कितने ही नेक और अच्छे क्यों न हों उनके माहौल और उनकी सोसाइटी से गाफिल नहीं रहना चाहिए। अगर उनके बच्चे साफ-सुथरे रहते हैं, कहना मानते हैं, सच बोलते हैं, गाली-गलौज से दूर रहते हैं, चुगलखोरी नहीं करते तो इसका यह मतलब नहीं कि पेरेंट्स आराम से बैठ जाएं। अगर आस-पास का माहौल खराब है तो बच्चों को खतरे से बाहर नहीं समझना चाहिए। आपको उनके माहौल की निगरानी करनी पड़ेगी। सिर्फ अपने बच्चों को सुधारना एक तरह की नाकाम खुदगर्जी होगी बल्कि आप जहाँ अपने बच्चों का खयाल रखें वहाँ पड़ोसियों के बच्चों की अख़लाकी परवरिश से भी गाफिल न रहें। आप इस बात की भी कोशिश करें कि बच्चों में ज्ञात-पात को बढ़ावा न मिले। और बच्चे मज़हब के नाम पर लड़ाई-भिड़ाई और खून-खराबे से दूर रहें और यह तब ही हो सकता है जब दूसरे किसी फ़िरके या मज़हब को बुरा कहने के बजाए अपने अंदर बुराईयाँ और कमियाँ तलाश की जाएं। ऐसा नहीं है कि सारी बुराईयाँ दूसरों ही में होती हैं बल्कि अगर इन्सान अपने दामन पर ग़ौर से देखे तो उसे अपने दामन पर भी बहुत से धब्बे नज़र आ जाएंगे जिन्हें दूर करना बहुत ज़रूरी है। ●

नेकियों में मदद करो

■ नाज़ काज़मी

“नेकी और तक्वे पर एक-दूसरे की मदद करो और गुनाह व तअदी पर आपस में तआवुन न करो”⁽¹⁾

इस आयत में मदद के बारे में जो कहा गया है वह इस्लामी अहकाम की एक ऐसी बुनियाद है जिसके अंदर सारे समाजी और सियासी इशूज़ सिमटे हुए हैं इसके मुताबिक सारे मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि वह नेक और अच्छे कामों में एक-दूसरे की मदद करें और साथ दें लेकिन बुरे कामों और जुल्मों सितम में एक-दूसरे की बिल्कुल मदद न करें चाहे ऐसा करने वाला क़रीबी दोस्त या सगा भाई ही क्यों न हो लेकिन यह इस्लामी क़ानून उस क़ानून के बिल्कुल अपोज़िट है जो जाहिलियत के ज़माने के अरब में बल्कि आज के ज़माने में भी लागू है। जाहिलियत का क़ानून है कि- “अपने भाई या दोस्त की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम।” आज के ज़माने में अगर एक क़बीले के कुछ लोग किसी दूसरे क़बीले के कुछ लोगों पर हमला करते हैं तो क़बीले के बाकी लोग उनकी हिमायत में उठ खड़े होते हैं और इस बात की ज़हमत भी नहीं करते कि पता लगाएं कि यह हमला सही था या फिर गुलत। बस मदद करने के लिए तैयार हो जाते हैं जबकि इस्लाम ने ज़ालिमों की मदद को सिर से मना कर दिया है। अगर यह इस्लामी क़ानून पूरे समाज पर लागू हो जाए और लोग ज़ाती ताल्लुकात और नस्ली

तास्सुब को देखे बिना उन लोगों का साथ दें जो नेक कामों के लिए क़दम बढ़ाते हैं और ज़ालिम चाहे किसी तबके से हों उनका साथ न दें तो बहुत सी समाजी ख़राबियाँ और मुश्किलें दूर हो जाएं। इसी तरह अगर दुनिया की हुकूमतें ज़ालिमों की मदद न करें तो ज़्यादाती और जुल्म सब के सब ख़त्म हो जाएंगे लेकिन हम देखते हैं कि कुछ हुकूमतें जुल्म करने वालों और ज़ालिमों की हिमायत करने लगती हैं और इनसे फ़ाएदा उठाने वाले खुले बंदों इन्हें हिमायत का यक़ीन दिलाते हैं। इसलिए मौजूदा हालात में बेहतरी की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए।

इस आयत से यह समझ में आता है कि खुदा हमें हुक्म दे रहा है कि नेकी के अलावा किसी चीज़ में दूसरों की मदद न करो और साथ ही उसने ज़ालिमों के जुल्म में हिमायत करने से भी सख़्त मना किया है। जैसा कि हम भी जानते हैं कि जुल्म एक बहुत बड़ा गुनाह है और इसका नतीजा बहुत बुरा होता है इसलिए खुदा ने ज़ालिमों के साथ चलने और उन्हें सहारा देने से मना किया है जैसा कि खुदा कुरआन मजीद में दूसरी जगह फ़रमाता है, “ज़ालिमों के साथ शिरकत और दोस्ती न करो कि तुम आग में जा गिरो, तुम खुदा के अलावा किसी से दोस्ती न करो वरना फिर तुम्हारी कोई मदद नहीं करेगा।”

उस्ताद का गुस्सा

सैय्यद जव्वाद आमुली, एक मशहूर फकीह और बहुत बड़े आलिम थे जिन्होंने बहुत मशहूर किताब 'मिप्ताहुल करामा' लिखी है। एक दिन वह खाना खा रहे थे कि दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनी। जैसे ही उन्होंने सुना कि उनके उस्ताद सैय्यद मेहदी बहरूल उलूम का ख़ादिम दरवाज़े पर है, तेज़ी से दरवाज़े की तरफ़ दौड़े। ख़ादिम ने कहा, “उस्ताद ने आप को फ़ौरन बुलाया है। दस्तरख़्वान उनके सामने लगाया जा चुका है लेकिन वह उस वक़्त तक खाने को हाथ नहीं लगाएंगे जब तक आप उनके पास न पहुँच जाएं।”

देर करने की गुंजाईश नहीं थी। सैय्यद जव्वाद बिना खाना खाए जल्दी से अपने उस्ताद सैय्यद बहरूल उलूम के घर पहुँचे। जैसे ही उस्ताद ने सैय्यद जव्वाद को देखा तो बड़े गुस्से और उलझन में कहा, “ऐ सैय्यद जव्वाद! क्या तुम खुदा से नहीं डरते? सैय्यद जव्वाद हैरत व ताअज्जुब के समंदर में डूब गए कि आख़िर क्या हुआ और कौन सी बात हो गई? आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि उस्ताद ने इस तरीक़े से कभी गुस्से में फटकारा हो। उन्होंने अपने दिमाग़ पर बहुत ज़ोर दिया ताकि कोई वजह याद आ जाए लेकिन मजबूर होकर सवाल किया, “उस्ताद! अगर मुमकिन हो तो मुझे बताइए कि मुझसे कौन सी ग़लती हो गई है?”

“तुम्हारे फुलॉ पड़ोसी को सात दिन से चावल और गेहूँ नहीं मिल सका है उसने गली के आख़िरी हिस्से में जो दुकानदार है उससे खज़ूरें उधार लेकर यह दिन गुज़ारे हैं, आज जब वह फिर से कर्ज़ लेने गया तो इससे पहले कि वह सवाल करता, दुकानदार ने यह कह कर उसको मायूस कर दिया कि तुम पर कर्ज़ ज़्यादा हो गया है। वह यह जुमला सुनकर शर्मिंदगी से सर नहीं उठा सका और ख़ाली हाथ घर वापस आ गया। आज वह और उसके घर वाले भूखे हैं।” सैय्यद जव्वाद आमुली ने कहा कि खुदा की कसम! इसके बारे में मुझे बिल्कुल ख़बर नहीं थी। अगर मुझ को मालूम होता तो मैं ज़रूर उसकी मदद करता।” “मेरा गुस्सा इसीलिए है कि आख़िर तुम्हें क्यों अपने पड़ोसी की हालत नहीं पता? और क्यों सात दिन उन्होंने ऐसे गुज़ारे और तुम को ख़बर न हुई? और अगर तुम्हें मालूम होता और तुम कुछ न करते तो तुम पर मुसलमान नहीं बल्कि यहूदी का हुक्म लागू होता।” उस्ताद ने कहा।

“मेरा ख़ादिम खाने की ट्रे ले जाएगा। उसके साथ तुम भी उस शख्स के घर तक जाओ। ख़ादिम दरवाज़े से वापस पलट आएगा और उसके बाद तुम दरवाज़ा खटखटाना और उससे कहना कि आज शाम का खाना मिल कर खाएंगे और यह पैसे लो उसके फ़र्श या बोरिए के नीचे रख देना और उससे माफ़ी माँग लेना कि पड़ोसी होते हुए भी उसका ख़याल नहीं कर सके। ट्रे वहीं रख कर

आओ और तब तक मैं यहां बैठा हूँ और उस वक़्त तक खाना नहीं खाऊंगा जब तक तुम वापस नहीं आओगे। जितनी जल्दी हो सके उस मोमिन की ख़बर दो।” नौकर ने अलग-अलग तरह के अच्छे खानों की ट्रे उठाई और सैय्यद जव्वाद के साथ चल पड़ा।

दरवाज़े के करीब पहुँच कर ख़ादिम वापस चला गया और सैय्यद जव्वाद इजाज़त लेकर घर के अंदर चले गए। उस शख्स ने सैय्यद जव्वाद की आवाज़ सुनी और उनके लिए हुए खाने की तरफ़ हाथ बढ़ाया। पहले ही लुकमें के बाद महसूस कर लिया कि यह सैय्यद जव्वाद के घर का खाना नहीं है। फ़ौरन खाने से हाथ खींच लिया और कहा, “यह किसी अरब के हाथ का खाना नहीं है।” जब तक यह नहीं बताओगे कि यह खाना कहां का है मैं हाथ नहीं लगाऊंगा। उस शख्स का अंदाज़ा बिल्कुल सही था खाना बहरूल उलूम के घर तैयार हुआ था और वह ईरानी थे, सैय्यद जव्वाद ने बहुत समझाया कि तुम्हें इससे क्या मतलब कि यह खाना कहां से आया है, तुम खाना खाओ। मगर वह तैयार नहीं हुआ और कहा कि, “जब तक सच-सच नहीं बताओगे मैं दस्तरख़्वान की तरफ़ हाथ नहीं बढ़ाऊंगा।” सैय्यद जव्वाद ने देखा कि बिना बताए हुए काम नहीं चलेगा तो शुरू से आख़िर तक सब कुछ बता दिया। उस शख्स ने यह सब सुनने के बाद खाना खाया मगर बड़ी हैरत में पड़ गया और कहा, “मैंने यह राज़ किसी से नहीं कहा। यहाँ तक कि अपने करीबी पड़ोसियों से भी छुपाए रखा है, पता नहीं उस्ताद सैय्यद मेहदी को कहां से ख़बर हो गई।” ●

यतीम बच्चे

■ नासिर बाकिरी बैद-हिन्दी

“कराबतदारों के साथ और यतीमों, मिसकीनों...के साथ नेक बर्ताव करो।”⁽¹⁾

यही बात सूरए बकरा की आयत/83 में भी कही गई है और हदीसें इस सिलसिले में बहुत ज्यादा हैं।

रसूल^ॐ ने फरमाया है, “जो शख्स यतीम बच्चे या बच्ची के साथ नेकी करेगा वह और मैं जन्नत में दो उंगली की तरह होंगे।”⁽²⁾

हज़रत अली^ॐ ने फरमाया है, “सबसे बेहतरीन काम यतीमों के साथ नेकी है।”⁽³⁾

हदीस में है, “यतीमों के साथ नेकी करो और मोहताजों के साथ बराबरी से पेश आओ और उनको अपनी जिंदगी का हिस्सादार बनाओ।”⁽⁴⁾

ध्यान रहे कि यतीमों के साथ नेकी करने के बहुत से तरीके हैं और सबसे अच्छा तरीका उनकी एजुकेशन का बंदोबस्त है। रसूल इस्लाम^ॐ एक दिन ईद की नमाज़ के लिए जा रहे थे। आप ने देखा कि बच्चे आपस में खेलकूद रहे हैं और खुश हैं लेकिन उन्हीं के पास एक बच्चा पुराने कपड़े पहने खड़ा है और रो रहा है। आप^ॐ उसके करीब पहुँचे और पूछा, “क्यों रो रहे हो और बच्चों के साथ क्यों नहीं खेल रहे हो?” बच्चा रसूल^ॐ को नहीं पहचानता था। उसने कहा, “आपको मुझ से क्या मतलब? मेरा बाप इस्लाम की फुलों जंग में शहीद हो गया, मेरी माँ ने दूसरी शादी कर ली और उन लोगों ने मेरा माल भी हड़प कर लिया है और मुझको घर से भी निकाल दिया है, अब न मेरे पास खाने-पीने को है और न पहनने को और न घर। जिस वक़्त मैंने बच्चों को खेलकूद

करते हुए देखा और सोचा कि उनके माँ-बाप हैं, घर और घराना है तो मेरी मुसीबतें ताज़ा हो गईं, इसलिए मैं रो रहा हूँ।” रसूल इस्लाम^ॐ ने उसका हाथ पकड़ कर फरमाया, “क्या तुम इस बात पर तैयार हो कि मैं तुम्हारा बाप और मेरी बेटी तुम्हारी बहन और अली तुम्हारे चचा और हसन^ॐ-हुसैन^ॐ तुम्हारे भाई बन जाएं।”

बच्चे ने कहा, “हाँ-हाँ! मैं बिल्कुल तैयार हूँ।” रसूल इस्लाम^ॐ उसको अपने घर ले गए और उसको नये कपड़े पहनाए, खाना खिलाया जिस से बच्चा बहुत खुश हो गया। उस यतीम बच्चे ने जब अपने को इस हाल में देखा तो फूला न समाया, घर से बाहर आया और तेज़ी के साथ खेल के मैदान में जाकर खेलने लगा। जिन बच्चों ने पहले उसे रोते हुए देखा था अब उसे इस वक़्त खुश देखकर सवाल किया, “थोड़ी देर पहले रोने और इस वक़्त खुश होने की वजह क्या है?”

यतीम बच्चे ने जवाब दिया, “मैं पहले भूखा था इस वक़्त मेरा पेट भर गया है, कपड़े नहीं थे अब कपड़े मिल गए हैं, यतीम था मगर अब रसूलुल्लाह^ॐ जैसा बाप, फातिमा^ॐ जैसी बहन, अली^ॐ जैसा चचा और हसन^ॐ जैसे भाई मिल गए हैं, मैं इसलिए खुश हूँ।”

जब तक रसूल^ॐ मौजूद थे यह बच्चा आपके साथ जिंदगी बसर करता रहा। आप^ॐ ने आखिरी साँसें ली ही थी कि वह चीखें मारता हुआ बाहर आया, अपने सर पर मिट्टी डालता था और कहता था कि मैं अब यतीम हो गया हूँ।

मशहूर है कि हज़रत अली^ॐ अपनी हुकूमत के दौरान बिना सवारी आम लोगों की

तरह शहर में गश्त किया करते थे एक दिन एक बूढ़ी औरत को देखा कि पानी की मशक अपने कंधे पर लादकर बड़ी मुश्किल से घर की तरफ जा रही है। आप^ॐ इसीलिए गश्त कर रहे थे ताकि किसी मज़लूम, भूखे-प्यासे, मोहताज या यतीम वगैरा की मदद कर सकें। आपने आगे बढ़कर मशक को लिया और उस औरत के घर की तरफ चल दिए, रास्ते में उसके घर के खर्च के बारे में सवाल किया? औरत ने जवाब दिया, “अली बिन अबी तालिब ने मेरे शौहर को एक जंग पर भेजा था जहाँ वह क़त्ल हो गया। अब उसकी यादगार मेरे कुछ यतीम बच्चे हैं और उन बच्चों की देख-भाल मेरे ज़िम्मे है। मैं दूसरों के घरों पर काम करती हूँ और जो कुछ मज़दूरी मिलती है उस से यतीम बच्चों के खाने-पीने का इंतज़ाम करती हूँ।” आपने घर को देखते ही वेवा की परेशानियों को सुना, और बच्चों की हालत का अंदाज़ा लगा लिया। हज़रत अली^ॐ के दिल पर भी असर हुआ। खुदा हाफ़िज़ी करके घर पलटे और एक बड़े थैले को खाने पीने की चीज़ों से भरा और यतीमों के घर की तरफ चल दिए। कुछ लोगों ने चाहा कि ख़लीफ़ा से इस बोझ को लेकर अपनी पीठ पर लाद कर ले चलें लेकिन आप ने फरमाया, “अगर आज तुम लोग मेरे बोझ को उठाओगे तो कल क़यामत में कौन मेरे बोझ को उठाएगा?”

बहरहाल खुद ही सामान को अपने कंधे पर लादे हुए उस वेवा औरत के घर पहुँचे।



दरवाज़ा खटखटाया और इजाज़त लेकर घर में दाखिल हुए। औरत से पूछा, “तुम रोटी पकाओगी या बच्चों को बहलाओगी?” औरत ने आपको दुआ देते हुए कहा, “मैं रोटी पकाऊँगी और आप मेरे बच्चों को बहलाइए।” औरत रोटी पकाने में लग गई, हज़रत अली^{३०} बच्चों को बहलाते और कहते जा रहे थे, “ऐ मेरे बेटो! अली बिन अबी तालिब को माफ़ कर दो।”

औरत ने आटा गूँथा और तंदूर जलाया। इत्तेफ़ाक़ से पड़ोस की एक औरत उसके घर आई जो हज़रत अली^{३०} को पहचानती थी। देखते ही उसने कहा, “अरे कमबख़्त! यह अली बिन अबी तालिब^{३०} हैं जो तमाम मुसलमानों के इमाम हैं।”

औरत की सिट्ठी-पिट्ठी गुम हो गई। हज़रत अली^{३०} के पास आई और कहा, “ऐ अमीरुलमोमिनी^{३०}! मैं आपसे बहुत शर्मिदा हूँ मुझे माफ़ कर दीजिए।”

हज़रत अली^{३०} ने फ़रमाया, “मैं तो पहले ही इस बात से शर्मिदा हूँ कि तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों का ध्यान नहीं रख सका।”^(५)

शहीदों के बच्चों

के साथ इमाम खुमैनी^{३०} की नेकी

इटली की एक ईसाई औरत जो टीचर थी उसने सोने का एक ग़्लूबंद जो उसकी शादी की यादगार था, एक ख़त के साथ इमाम खुमैनी की ख़िदमत में भेजा। इमाम खुमैनी दो या तीन साल की एक बच्ची को अपने ज़ानू पर बिठाए हुए थे जिसका बाप ईरान-ईराक़ जंग में शहीद हो गया था। इमाम खुमैनी उस बच्ची से प्यार भरे लहजे में बातें कर रहे थे और उसके सर पर हाथ फेर रहे थे और बच्ची मुस्कुरा रही थी। इमाम खुमैनी ने उस ग़्लूबंद को उसके गले में डाल दिया। वह बच्ची खुशी के मारे फूली नहीं समा रही थी और खुशी-खुशी आपके पास से बाहर चली गई।^(६)

यतीमों से मोहब्बत

बदबख़्त, शरीर, मुजरिम और ख़तरनाक आमतौर पर वह लोग होते हैं जिन्हें बचपने और नौजवानी में माँ-बाप की सच्ची मोहब्बत नहीं मिल पाती। साथ ही अच्छे, नेक किरदार, खुशदिल, नेक, खुदार और अच्छे वह लोग होते हैं जो बचपने में माँ-बाप की मोहब्बत के साए में परवान चढ़ते हैं जिसकी वजह से अपने आप से दूसरों को फाएदा पहुँचाते हैं।

इस्लाम में इस बात पर बहुत ज़ोर दिया गया है कि यतीमों से मोहब्बत की जाए, और ऐसी ख़ालिस मोहब्बत कि न उस से दुनियावी सिले की उम्मीद रखी जाए, और न लोगों से शुक्रिए की आरजू और न इस से किसी दुनियावी चीज़ के हासिल करने का मक़सद ही ज़ेहन में हो। मोहब्बत सिर्फ़ अल्लाह के लिए होना चाहिए और यह भी ज़ेहन में होना चाहिए कि यतीमों को नाराज़ करना, उन से मोहब्बत व प्यार न करना बलाओं और मुसीबतों की वजह बन जाता है।

एक रिसर्च में पाँच सौ क्रिमिनल्स पर सर्वे हुआ है जिससे मालूम हुआ कि सबसे पहला जुर्म उन लोगों ने 12 और 13 साल की उम्र में किया था और यह मुसीबत उनके ख़ानदान में मोहब्बत व मेहरबानी की कमी की वजह से पैदा हुई।^(७)

एक रिपोर्ट के मुताबिक़ जर्मनी में 44% नाकाम लोग वह हैं कि जो बाप की मोहब्बत से महरूम थे और 33% वह हैं जो माँ की मोहब्बत से महरूम थे।^(८)

आयतुल्लाह मज़ाहिरी कहते हैं, “अगर यतीम बच्चा किसी ग़िरोह, किसी शहर या किसी मज़हब में हो तो तमाम लोगों को चाहिए कि उसके बाप की जगह उसके सर पर साया बन कर रहें और औरतों को माँ का रोल अदा करना चाहिए ताकि उसे यतीमी का एहसास न हो। खुदा न करे कि कोई उसके लिए रास्ते का कौंटा बने क्योंकि

इस्लाम कहता है कि यतीम बच्चे की राह में रुकावट न बनो और मदों को बाप की जगह और औरतों को माँ का रोल अदा करके यतीमों की मुश्किलों और सख़्तियों को हल करना चाहिए।”^(९)

इसीलिए रसूलु इस्लाम^{३०} ने फ़रमाया है, “जो शख्स बच्चों से मेहरबानी न करे और बुजुर्गों का एहतेराम न करे वह हम में से नहीं है।”^(१०)

यतीमों से मोहब्बत और मेहरबानी के तरीके

यतीमों से मोहब्बत और मेहरबानी करने के बहुत से तरीके हैं जिनको दीनी किताबों में देखा जा सकता है। हम यहाँ कुछ उसूलों को पेश कर रहे हैं:

उस शख्स या इन्स्टिट्यूट का एहतेराम कि जिसने यतीमों की ज़िम्मेदारी संभाली हो, यतीमों की पसंदीदा ग़िज़ाओं का इत्तेज़ाम, खेल-कूद के सामान की ख़रीदारी और ज़रूरत के मुताबिक़ रुपये-पैसे से उनकी मदद करना। गले लगाना, ल्यूहार के मौके पर उनके लिए लिबास ख़रीदना, उनके साथ मिल-जुल कर रहना, उनकी देखभाल करना, उनकी बातों को खूब अच्छी तरह सुनना, उनकी खुशी में खुश रहना, गुम में उनका गुमगुसार रहना, वह जिन कामों के करने की सलाहियत रखते हों उनके लिए रिसॉसेज़ तलाश करने की कोशिश करना, उन से मोहब्बत और मेहरबानी से पेश आना वगैर।

यह गुमान नहीं करना चाहिए कि बच्चा जिस वक़्त तक छोटा है उसी वक़्त तक उसको मोहब्बत चाहिए और जवान हो जाने पर उसकी यह ज़रूरत ख़त्म हो जाती है। अगर नौजवान में यह ज़रूरत बच्चों से ज़्यादा नहीं है तो उन से कम भी नहीं है। हाँ! जो मोहब्बत और मेहरबानी बच्चों के साथ की जाती है, नौजवानों के साथ उसका अंदाज़ दूसरा होता है।

एक दिन हज़रत अली^{३०} एक ग़रीब औरत की तरफ़ से गुज़र रहे थे, जिसके कुछ यतीम बच्चे भूख की वजह से रो रहे थे। बच्चों की माँ देगची के

आप भी

मरयम

के लिए आर्टिकल भेज सकती हैं...

1. A4 साईज़ पर लिखा हो।
2. पेपर के एक साईड पर लिखा हो।
3. पहले कहीं छपा न हो।
4. आर्टिकल की ओरिजिनल कॉपी भेजिए।
5. भेजे गए आर्टिकल्स एडिटोरियल बोर्ड से पास होने के बाद ही पब्लिश किए जाएंगे।
6. आर्टिकल रिजेक्ट होने पर उसकी वापसी नहीं होगी।
7. आर्टिकल सिलेक्ट हो जाने के बाद अपने मुनासिब वक़्त पर पब्लिश किया जाएगा।
8. आर्टिकल में एडिटर को बदलाव का इख़्तियार होगा।



नीचे आग रौशन किए हुए थी और उसमें ख़ाली पानी डालकर बच्चों को बहला रही है ताकि बच्चे सो जाएं। हज़रत अली^अ ने जब यह हालत देखी तो अपने घर वापस आए और खुर्मा, आटा, चावल, घी कंधे पर उठाकर उस औरत के घर की तरफ़ चल दिए। आप^अ के गुलाम कंबर ने चाहा कि सामान को लेकर अपने कंधे पर रख ले लेकिन हज़रत अली^अ राज़ी नहीं हुए और खुद ही औरत के घर तक ले गए। इजाज़त लेकर घर में दाख़िल हुए। औरत ने खाना पकाया... बच्चे खाकर खुश हो गए। उस वक़्त आप उठे और अपने चारों हाथ-पैर पर चलने लगे और साथ ही साथ बअ-बअ भी कह रहे थे, यतीम बच्चे हंसने लगे। इसके बाद आप घर की तरफ़ चल दिए। रास्ते में कंबर ने कहा कि आज मैंने अजीब व ग़रीब चीज़ देखी कि आप अपने चारों हाथ पैरों पर चल रहे थे और भेड़ की तरह बोल रहे थे।”

आप ने फ़रमाया कि जिस वक़्त मैं घर में दाख़िल हुआ तो यतीम बच्चे भूख के मारे रो रहे थे। मैंने चाहा कि जब मैं जाने लूँ तो उनको हंसता हुआ देखूँ इसलिए मैंने ऐसा किया।

एक बार हज़रत अली^अ के पास शहरे हमदान के इलाके से कुछ लोग शहद और इन्जीर लाए थे। आप उस शहद को लोगों में बाँट रहे थे और जो शहद उंगलियों में लगा रहता था उसको यतीम बच्चों को चटाते थे और फ़रमाते थे, “मैं इन यतीम बच्चों से उनके बाप की तरह मोहब्बत करता हूँ।”⁽¹¹⁾

रसूल इस्लाम^अ ने फ़रमाया है, “यतीमों के

लिए उनके बाप की तरह मेहरबान बनो।”⁽¹²⁾

रसूल^अ ने फ़रमाया है, “यतीमों पर रहम करो और उनके सर पर दस्ते शफ़क़त फेरो और अपने साथ खाना खिलाओ ताकि तुम्हारा दिल नर्म हो जाए और अपनी हाजतों को पा सको।”⁽¹³⁾

हज़रत अली^अ ने फ़रमाया है, “जो मोमिन और मोमिना यतीम के सर पर प्यार भरा हाथ फेरता है खुदावंदे आलम हर बाल के बराबर उसके नाम-ए-आमाल में नेकियाँ लिखता है।”⁽¹⁴⁾

इमाम जाफ़र सादिक^अ फ़रमाते हैं, “जो किसी यतीम के सर पर प्यार भरा हाथ फेरता है

खुदावंदे आलम उसको क़यामत के दिन हर बाल के बराबर नूर अता करेगा।”⁽¹⁵⁾

रसूल इस्लाम^अ ने फ़रमाया है, “बच्चों से मोहब्बत करो और उन पर रहम करो।”⁽¹⁶⁾

इस सिलसिले में बहुत ज़्यादा हदीसों मौजूद हैं मगर हम यहीं इस आर्टिकल को ख़त्म कर रहे हैं।

1-सूरए निसा/36, 2-क़ुल उमाल, 3/170, 3-गुरर व दुरर दर आमदी, 6/44, 4-गुरर व दुरर दर आमदी, 3/267, 5-बिहार, 9/35, 6-सरगुजुशतहाए वीज़े अज़ ज़िंदगी इमाम खुमैनी, 5/68, 7-आईने तरबियत, 120, 8-तरबियत नस्ले शहीद, 108, 9-जेहाद बिल्नफ़्स, 1/72, 10-बिहार, 75/137, 11-बिहार, 41/123, 12-मिशकात/168, 13-नहज़ुल फ़साहत, 27, 14-बिहार, 75/4, 15-बिहार, 5/5, 16-बिहार, 75/18 ●

शैतान और हज़रत यहया^अ

इमाम जाफ़र सादिक^अ फ़रमाते हैं, “एक दिन शैतान हज़रत यहया^अ के पास इंसानी शक्ल में आया। उसके बदन पर अलग-अलग रंगों के कपड़े के चीथड़े थे। हज़रत यहया^अ ने सवाल किया, “यह तूने क्या पहन रखा है?”

शैतान ने कहा कि यह वह ख्वाहिशें हैं जिनके ज़रिए से मैं आदम की औलाद को अपने जाल में फँसाता हूँ।

“क्या मेरे लिए भी कोई ऐसी चीज़ तेरे पास है जिससे तू मुझे भी अपने जाल में जकड़ सके?” हज़रत

यहया^अ ने सवाल किया।

“सिर्फ़ एक चीज़ और वह यह कि जब आप दस्तरख़्वान से पेट भरकर उठते हैं तो आप खुदा की याद और इबादत से कुछ दूर हो जाते हैं। उस वक़्त मुझे आप बहुत अच्छे लगते हैं।” शैतान ने जवाब दिया।

यह सुनते ही हज़रत यहया^अ ने क़सम खाई कि कभी भी पेट भर कर खाना नहीं खाएंगे। उधर शैतान ने भी यह फ़ैसला किया कि आगे से किसी को नसीहत नहीं करेगा।

मज़ाक़

उड़ाना

■ हुज्जतुल इस्लाम मीसम ज़ैदी

इस्लाम में मज़ाक़ करना कोई बुरी बात नहीं है बल्कि किसी मोमिन के दिल को खुश करने के लिए कुछ खुशी देने वाली बातें करना इबादत है। वैसे मज़ाक़ थोड़ा ही अच्छा होता है। कुछ रिवायतों में मिलता है कि मज़ाक़ की मिक्दार नमक जैसी होनी चाहिए, अगर खाने में नमक कम होता है तो टेस्ट नहीं आ पाता और अगर वही नमक ज़्यादा हो जाए तो टेस्ट ख़राब हो जाता है।

हाँ! मज़ाक़ करने और मज़ाक़ उड़ाने में बहुत बड़ा फ़र्क़ है। हो सकता है कि इन्सान किसी वक़्त तफ़रीह में कोई ऐसी बात या कोई ऐसा काम करे जिसको मज़ाक़ कहा जा सके लेकिन मज़ाक़ उड़ाना हमारी शरीअत में बुरा अमल है जिस से कुरआन और हदीस में सख़्ती के साथ रोका गया है। किसी का मज़ाक़ उड़ाना बहुत बड़ा जुल्म है। कुरआन मजीद में है, “ऐ ईमान वाले! ख़बरदार! कोई कौम दूसरी कौम का मज़ाक़ न उड़ाए कि शायद वह उस से बेहतर हो और औरतों का भी कोई ग़िरोह दूसरे ग़िरोह का मज़ाक़ न उड़ाए कि शायद वही औरतें उन से बेहतर हों और आपस में एक दूसरे को ताने भी न देना और बुरे लक़ब से भी न पुकारना कि ईमान के बाद बदकारी का नाम ही बहुत बुरा है और जो शख्स भी तौबा न करे तो समझो कि यही

लोग ज़ालिम हैं।”⁽¹⁾

मज़ाक़ उड़ाना हकीक़त में किसी की तौहीन करना होता है कि जिसकी शरीअत में कोई छूट नहीं है। कुछ रिवायतों में मिलता है, “अगर कोई शख्स किसी मुसलमान की तौहीन करता है तो यह ऐसे ही है जैसे उसने खुदा से जंग की।”⁽²⁾

इमाम जाफ़र सादिक^र ने फ़रमाया है, “अपने से बड़ों के साथ झगड़ा न करो और जिनके ऊपर तुम बरतरी रखते हो उनका मज़ाक़ न उड़ाओ।”

क्योंकि किसी की तौहीन करने के बाद उसकी भरपाई बहुत मुश्किल से होती है।

हज़रत अली^र फ़रमाते हैं, “हर चीज़ का बीज होता है और दुश्मनी व नफ़रत का बीज मज़ाक़ करना है।”

इन्सान को ऐसी जगह पर जाना ही नहीं चाहिए जहाँ मज़ाक़ उड़ाने वाले पाए जाते हों क्योंकि वह मौक़ा पाते ही मज़ाक़ उड़ाएंगे और जब उनको इस बात पर टोका जाएगा तो वह कह देंगे कि हम ने तो मज़ाक़ किया था। आमतौर पर लोग मज़ाक़ करने और उड़ाने के बीच कभी कोई फ़र्क़ महसूस ही नहीं करते। वैसे जब उनका मज़ाक़ उड़ाया जाता है तो अपने लिए बड़ी तौहीन

समझकर हमेशा इन्तेक़ाम लेने पर तुले रहते हैं। इमाम हसन^र इस सिलसिले में फ़रमाते हैं, “जब किसी जगह के बारे में सुनो कि वहाँ लोगों की तौहीन की जाती है तो कोशिश करो कि वह तुम्हें पहचान ही न सकें।”⁽³⁾

कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई स्कॉलर किसी ख़ास सब्जेक्ट पर कोई रिसर्च वर्क करना चाहता है लेकिन नाअहलों के मज़ाक़ उड़ाने के ख़तरे की वजह से इस काम से पीछे हट जाता है।

कमज़ोरों का मज़ाक़ उड़ाना दुनिया वालों का पुराना तरीक़ा रहा है। हकीक़त में मज़ाक़ उड़ाने वालों का अंजाम ज़िल्लत और ख़वारी होता है। यह अपनी जगह तय है कि जो मज़ाक़ उड़ाता है उसका भी मज़ाक़ उड़ाया जाता है। मज़ाक़ उड़ाना हकीक़त में किसी की तौहीन करने के बराबर है इसलिए मज़ाक़ उड़ाने वाला इसी दुनिया में ज़िल्लत का सामना करता है।

मरहूम शेख़ अब्बास कुम्भी लिखते हैं कि बग़दाद में लोगों ने देखा कि एक औरत तेज़ी से चली जा रही है। लोगों ने उस से पूछा कि इतनी जल्दी में कहाँ जा रही हो? उसने जवाब दिया कि इमाम मूसा काज़िम^र के रौज़े की तरफ़ जा रही हूँ ताकि उन से फ़रियाद करूँ कि मेरे बेटे को कैदख़ाने में डाल दिया गया है, आप मदद कर दीजिए। यह सुनते ही उस से सवाल करने वाले ने मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा कि मूसा काज़िम^र की मौत तक तो कैदख़ाने में हुई थी, आख़िर वह किस तरह तुम्हारे कैदी बेटे को रिहा कर सकते हैं? और वह लोग उस औरत का मज़ाक़ उड़ाने लगे। वह औरत इस बात से बहुत उदास हो गई, हाथ उठा कर दुआ माँगने लगी और कहने लगी खुदाया! कैदख़ाने में शहीद होने वाले इमाम की क़सम अपनी ताक़त दिखा दे। इतने में उसने देखा कि उसका बेटा कैदख़ाने से आज़ाद होकर उसकी तरफ़ चला आ रहा है। दूसरी तरफ़ मज़ाक़ उड़ाने वाले को किसी ने आकर ख़बर दी कि तुम्हारे बेटे को हुकूमत ने फुलाँ जुर्म की सज़ा में पकड़ कर कैदख़ाने में डाल दिया है।

रसूल इस्लाम^र फ़रमाते हैं, “कभी भी किसी मुसलमान की तौहीन न करो क्योंकि उनके बच्चे

मरयम

JULY 2012

Monthly Coupon

झों में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।



भी खुदा के नज़दीक बुजुर्गवारी रखते हैं।”

इमाम सज्जाद^अ ने फ़रमाया है कि हज़रत ख़िज़्र^अ की हज़रत मूसा^अ को आख़िरी वसियत यह थी कि कभी भी किसी शख्स को उसके गुनाह की वजह से ज़लील न करना।

यह हकीकत है कि जिसका मज़ाक़ उड़ाया जाता है वह जिस तकलीफ़ का शिकार होता है उसे कोई दूसरा महसूस ही नहीं कर सकता। इसीलिए मासूमिन ने ज़ोर दिया है कि जिस चीज़ को तुम अपने लिए पसंद नहीं करते कि वह तुम्हारे लिए कही जाए, तुम भी दूसरों के बारे में इस बात को हरगिज़ न कहो।

रसूले इस्लाम^स फ़रमाते हैं, “दूसरों को ज़लील करने वाला उस वक़्त तक इस दुनिया से नहीं उठाया जाता जब तक कि वह खुद ज़लील न हो जाए।”

ख़िदमते दीन करने वाले खुदा के ख़ास बंदों के साथ भी यह आम बर्ताव रहा है कि उनका भी मज़ाक़ उड़ाया गया है, चाहे वह नबी रहे हों या इमाम, औलिया रहे हों या उलमा, क़ौम ने सबका मज़ाक़ उड़ाया है।

कुरआन में है, “हम ने तुम से पहले वाली क़ौमों में भी कितने ही पैग़म्बर भेज दिए हैं और उनमें ऐसा कोई नबी आया ही नहीं जिसका मज़ाक़ न उड़ाया गया हो।”⁽⁴⁾

मज़ाक़ उड़ाना किसी मोमिन का कैरेक्टर नहीं होना चाहिए बल्कि हर शख्स को दूसरे का एहतेराम करना चाहिए क्योंकि एहतेराम करने ही में दूसरों से एहतेराम मिलता है।

1-सूरए हुज़रात/11, 2-सफ़ीनतुल बिहार, 1/41, 3-मुस्तदरकुल वसाएल, 12/78, 4-सूरए जुक्रफ़, 6-7 ●

गिलास ज़मीन पर रख दो

■ इस्तियाज़ अब्बास रिज़वान

एक दिन एक टीचर ने अपने हाथ में पानी से भरा हुआ एक गिलास लिया और उसको सारे स्टूडेंट्स को दिखाया। इसके बाद अपने स्टूडेंट्स से पूछा, “इस गिलास का वज़न कितना होगा?”

शार्गिदों ने अलग-अलग जवाब दिए, किसी ने कहा 50 ग्राम तो किसी ने कहा 100 ग्राम तो किसी ने कहा 150 ग्राम।

टीचर ने कहा, “मैं भी बिना वज़न किए हुए इसका सही वज़न नहीं बता सकता लेकिन मेरा सवाल यह है कि अगर हम इस गिलास को कुछ मिनट अपने हाथ में लिए रहें तो क्या होगा?”

स्टूडेंट्स ने जवाब दिया, “कुछ नहीं होगा।” टीचर ने पूछा, “अगर एक घंटा इस गिलास को इसी तरह पकड़े रहें तो फिर क्या होगा?”

एक स्टूडेंट ने कहा, “धीरे-धीरे हाथ में दर्द होने लगेगा।”

टीचर ने कहा, “अगर एक घंटे से ज़्यादा इसको पकड़े रहें तो क्या होगा?”

स्टूडेंट ने जवाब दिया, “हाथ सुन हो जाएगा और रगों में ज़ोर पड़ने की वजह से फ़ालेज हो जाएगा और आपको हास्पिटल ले जाना पड़ेगा।” यह सुनकर सारे स्टूडेंट्स हंसने लगे।

टीचर ने कहा, “हाँ! ऐसा ही होगा। लेकिन यह बताओ कि क्या इतनी देर में इस गिलास का वज़न कम-ज़्यादा हो चुका होगा?”

सारे स्टूडेंट्स ने कहा, “नहीं, सर!”

टीचर ने कहा, “फिर हाथों में दर्द

क्यों होगा? और इस से बचने के लिए हमको क्या करना चाहिए?”

स्टूडेंट्स की समझ में कुछ नहीं आया और सब चुप हो गए। उनमें से एक स्टूडेंट ने जवाब दिया, “सर! हमको चाहिए कि जब हमारी ऐसी हालत हो जाए तो गिलास को ज़मीन पर रख दें ताकि इस मुश्किल से बच सकें।”

टीचर ने कहा, “इन्सान की ज़िंदगी भी इसी तरह है कि ज़िंदगी में उसको बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। अगर इन्सान इन मुश्किलों को कुछ मिनट तक अपने ज़ेहन में रहने देगा तो उस पर कोई ख़ास असर नहीं पड़ेगा। लेकिन अगर वह अपनी मुश्किलों को ज़्यादा देर तक अपने ज़ेहन में रखेगा तो परेशान हो जाएगा। और अगर एक लम्बे वक़्त तक इन मुश्किलों को ज़ेहन में रखेगा तो उसका ज़ेहन बेकार हो जाएगा और काम करना बंद कर देगा जिसके नतीजे में वह अपनी सारी स्ट्रिक्स और सलाहियतों को खो देगा और दूसरे किसी काम के लिए उसके पास ताक़त नहीं रहेगी।

इन्सान अपनी ज़िंदगी की मुश्किलों के बारे में फ़िक्र ज़रूर करे लेकिन इस से अहम यह है कि रोज़ाना सोने से पहले अपनी मुश्किलों को ज़मीन पर रख दे और सुबह सवेरे एक मज़बूत इरादे के साथ उठे ताकि आगे आने वाली मुश्किलों का आसानी के साथ मुकाबला कर सके। और नामुमकिन कामों को मुमकिन बना सके।



जीने का मकसद

मैंने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।

(सूर, ज़ारियात/56)

कुरआन में इन्सान की पैदाईश का मकसद

सबसे बड़े सवालों में से वह सवाल जो हर शख्स अपने आप से करता है वह यह है कि वह किस लिए पैदा हुआ है? और वह इस दुनिया में क्यों भेजा गया है?

ऊपर वाली आयत इस अहम और हमेशा उठने वाले सवाल का छोटा सा मगर बड़ा खूबसूरत जवाब दे रही है।

यह आयत उस हकीकत को बता रही है जिसको सब जानना चाहते हैं। हमें उस अज़ीम मकसद का पता दे रही है।

बिना शक के हर समझदार और अकलमंद इन्सान जो काम भी करता है उसका कोई न कोई मकसद ज़रूर होता है। और चूँकि खुदा सबसे ज़्यादा अलीम और हकीम है इसलिए किसी के साथ भी उसका मुकाबला नहीं किया जा सकता।

सवाल यह है कि उसने इन्सान को क्यों पैदा किया है? क्या उसकी ख़िल्फ़त से कोई कमी पूरी हो जाती है? नहीं बल्कि खुदा हर चीज़ से बेनियाज़ है।

यानी इन्सानों की ख़िल्फ़त खुदा के फ़ाएदे के लिए नहीं है।

बल्कि इन्सानों की पैदाईश का मकसद इबादत है और वह भी इन्सानों के ही फ़ाएदे के लिए है। दूसरी जगहों पर भी खुदा ने इस मकसद को बयान किया है, “उसने मौत और ज़िंदगी को इसलिए पैदा किया है ताकि तुम्हें आजमाए कि तुम में हुस्ने अमल के लिहाज़ से सबसे बहतरीन कौन है।”

यहाँ पर जो इन्सानों को आजमाने की बात कही गई है वह भी “नेक अमल” के लिहाज़ से एक मकसद है।

दूसरी तरफ़ खुदा फ़रमाता है, “जान लो कि अल्लाह तमाम चीज़ों पर कुदरत रखने वाला है।”

यहाँ पर खुदा की कुदरत और इल्म को जानना इन्सान की पैदाईश का मकसद है लेकिन फिर भी असली मकसद बंदगी है।

इसलिए मालूम यह करना पड़ेगा कि हकीकत क्या है? डिक्शनरी में बंदा उस इन्सान को कहते हैं जो पूरी तरह अपने मौला व मालिक से अटैच्ड हो और उसकी वही मर्ज़ी हो जो उसके मालिक की हो।

खुदा ने कुरआने मजीद में हर एक चीज़ को बयान कर दिया है फिर यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह ने इन्सान को पैदा तो किया मगर उसकी पैदाईश का मकसद ही न बयान किया हो। ऐसा नहीं है बल्कि अल्लाह ने बयान किया है और वह यह कि इन्सान की ख़िल्फ़त का मकसद इबादत है।

खुदा ने कितने छोटे और खूबसूरत सेंटेंस में दुनिया के तमाम इन्सानों की ख़िल्फ़त का मकसद बयान कर दिया है मगर इन्सान ने इस मकसद को बिल्कुल ही भुला दिया है। वह भी इस तरीक़े से कि सिर्फ़ नमाज़ और रोज़े को ही इबादत मानता है और वह भी अंजाम नहीं देता यानी नमाज़ को कज़ा ही नहीं करता बल्कि छोड़ भी देता है।

इसके अलावा इबादत सिर्फ़ रुकु-सजदों का नाम नहीं है बल्कि एक दूसरे के साथ हमदर्दी

करना, इल्म हासिल करना, माँ-बाप के साथ नेकी करना, अन्न बिल मारुफ़ व नही अनिल मुन्कर करना, अपने इल्म पर अमल करना, दूसरों को दीन की तालीम देना और हर वह काम जो खुदा की मर्ज़ी के लिए हो सब का सब इबादत है।

अल्लाह ने इन्सानों को बेकार नहीं पैदा किया है। लेकिन इन्सान ने अपने मकसद को नहीं पहचाना और जब खुद के ही मकसद को इन्सान ने नहीं पहचाना तो वह इबादत को क्या समझ सकता है।

इसी वजह से इन्सान इस दुनिया में रहकर कोई भी नेक अमल अंजाम नहीं देता और अगर कभी-कभार करता भी है तो चिंगारियों के ज़रिए जला देता है यानी बर्बाद कर देता है।

जैसे नमाज़ पढ़ता है तो रियाकारी के ज़रिए बर्बाद कर देता है। एहसान करता है तो जता देता है। इल्म हासिल करने के बाद ग़ुरूर करने लगता है। अन्न बिल मारुफ़ और नही अनिल मुन्कर तो करता है यानी अच्छाईयों की तरफ़ लोगों को बुलाता है और उन्हें बुराईयों से रोकता है लेकिन खुद अमल नहीं करता। एक दूसरे की मदद करना तो अलग बात एक भाई अपने भाई को सिर्फ़ दौलत के लिए क़त्ल कर देता है। बाप-बेटे में ताल्लुक़ ख़त्म हो जाता है।

लेकिन खुदावंदे आलम इतना रहीम और करीम है कि अपने बंदों के लिए कोई क़ैद नहीं लगाई, “बेशक हम ने उसे रास्ते की हिदायत दे दी है, चाहे वह शुक्रगुज़ार बन जाए या कुफ़राने नेमत करने वाला बन जाए।”

यानी खुदावंदे आलम ने बंदों को छूट दे दी है कि चाहे शुक्रगुज़ार बंदे बनें या नाफ़रमान।

अगर इन्सान के सामने एक खूबसूरत बाग़ हो और उसमें फल और मेवे हों और एक तरफ़ पुरानी इमारत हो और उस शख्स से कहा जाए कि चाहो तो इस बाग़ में दाख़िल हो जाओ और अगर चाहो तो इस इमारत में दाख़िल हो जाओ। ज़ाहिर है कि वह इन्सान उसी बाग़ में जाना पसंद करेगा क्योंकि उसको फ़ाएदा मालूम है।

लेकिन अफ़सोस इस बात का है अभी तक इन्सान ने अपने मकसद को नहीं पहचाना है और इसी वजह से उसे फ़ाएदा भी नहीं मालूम है, इसलिए उसने अल्लाह के बाग़े रहमत में जाने से इन्कार कर दिया और नाफ़रमानी की राह को अपना लिया। ●

FRUIT JUICE



गर्मियां हों और शर्बत का नाम बीच में न आए, हो ही नहीं सकता। गर्मियों और शर्बत का चौली-दामन का साथ है क्योंकि इस मौसम में ठंडे-ठंडे शर्बत से ज़्यादा राहत भला और क्या चीज़ पहुंचा सकती है। इसीलिए इस बार हम लेकर आए हैं आपके लिए डेलेशियस शर्बत...

तरबूज़ का रस: डेढ़ गिलास
नींबू का रस: 2 चम्मच
नारियल का पानी: आधा कप
खीरे का रस: आधा कप
चीनी का पाउडर: 1 चम्मच
काला नमक: 3 चुटकी
नमक: आधा चम्मच
तरबूज़ के छोटे टुकड़े: 4
आइस क्यूब्स: 8

तरकीब:

बर्फ और तरबूज़ के टुकड़ों को छोड़कर सभी चीज़ों यानी तरबूज़ का रस, नींबू का रस, नारियल का पानी, खीरे का रस, चीनी का पाउडर, काला नमक और नमक को एक साथ मिला लें। दो गिलासों में शर्बत निकालकर ऊपर से बर्फ डाल दें। तरबूज़ के टुकड़ों को गिलास के किनारों पर लगाकर पेश कीजिए। गर्मी के मौसम में तरबूज़ से बेहतर फल कोई और नहीं है। गर्मी के मौसम में यह शर्बत डी-हाइड्रेशन की मुश्किल को दूर करेगा। आप चाहें तो शर्बत की सभी चीज़ों को तैयार करके कुछ देर के लिए फ्रिज में भी रख सकती हैं, लेकिन जूस को ज़्यादा देर तक स्टोर करके न रखें, इसका ज़ाएफ़ा बिगड़ सकता है और साथ ही सेहत पर उल्टा असर भी पड़ सकता है।

तरबूज़ का शर्बत





बेल का शर्बत



बेल का गूदा: 250 ग्राम
चीनी: ज़ाएके के हिसाब से
नींबू का रस: 1 चम्मच

तरकीब:

एक कप पानी में चीनी डालकर आँच पर चीनी गलने तक उबालें। चाशनी को ठंडा करें और छान लें। इसमें बेल का गूदा, नींबू का रस डालकर हैंड ब्लेंडर से अच्छी तरह मिलाएं। गिलास में थोड़ा-थोड़ा जूस डालें और ऊपर से ठंडा पानी और कुटी हुई बर्फ डालकर चम्मच से चलाएं और सर्व करें।

e
d
i
c
e
r

चेरी का शर्बत

चेरी: 400 ग्राम
चीनी: 300 ग्राम
नींबू का रस: 4 चम्मच
पानी: 2 कप

तरकीब: चेरी को धोकर अलग रख दें। पानी उबाल लें और चेरी को उबलते पानी में डालकर तीन से चार मिनट तक उबालें। जब पानी ठंडा हो जाए तो चेरी को पानी से निकालकर गुठली अलग कर दें। अब दो कप पानी में चीनी डालकर उबालें और चाशनी तैयार करें। जब चाशनी ठंडी हो जाए तो उसमें चेरी का गूदा और नींबू का रस डालकर अच्छी तरह से मिलाएं और ठंडा होने के लिए फ्रिज में रख दें। सर्व करते वक़्त गिलास में चेरी का शर्बत, क्रशड आइस और ज़रूरत भर ठंडा पानी डालकर मिलाएं और सर्व करें।



यूरोप की बेहयाई और बेशर्मी

■ मोहम्मद साजिद अली मिस्बाही नागोरी

आज के दौर को रौशन खयाली, तरक्की और आज़ादी व बराबरी का दौर जाना जाता है। मॉडर्न कल्चर के मानने वालों का दावा है कि उन्होंने औरत को पस्ती और ज़िल्लत व रुसवाई के गहरे कुँए से निकाल कर बुलंदी और इज़्ज़त व शोहरत की कुर्सी पर बिठा दिया है। आज औरत को मर्द के बराबर हक़ देने का प्रोपेगण्डा किया जाता है। और औरतों को यह फ़रेब दिया जाता है कि तुम अब तक घर की चार दीवारी में कैद रही हो अब आज़ादी का दौर है और तुम्हें घर से बाहर निकल कर इस रंगीन दुनिया के मज़े लेने चाहिए क्योंकि सदियों की गुलामी के बाद अब तुम्हें आज़ादी का दौर मिला है। इस तरह औरत को घसीटकर सड़कों पर लाया जा रहा है। अपना उल्लू सीधा करने के लिए सेल्स-गर्ल और माडल-गर्ल बनाया जा रहा है, दफ़्तरों में क्लर्क और असिस्टेंट बनाया जा रहा है, औरतें मर्दों के शाना-बशाना युनिवर्सिटीज़ में पढ़ रही हैं, हिजाब को एक बहुत बेहूदा रसम माना जा रहा है, पश्चिमी स्कॉलर्स की निगाह में हिजाब उस दौर की यादगार है जब मर्द-औरत को अपने लिए एक सामान की तरह चोरों से छुपाकर रखता था ताकि महंगे दामों में उसे बेचकर नफ़ा हासिल कर सके। हिजाब की मुख़ालेफ़त में आए दिन आवाज़ें बुलंद होती हैं कि हिजाब औरत की आज़ादी का दुश्मन है, हिजाब औरत

की सलाहियों के फलने-फूलने में बहुत बड़ी रुकावट है, हिजाब औरत की ज़िल्लत और रुसवाई है, हिजाब ने औरत को फ़ाइनेन्शल और कल्चरल राईट्स से दूर कर रखा है।

दीने इस्लाम के मुख़ालिफ़ों ने औरत के बारे में सैकड़ों किस्म की ग़लत-फ़हमियाँ फैला रखी हैं जैसे इस्लामी समाज में औरतों को बच्चे पैदा करने की मशीन समझा जाता है, उनको बुरा उढ़ाकर चारदीवारी में बंद रखा जाता है, मर्द को पूरी आज़ादी है कि जब चाहे बिना वजह बताए अपनी बीवी को तलाक़ दे दे जिसकी वजह से औरत हमेशा अथर में रहती है, उसे किसी तरह का प्रोटेक्शन नहीं मिल पाता, इस्लाम में औरत को खेती माना जाता है, औरत को माल समझकर मेहूर के ज़रिए ख़रीदा जाता है, मर्द कई-कई शादियाँ रचाकर औरत को कई-कई सौतनों के बीच पीस कर रख देता है यानी जितने मुँह उतनी बातें।

पश्चिमी कल्चर की तबाहियाँ

हकीकत यह है कि पश्चिमी कल्चर का राग अलापने वाले ख़ूब जानते हैं कि आज पश्चिमी कल्चर की वजह से मर्द और औरत की अख़लाकी गिरहें ढीली पड़ चुकी हैं, शर्मो हया का जनाज़ा निकल चुका है, औरतें अपने जमाल और ख़ूबसूरती की नुमाईश करने के लिए घर की रौनक के बजाए शम-ए-अंजुमन बनती जा रही हैं, हर तरफ़ नंगापन और बेहयाई, ग़दा लिट्रेचर, ब्लू-फ़िल्में, भड़काउ नाच-गाने, ग़ैर अख़लाकी अफ़साने वबाई बीमारी की तरह पूरे समाज को जकड़े हुए हैं। हालत यह है कि किसी औरत की सेमी-न्यूड तस्वीर के बग़ैर एक साबुन बेचना भी ग़वारा नहीं बल्कि एडवर्टाइज़मेंट की दुनिया में मॉडल-गर्ल एक सूदमंद कारोबार की तरह बन चुकी है। एक सर्वे के मुताबिक़ इस से ज़्यादा फ़ापदेमंद कारोबार नज़र ही नहीं आता।

आज़ादी के नाम पर पश्चिमी कल्चर ने औरत को अजनबी मर्दों के साथ दुकानों, कारख़ानों, दफ़्तरों और फ़ैक्ट्रियों में जमा कर दिया है। इसके अलावा पाक़ों, क्लबों, नाच-गानों की महफ़िलों और बार-क्लबों में भी औरतें अपनी पूरी बेहयाई के साथ मौजूद हैं, जिसकी वजह से पूरा समाज और ख़ास तौर से औरतों की घर से दूरी ने फ़ैमिली सिस्टम को तबाह कर दिया है, बच्चों की परवरिश नर्स और नौकरानियों के ज़िम्मे है जिसका रिज़ल्ट अख़लाकी आवारगी, फ़िक़्री ख़राबी और सेक्चुअली एक्सप्लॉएटेशन की शक्ल में हमें और ख़ासकर पश्चिमी समाज को घुन की तरह खा रहा है। इस घुनज़ुदा समाज की पहचान यह रिपोर्ट करा रही है।

अमरीका में एक रिपोर्ट छपी जिसके मुताबिक़ इस मुल्क में हर रोज़ नौ हज़ार बच्चे पैदा होते हैं जिनमें बारह सौ तिरसठ



नाजाएज होते हैं। हर रोज़ पाँच हजार नौ सौ बासठ शादियाँ और एक हजार आठ सौ छियासी तलाक़ें होती हैं। हर रोज़ 3,261 इवॉशन होते हैं।

इस मॉडर्न मुल्क की पाकीज़गी का यह हाल है कि हर रोज़ दो हजार सात सौ चालीस लड़कियाँ बालिग़ होने से पहले ही प्रेग्नेंट हो जाती हैं, रोज़ाना अड़सठ हजार चार सौ तिरान्त्वे बच्चे सूज़ाक (Gonorrhea) और आतिशक (Syphilis) जैसी ख़तरनाक बीमारियों में घिर जाते हैं।

इस मॉडर्न और कल्चर्ड कहलाने वाले मुल्क के बारे में दूसरी रिपोर्ट यह है:-

“वाशिंगटन ऐसोसिएशन प्रेस अमेरिकी हुकूमत को अपनी रिपोर्ट करने वाले तीन रिसर्च डाक्टर्स ने कहा कि लास एंजिल्स में हर एक लाख में 52 लोग रेप केसेस में शामिल होते हैं जबकि वाशिंगटन में इसका रेशियो 717 है। न्यूयार्क में छः महीने में रेप के तीन हजार केसेस पुलिस के यहाँ दर्ज किए गए हैं और शिकायत दर्ज कराने वालों में छः साल से 88 साल तक की उम्र की औरतें शामिल हैं लेकिन ज़्यादा शिकायत करने वाली औरतों की उम्र 14 साल है।”

यह रिपोर्टें दसियों साल पहले की हैं जब शर्मो हया की कुछ रमक बाकी थी अब जबकि बची-खुची शर्मो हया भी ख़त्म हो चुकी है तो बेहयाई कहाँ पहुँच चुकी होगी इसके बारे में सोचकर ही तबीअत घबराने लगती है। फिर भी इन रिपोर्टों से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि औरतों की आज़ादी और बराबरी का दावा करने वाला पश्चिमी कल्चर औरतों पर कितना मेहरबान है। आज़ादी के नाम पर औरतों को उनके घरों से

निकाल कर किस तरह ज़िल्लत व रुसवाई का तौक़ उनके गलों में डाला गया, उनकी आँखों से हया का ज़ेवर उतार कर हवस परस्तों की आँखों का सुरमा बनाया गया, रेस्टोरेंट्स में वेटर का काम करने, होटलों में मुसाफ़िरों के कमरे साफ़ करने, उनके बिस्तरों की चादरें बदलने और रूम अटेंडेंट की तमाम ज़िम्मेदारियाँ उन्हें देकर आख़िर उन्हें कौन सा इज़्ज़त का ताज़ पहना दिया, गिनी-चुनी कुछ औरतों को ओहदे और पोस्ट देने के नाम पर बाकी लाखों औरतों को किस बेदर्दी के साथ सड़कों और बाज़ारों में घसीट कर लाया गया और उसका नाम औरतों की आज़ादी रख दिया गया। क्या यह एक खुला हुआ फ़ाड़ नहीं है? यह सब देख कर अल्लामा अब्दुल अलीम मेरठी ने वेस्टर्न कल्चर से भरे माहोल में शर्म व हया के न होने का शिकवा यूँ किया, “नई तहज़ीब की हवा बाकी मुल्कों की औरतों को भी इसी तरह ढकेले जा रही है, पाकीज़गी, शर्म व इज़्ज़त आज यूरोप के ज़नाना बाज़ारों में ढूँढ़े से भी नहीं मिलती, मिस्र व शाम के इलाकों में ख़त्म होती जा रही है। बची-खुची थोड़ी सी हिन्दुस्तान की गलियों, यहाँ के कूचों और महल्लों बल्कि कुछ मकानों की चार दीवारी में कहीं-कहीं नज़र आती है, क्या वह वक़्त भी आने वाला है कि हम इस कीमती चीज़ को यहाँ भी नहीं देख पाएंगे।”

यह अल्लामा मेरठी के अपने ज़माने की बातें थीं मगर आज हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में पश्चिमी कल्चर और तहज़ीब किस तरह असर फैला रही है, यह कोई ढकी-छुपी बात नहीं है। यह मॉडर्न कल्चर और तहज़ीब की हल्की सी झलक थी, अब आईए इस्लामी सोशल सिस्टम पर नज़र डाली जाए।

इस्लाम में औरत

इस्लाम ने औरत की इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त के लिए बहुत ही सख़्त क़ानून लागू किए, कुरआन में है, “जो लोग पाक़दामन औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाते हैं और चार गवाह पेश नहीं कर पाते हैं, उन्हें अस्सी कोड़े मारो और फिर कभी उनकी गवाही कुबूल न करना क्योंकि यह

लोग सरासर फ़ासिक़ हैं।”⁽¹⁾

इस्लामी टीचिंग्स से ज़ाहिर हो जाता है कि इस्लाम ने औरतों के इमोशनस का पूरा ध्यान रखते हुए मर्दों को इनके साथ नर्मी, मेहरबानी और मोहब्बत का बर्ताव करना सिखाया और इन पर होने वाले हर जुल्म व सितम का रास्ता बंद किया।

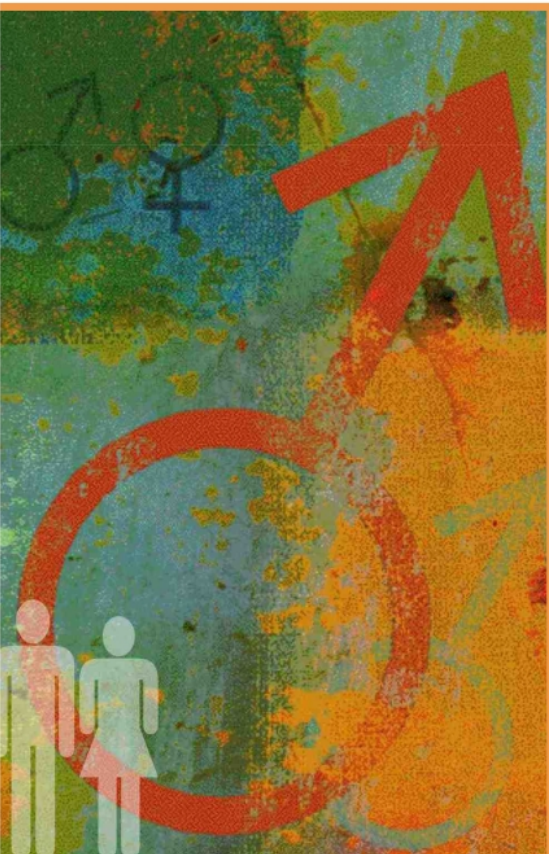
इस्लाम में हिजाब

कुरआन में है, “ऐ नबी! आप अपनी बीवियों, बेटियों और मोमिनीन की औरतों से कह दीजिए कि अपनी अपनी चादर को अपने ऊपर लटकाए रहा करें। यह उनकी पहचान और उनकी शराफ़त से ज़्यादा करीब है। और इस तरह उनको परेशान नहीं किया जाएगा।”⁽²⁾

इस आयत के तेवर इस बात की तरफ़ इशारा कर रहे हैं कि इस्लाम में हिजाब औरतों के लिए तरक्की की राहें बंद करने के लिए नहीं है बल्कि उनकी इज़्ज़त आबरू की हिफ़ाज़त के लिए वाजिब किया गया है। इस्लाम के शुरु में औरतें जाहिलियत के ज़माने की तरह बेपर्दा निकलती थीं। कुरआन शराफ़त और पाकीज़गी की कसौटी तय करता है कि चादर ओढ़कर निकलो ताकि तुम्हें कोई देखते ही पहचान ले कि कोई बुरी औरत नहीं है बल्कि इज़्ज़तदार और शरीफ़ घराने की एक ख़ातून है और बुरे लोग तुम से बेहयाई की कोई उम्मीद न रखें क्योंकि जो औरत अपना चेहरा ग़ैर मर्द के सामने खोलना ग़वारा न करे उसकी ग़ैरत उसे किसी अजनबी के सामने अपने जिस्म के दूसरे हिस्सों को खोलने की इज़ाज़त बिल्कुल नहीं देगी। यही हिजाब का फ़लसफ़ा है जिसे यूरोप वालों की अक़लें समझ नहीं पाई या समझ कर नज़रअंदाज़ कर गईं।

दूसरी जगह पर कुरआन में है, “अपने घरों में बैठी रहो और पहली जाहिलियत जैसा बनाव-सिंगार न करो।”⁽³⁾ “ख़बरदार! अपने पाँव पटक कर न चले कि जिस ज़ीनत को छिपाए हुए हैं उसका इज़हार हो जाए।”⁽⁴⁾

अब अगर आज के दौर की औरतों पर नज़र डाली जाए तो इसमें कोई शक़ नहीं है कि आज पूरे





समाज में जो एक आग लगी हुई है और बेहयाई और बेशर्मी का जो सैलाब फूट पड़ा है वह उन्हीं दीनी अहकाम को टुकड़ाने का नतीजा है। ऊपर वाली आयत के अहकाम इन्हीं बुराईयों का रास्ता बंद कर रहे हैं। इस्लाम ने औरत की इतनी इज्जत की कि औरत के सर के बाल उसकी मौत के बाद भी अजनबी शख्स के लिए देखना बर्दाश्त नहीं किया मगर जो अपनी जिंदगी ही में नुमाईश के मामले में बालों से भी आगे बढ़ चुकी हैं वह भला इन अहकाम को कब खातिर में लाएंगी। रसूल अकरम^० ने बहुत पहले ही इन नाकदरों की बेहयाई की तरफ इशारा करते हुए फरमाया था, “दो तरह के जहन्नमी ऐसे हैं जिन्हें मैंने नहीं देखा... दूसरी किस्म वह औरतें हैं जो लिबास पहन कर भी नंगी हैं। दूसरों को अपनी तरफ खींचने वाली और जो खुद दूसरों की तरफ झुकाने वाली, उनके सर ऊँटों के कोहान जैसे लटकें होंगे, वह न तो जन्नत में जाएंगी और न उसकी खुशबू पाएंगी।”

आज के दौर से पहले लिबास पहन कर नंगे होने की बात समझ ही में नहीं आती थी मगर इस फैशन के दौर ने इसका भी नमूना दिखा दिया, बदन पर लिबास हैं मगर बाजू खुले, सीना खुला, गला खुला, पिंडलियाँ खुलीं, बाल खुले, हद तो यह है कि कभी-कभी लिबास के नाम पर जिस्म का सिर्फ एक चौथाई या उस से भी कम हिस्सा छुपा होता है।

इसी तरह रसूल^० के ज़माने में ऊँट के कोहान की तरह बाल बनाना ऐसी चीज़ थी जो किसी की समझ में आ ही नहीं सकती थी मगर तरक्की के मतवालों ने यह भी कर दिखाया। अब यह कोई शर्म की बात नहीं रही है बल्कि अब यह फैशन का अटूट हिस्सा बन गया है।

दूसरी तरफ पैगम्बरे इस्लाम^० की टीचिंग्स यह हैं, “देखना आँख का ज़िना है, सुनना कान का ज़िना है और बात करना

ज़बान का ज़िना है।”

मर्द के बारे में सिर्फ गुज़रे बसर (नज़रें नीची रखना) और हिफ़्ज़े फुरुज (शर्मगाह की हिफ़ाज़त) का हुक्म दिया गया है और औरत से हिजाब करने के लिए भी कहा गया क्योंकि औरत अपनी नेचरल कमज़ोरी की वजह से बहुत जल्द दूसरे से इम्प्रेस्ड होकर सबक़त कर बैठती है। इसलिए दीन ने औरत की इज्जत व आबरू के तहफ़फ़ुज़ की खातिर गुनाहों के हर दरवाज़े को बंद कर दिया। इसी बात को एक दूसरी हदीस में यूँ बयान किया है, “जो शख्स किसी अजनबी औरत पर शहवत की नज़र डालेगा क़यामत के दिन उसकी आँखों में पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा।” यह तय है कि दुनिया में जिस तरह तेज़ी के साथ बुराईयों का सैलाब फूट पड़ा है इसका सबसे बड़ा सोर्स यही चेहरों की बेहिजाबी और निगाहों की बेबाकी है।

आज के एक मशहूर हिस्टोरियन टूटोटम्बी कहते हैं, “मैंने हिस्ट्री को पढ़ा है और यह परखा और इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि दुनिया की कौमें उस वक़्त तबाह व बर्बाद हुई हैं जब उनकी औरतें बेहिजाब बाहर निकली हैं।”

मशहूर हिस्टोरियन प्रोफ़ेसर जे. टाइन भी लिखते हैं, “इन्सानी हिस्ट्री में तबाही का वक़्त वही था जब कि औरत ने घर को खुदा हाफ़िज़ कह दिया है।”

हमारे सामने पुराने कल्चर्स और तहज़ीबों का सोशल सिस्टम भी मौजूद है। मॉडर्न कल्चर और तहज़ीब की आँखों को चकाचौंध करने वाली खूबसूरती और हुस्न भी हाज़िर है और इन दोनों से अलग-अलग एक बैलेंस्ड और बीच का रास्ता यानी दीनी शरीअत भी है। अब फैसला हमारे हाथ में है कि औरत को ज़िल्लत व रुसवाई के अंधे कुँए में फेंक देने वाले पुराने कल्चर्स इन्सानी सोसाइटी की डगमगाई हुई कश्ती को सलामती के साथ साहिल तक पहुँचाने वाले हैं या औरतों को आज़ादी के झूटे नारों तले रौंदने वाला पश्चिमी कल्चर इन्सानियत को इंसाफ़ का रास्ता दिखाने वाला है या फिर औरत को एक बाइज़ज़त ख़ातून की तरह हिजाब में रख कर उसको पाकीज़गी और शर्म व हया के ज़ेवर से आरास्ता करने वाले मज़हब इस्लाम की तहज़ीब में पनाह लेने में इन्सानियत की मेराज है।

1-सूरए नूर/4-5, 2-सूरए अहज़ाब/59, 3-सूरए अहज़ाब, 33, 4-सूरए नूर/31 ●



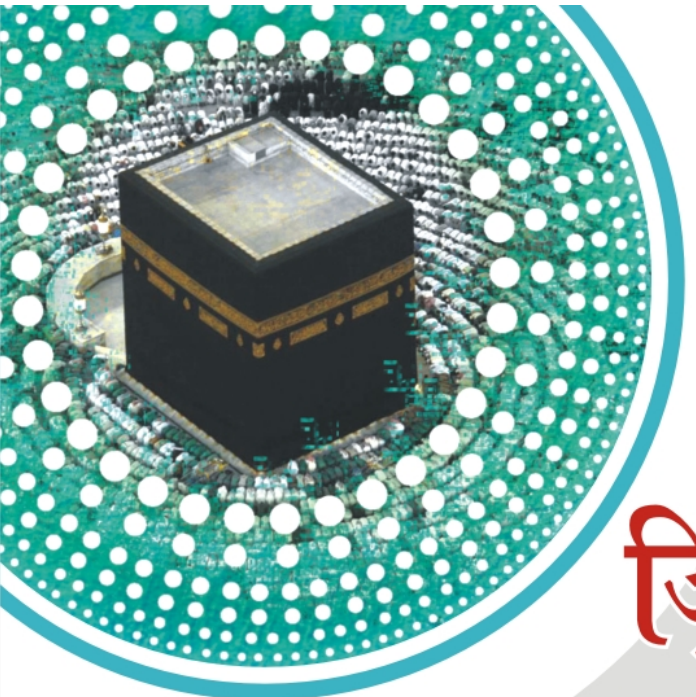
KAZIM Zari Art

**All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri**

**Hata Dhannu Beg
Kazmain Road Lucknow**

Contact No.

**0522-2264357, 9839126005
8687926005**



हज और ज़ियारत

■ अनम रिज़वी

हर मोमिन के दिल में तमन्ना होती है कि वह मरने से पहले एक बार हज और ज़ियारत कर ले। कौन नहीं चाहेगा कि रसूल इस्लाम^ﷺ और इमाम हुसैन[ؑ] के रौज़े की ज़ियारत न करे। वह इन्सान खुशकिस्मत है जिसको यह शरफ़ मिल जाए और यह बात भी सच है कि जो मोमिन सच्चे दिल से अल्लाह से दुआ माँगता है वह रसूल^ﷺ के रौज़े की ज़ियारत ज़रूर करता है। अगर वह यह तमन्ना लेकर मर जाए तो मरने के बाद उसकी रूह रौज़े पर ज़रूर जाएगी। अल्लाह हम सबको हज और चौदह मासूमिन की ज़ियारत करने का शरफ़ अता करे और उसे कुबूल करे।

आप सोचेंगे कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि अल्लाह हमारे हज या ज़ियारत को कुबूल न करे, आखिर हम इतना पैसा खर्च करके जाएंगे? अगर वह पैसा जिससे आप हज और ज़ियारत करना चाहती हैं वही पाक नहीं है तो कुबूल होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। कुछ लोग सोचते हैं बिना लूटमार के और बिना रिश्तत लिए मेहनत से कमाया हुआ पैसा ही हलाल है मगर इतना काफ़ी नहीं है। हलाल यानी पाक पैसा वह है जो हलाल तरीक़े से कमाया हुआ हो और उसमें से खुम्स भी निकला हो। हज़रत अली[ؑ] फ़रमाते हैं, “बदतरीन माल वह है जिसमें से खुदा का हक़ न अदा किया गया हो।”

खुदा के हक़ में कई चीज़ें आती हैं- ख़ैरात करना, ज़कात देना, खुम्स निकालना वगैरह।

कई लोग सोचते हैं कि ख़ैरात देना खुम्स का ही एक हिस्सा है मगर ऐसा नहीं है। खुम्स का मतलब है- “साल भर कमाए हुए पैसों को खर्च करने के बाद जो कुछ साल के आखिर में बच जाए उसका पाँचवां हिस्सा निकालना खुम्स कहलाता है।”

अगर आप अपने हलाल तरीक़े से कमाए हुए

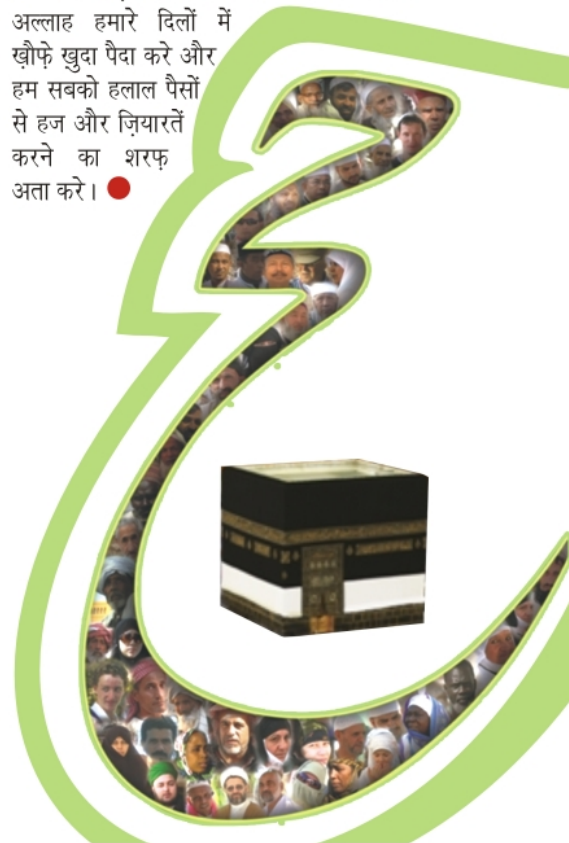
और खुम्स निकाले हुए पाक पैसे से हज व ज़ियारत करने जाएं तो यकीनन आपका जाना कुबूल होगा। यह देखकर बहुत दुःख होता है कि कुछ लोग मुसलमान होते हुए भी हराम का कारोबार करते हैं और कुछ लोग हराम पैसे को नेक काम में लगा देते हैं और सोचते हैं कि अल्लाह कुबूल कर लेगा मगर हमें हराम पैसा राहे खुदा में खर्च करने का हक़ नहीं है।

इमाम मोहम्मद बाकिर[ؑ] फ़रमाते हैं, “अगर इन्सान उस पैसे से कुछ खर्च करे जिसका खुम्स न दिया गया हो तो खुदा की बारगाह में उसका यह खर्च किया हुआ पैसा कुबूल नहीं है क्योंकि उसने उस माल की ख़रीदारी की जो उस पर हलाल नहीं था।”

हमें हमेशा हराम पैसों से दूर रहना चाहिए, खुम्स निकालना चाहिए और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए कहना चाहिए। इस से आपको सवाब तो मिलेगा ही, साथ में उस मुस्तहक़ शख्स की दुआएं भी मिलेंगी जिसकी आपने खुम्स के ज़रिए मदद की हो और साथ ही साथ पैसे में बरकत भी होगी। अब आप अपने पाक पैसे का इस्तेमाल किसी भी नेक काम में कर सकती हैं। माशाअल्लाह अब हम में से हर एक हज और ज़ियारत करना चाहता है, चाहे वह अमीर हो या ग़रीब। कितने ग़रीब ऐसे हैं जो बस अल्लाह से दुआ करते हैं, अल्लाह उनकी मदद ग़ैब से करता है और हज-ज़ियारत करने एक बार नहीं कई बार जाते हैं क्योंकि वह सच्चे दिल से बस अल्लाह के सामने हाथ फैलाते हैं, वह जानते हैं कि देने वाला सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा है। यह बात सच है कि दिल में तमन्ना हो, हौसला हो और अल्लाह पर भरोसा हो तो कोई भी हो वह अल्लाह के घर, रौज़-ए-इमाम हुसैन[ؑ] की ज़ियारत से महरूम नहीं रहेगा। इस दुनिया में हर तरह के लोग हैं,

कुछ लोग तो बस इस चीज़ से खुश रहते हैं कि उनके नाम के आगे हाजी या ज़ाएर लग जाए लेकिन उनकी तमन्ना नाम से हाजी न होकर काम से हाजी होना चाहिए और यह दुआ करते रहना चाहिए कि अल्लाह इसे कुबूल कर ले।

कुछ लोग जवानी में हज नहीं करना चाहते क्योंकि वह सोचते हैं कि अगर अभी हज कर लिया तो दुनिया के गुनाहों से महरूम रहना पड़ेगा। इसलिए ख़ूब गुनाह करने के बाद बुढ़ापे में हज करके तौबा कर लेंगे जो कि बिल्कुल ग़लत है। अगर आप साहिबे हैसियत हैं तो बुढ़ापे से ज़्यादा जवानी का हज कुबूल है क्योंकि बुढ़ापे में तो हर इन्सान अल्लाह को याद करता है मगर जवानी में अगर कोई शख्स अल्लाह को याद करे तो कितना बेहतर है। जवानी में पढ़ी गई दो रक़ात बुढ़ापे की 70 रक़ात से बेहतर है। अब आप खुद समझ सकती हैं कि अल्लाह जवानी की इबादत को कितना पसंद करता है। कुछ लोगों का कहना है कि अगर हम अल्लाह के अहक़ाम की पैरवी करते हैं तो दुनिया की कोई लज़ज़त नहीं उठा पाते लेकिन क्या गाने सुनना, डॉस करना, ग़ीबत करना, बेपर्दा घूमना... यही दुनिया की लज़ज़त है, नहीं, बल्कि यह शैतानी दुनिया की लज़ज़त है, दीनी दुनिया की नहीं। हम पर्दा करें, हलाल काम करें, अल्लाह की इबादत करें, और दुनियावी जाएज़ काम करें तो इसमें भी एक लज़ज़त है लेकिन लज़ज़त का मज़ा सिर्फ़ उसे आएगा जिसके दिल में ख़ौफ़े खुदा होगा और ऐसा इन्सान नमाज़ भी पढ़ेगा, रोज़ा भी रखेगा, खुम्स भी निकालेगा और दूसरे सारे वाजिबात को भी अदा करेगा, इसके साथ-साथ हज और ज़ियारत करने की कोशिश करेगा। अल्लाह हमारे दिलों में ख़ौफ़े खुदा पैदा करे और हम सबको हलाल पैसों से हज और ज़ियारत करने का शरफ़ अता करे। ●



पीछा करने वाली आँख

बहुत से लोगों को शायद यह पता न हो कि वह जैसे ही इंटरनेट पर जाते हैं, उनकी निगरानी शुरू हो जाती है और वेब पर उनकी सारी सरगर्मियों का रिकार्ड महफूज़ होना शुरू हो जाता है। इस डेटा की मदद से हर शख्स की अलग-अलग फ़ाइल तैयार की जाती है और फिर यह फ़ाइल और इसकी डिटेल्स दिन में कई-कई बार बेची जाती हैं। यह कोई छोटा-मोटा धंधा नहीं है बल्कि अरबों डालर का करोबार है।

क्या आपको पता है कि जब आप अपने कम्प्यूटर, लेपटाप या स्मार्ट मोबाइल फ़ोन के ज़रिए इंटरनेट पर जाते हैं और वेबसाइट्स पर कुछ सर्च करते हैं या यू-ट्यूब खंगालते हैं, वीडियोज़ देखते हैं, उन्हें डाउनलोड करते हैं या सिर्फ़ वक्त गुज़ारी के लिए वेब पर तांक-झांक करते हैं तो कोई आपको देख रहा होता है।

जी हाँ! यह बिल्कुल सही है। एक खुफ़िया आँख बराबर आप पर नज़र रखे होती है। वह सिर्फ़ यही नहीं देखती कि आप किन-किन वेबसाइट्स पर गए हैं और कहाँ-कहाँ क्लिक किया है बल्कि वह इस का वेब-एड्रेस भी अपनी मेमोरी में सेव भी कर रही होती है। खुफ़िया आँख इन मालूमात को सिर्फ़ आपकी हार्ड-डिस्क तक ही महदूद नहीं रखती बल्कि उसे इंटरनेट यूज़र्स का रिकार्ड रखने वाले सेंटर को ट्रांसफ़र कर देती है।

आपकी निगरानी करने वाली खुफ़िया आँख आख़िर हैं कहाँ? क्या

आपके आसपास है, या आपके कमरे में कहीं छुपी हुई है या किसी खुफ़िया डिवाइस की सूरत में आपके कम्प्यूटर के अंदर फ़िट है जो बड़ी राज़दारी के साथ आपके माउस की हर क्लिक का रिकार्ड सेव कर रही है? जी नहीं। यह खुफ़िया आँख उस इंटरनेट सर्च इंजन के अंदर मौजूद है जिसके ज़रिए आप अपनी पसंद की वेबसाइट्स पर जाते हैं और जैसे ही आप इंटरनेट पर पहुँचते हैं, आपकी निगरानी पर लगी यह आँख एक्टिव हो जाती है।

दुनिया भर में इस वक्त सब से ज़्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला इंटरनेट सर्च इंजन गूगल है। करीब 65% लोग इंटरनेट पर गूगल की मदद हासिल करते हैं। इस दौड़ में याहू 17% के साथ दूसरे, जबकि माइक्रोसॉफ़्ट करीब 11% यूज़र्स के साथ तीसरे नम्बर पर है।

सारे सर्च इंजन एक खास प्रोग्राम के ज़रिए इंटरनेट पर जाने वाले हर यूज़र की तमाम

■ जमील अख़तर

सरगर्मियाँ रिकार्ड करते हैं और उनकी मदद से अपने यूज़र्स का एक खाका तैयार करते हैं। यह खाका इन यूज़र्स के बारे में अहम मालूमात जमा करता है। जैसे वह मर्द है या औरत? उम्र तक़रीबन कितनी है? उसका रुज़हान दुनिया के किस इलाक़े की तरफ़ ज़्यादा है? उसके शौक और दिलचस्पियाँ क्या हैं? वगैरा।

जब कोई भी शख्स अपने कम्प्यूटर के ज़रिए पहली बार किसी वेबसाइट पर जाता है तो उसी लम्हे सर्च इंजन उसके कम्प्यूटर की मेमोरी में एक खास नम्बर ट्रांसफ़र कर देता है। जो आपका आइडेंटिटी नम्बर कहलाता है और फिर इंटरनेट पर वह जहाँ-जहाँ भी जाता है, उसकी तफ़सील उस नम्बर के साथ रिकार्ड होती चली जाती है। आपको इन सरगर्मियों का रिकार्ड अपने कम्प्यूटर पर Cookies में मिल सकता है।

जब आपके बारे में काफ़ी मालूमात इकट्ठी हो जाती है तो आपकी शख्सियत का खाका बनाने का अमल शुरू हो जाता है। सर्च इंजन इसके लिए एक खास प्रोग्राम की मदद लेता है। यह प्रोग्राम उन सर्वे रिपोर्टों की बुनियाद पर काम करता है जो मुख़्तलिफ़ ऑर्गनाइज़ेशन आमतौर पर कराते रहते हैं। फिर भी यह खाका आख़िरी नहीं होता। आपकी दिलचस्पियों और पसंद में तबदीली के साथ-साथ इसमें भी





तबदीलियाँ होती रहती हैं।

हो सकता है कि आपको यह खयाल आ रहा हो कि सर्च इंजन आपकी मालूमात सेक्योरिटी एजेंसियों के लिए इकट्ठी करते हैं। ऐसा नहीं है और इस बारे में आपको फ़िक्रमंद होने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि खुफ़िया एजेंसियों के पास डेटा इकट्ठा करने का अपना एक अलग सिस्टम मौजूद है। सर्च इंजन आपकी मालूमात आमतौर पर अपने लिए इकट्ठी करता है।

हो सकता है कि आप सोचें कि भला आप उनके किस काम के? तो इसका आसान सा जवाब यह है कि गूगल हो या याहू या फिर कोई और सर्च इंजन, इनकी साइट पर क्लिक करने वाला हर शख्स सोने का अंडा देने वाला एक परिंद है और इन कम्पनियों की आमदनी का सबसे बड़ा ज़रिया इंटरनेट के यूज़र्स हैं।

इंटरनेट पर इस वक़्त अरबों डालर का कारोबार हो रहा है। हर छोटा बड़ा बिज़नेस ऑर्गनाइज़ेशन अपने प्रोडक्ट्स की सेल को बढ़ाने के लिए इंटरनेट की मदद ले रहा है। सर्च इंजन, पर्सनल डिटेल्स को सामने रखते हुए आपको उन चीज़ों के एडवर्टाइज़मेंट दिखाता है जिनमें आप दिलचस्पी लेते हैं। बात सिर्फ़ आपको इंटरनेट साइट्स पर एडवर्टाइज़मेंट दिखाने तक की ही नहीं है बल्कि अक्सर मुल्कों में जब कोई शख्स जैसे ही किसी ख़ास साइट पर क्लिक करता है तो उसका ई-मेल एड्रेस उसी लम्हे कम्पनियों को भेज दिया जाता है और फिर कुछ ही देर बाद कम्पनियों की तरफ़ से उसके ई-मेल पर एडवर्टाइज़मेंट्स आने शुरू हो जाते हैं।

आज के मार्डन दौर में इंटरनेट पर सबसे ज़्यादा बिकने वाली चीज़ इन्सान है। उसका हर शौक, हर ख्वाहिश, हर दिलचस्पी, यहाँ तक कि उसका मर्द या औरत होना, उसकी उम्र, किसी ख़ास इलाके या ग्रुप से ताल्लुक़, यानी उसकी शख्सियत का हर पहलू दिन में कई-कई बार बेचा जाता है। वह भले से कुछ ले या न ले, मगर सर्च इंजन उसकी कीमत ले रहा है।

इंटरनेट पर आपका पीछा करने वाली खुफ़िया आँख किसी और की नहीं बल्कि आपका सौदा करने वाले साहूकार की है। ●



हस्न और ख़ूबसूरती

■ नूरिन आबिद

खुशकी का इलाज

अगर आपके सर में खुशकी है तो महीने में एक बार जैतून के तेल में दो हिस्से तेल और एक हिस्सा नींबू का रस मिलाकर अच्छी तरह सर की मालिश करें। इसके बाद सर धो लें। इससे खुशकी दूर हो जाती है।

चेहरे के बाल

चेहरे से बालों को ख़त्म करना हो तो एक चम्मच मैदा, फिटकरी और गुलाब के रस में लेप बनाकर चेहरे पर लगा कर उसे सूखने पर झाड़ दें। एक महीने तक यही अमल करें बाल सारे कमज़ोर हो कर झड़ जाएंगे।

काले हलक़े

आंखों के आस-पास डार्क सर्किल्स दूर करने का सबसे आसान तरीका यह है कि चाय की पत्ती के इस्तेमाल करने के बाद फ्रिज में रखकर आंखों पर रखने से आंखों के गिर्द काले हलक़े दूर हो जाते हैं।

झाईयां

झाईयां दूर करना हो तो सफ़ेद तिलों को भैंस के दूध में रगड़ कर रात को सोते वक़्त चेहरे पर मल लें। सुबह उठकर किसी अच्छे साबुन से चेहरा धो लें। इस तरह झाईयां दूर हो जाएंगी और चेहरा भी खिल उठेगा।

दो मुहँ के बाल

अगर आपके बालों में दो मुहँ का मसला है तो उसका हल यह है कि चांद की पहली तारीख़ को आप अपने बालों की नोकों को पानी में भिगो दें और

पानी के अंदर कैंची चला कर दो इंच बाल काट दें। हर महीने चांद की पहली तारीख़ को इस तरीके से काटेंगी तो दो तीन महीने में यह प्रॉब्लम हल हो जाएगी।

रंग निखारना

नींबू के छिलके को थोड़े से दूध में भिगो कर चेहरे पर मलिए। कुछ दिनों में ही चेहरे का रंग निखर जाएगा।

नींबू का रस गुलाब के रस में मिलाकर चेहरे पर लगाने से रंगत निखर जाती है।

चेहरे की झुर्रियां

अगर चेहरे पर झुर्रियां हों तो रात को सोने से पहले एक चाय का चम्मच शहद में नींबू का रस मिलाकर चेहरे पर 15 मिनट तक लगाएं, फिर पानी से धो लें। बीस दिन तक यह नुस्खा इस्तेमाल करें। चेहरे की झुर्रियां ख़त्म हो जाएंगी।

दाग-धब्बे

देसी संतरे के छिलके उतार कर सुखाएं। उनको बारीक पीस कर उबटन की तरह इस्तेमाल करें। दाग दूर हो जाएंगे।

बालाई में नींबू के कुछ ड्रॉप्स डाल कर चेहरे पर मलें।

होंवों की सियाही

होंवों की सियाही दूर करने के लिए दूध में थोड़ी सी जाफ़रान (केसर) पीस कर रोज़ लगाएं। टमाटर और खीरा होंवों पर मलने से भी सियाही दूर हो जाती है।

करेले

कहानी

■ डा. निगहत नसीम
सिडनी

अम्मी जी का बस चले तो कमेटी डाल कर
करेले खरीदें और फिर दुनिया से बेखबर होकर
पकाएं... कितनी बार कहा है कि हमें नहीं खाने
यह कड़वे करीले करेले... तौबा... जेबा बाजी
की झुंझलाहट उरुज पर थी। जितनी तेज़ ज़बान
चल रही थी उस से ज्यादा छुरी करेलों पर...
अम्मी जी को करेले पकाने हमेशा से पसंद थे, पहले
तो इतनी चाह से खरीदती... छॉट-छॉट कर
एक-एक करेला एक तरफ़ रखती जाती जैसे कोई
अपनी यादें एक-एक करके समेटता जाता है... यह
वह अकेली सब्ज़ी थी जिस पर अम्मी जी ने कभी
भाव नहीं किया... जितनी महंगी भी मिलती उतने ही
दाम में खरीद लेतीं। इतनी ख़ामोशी से नज़रें झुकाए
ऐसी लगन से पकाया करतीं जैसे कोई इबादत कर रही
हों... अगर कोई उन से कोई बात करने की कोशिश
भी करता तो वह यूँ देखतीं जैसे किसी और ज़बान में
कोई बात कर रहा हो... दूसरे दिन अम्मी जी की वही
हिदायात होती और हम होते।

जेबा बाजी हम तीन बहन भाईयों में सबसे बड़ी
थी। उनके बाद सुहैल भाई थे फिर मैं उन से दो बरस
छोटी। अब्बा जी ज़्यादा तर मुस्कुराने की हद तक घर में
शरीक हुआ करते थे। हम सब अम्मी जी के लेक्चर के
इतनी आदी हो चुके थे कि हमें मालूम होता था कि अब
अम्मी जी को क्या कहना है। इस पर सुहैल भाई अक्सर
अम्मी जी की गोद में सर रख कर उन्हीं की नक़ल भी
उतारा करते तो अम्मी जी हंस दिया करती थीं। जब तक
सुहैल भाई अपनी मैरीन की पढ़ाई के लिए लंदन नहीं गए
थे, छोटे से आरामदेह घर में जिंदगी बहुत ही ख़ूबसूरत
थी। शुरु-शुरु में जब वह गए तो जैसे हम सब ने बहलना
छोड़ दिया था। उदास होने के बहाने ढूँढ़ने लगे थे। लेकिन
अब जैसे एक आदत की तरह उनकी कमी के आदी हो गए
थे। जिंदगी में यादें अपना ठिकाना ढूँढ़ लें तो आसानियाँ
पैदा हो ही जाती हैं। सो हम भी एक बार फिर आसानियों
की तरफ़ लौटने लगे थे।

अम्मी जी को सब याद रहता था कि अब्बा जी को क्या
पसंद है। उनके उठने से लेकर सोने तक के औकात उन्हें
ज़बानी याद थे। उन्हें यह भी मालूम कि आज अब्बा जी क्या
सोचेंगे। हमारी हैरत देखने लाएफ़ होती जब वह कहतीं कि
तुम्हारे अब्बा जी अब यह कहेंगे। हमें अक्सर यही गुमान
रहता था कि इन दोनों में कोई टेलीपैथी ज़रूर है।

उन्हें हमेशा पता रहता था कि सुहैल भाई आज क्या
खाएंगे, क्या पहनेंगे। उनकी हिसाब की किताब कहाँ है तो

इंग्लिश की कापी कहाँ रखकर भूल गए हैं। उनके
दोस्तों की लिस्ट यहाँ तक कि दोस्तों की पसंद भी
अम्मी जी को याद थी। सुहैल भाई दो बरसों से
घर न लौटे थे। आजकल वह लंदन से होते हुए
तसमानिया जा पहुँचे थे। उनसे राब्टा ऐसे ही था
जैसे ख़ज़ाना हाथ लग जाए। गो कि उनके घर न
होने के हम सब आदी हो चुके थे। लेकिन अम्मी
जी का ज़्यादा वक्त उनके कमरे में ही गुज़रता था।

अम्मी जी को यह भी मालूम होता था कि किस
दिन जेबा बाजी युनिवर्सिटी से वापसी पर इतना
थक चुकी होंगी कि उन से रोटियाँ पकाना मुश्किल
हो जाएगी सो वह उनके आने से पहले ही पका
लिया करती थीं। जेबा बाजी की ख़पगी भी उन्हें
आराम करने पर कभी मना न सकी थी सो उन्होंने
भी अम्मी जी को उनके हाल पर छोड़ दिया। अब
रह गई मैं तो कालेज से वापसी पर उन्हीं के साथ
वक्त गुज़र जाता। मुझे अपनी अम्मी जी की जो बात
सबसे ज़्यादा पसंद थी वह उनकी ख़ामोशी थी।
ख़ामोशी उन पर बहुत सूट करती थी। अम्मी जी
हमेशा हल्के रंग पहना करतीं, दोपट्टा सर से लेकर
शानों तक फैलाकर ओढ़ा करतीं। ग़िलाफ़ी आँखें
झुकाए वह धीरे-धीरे मुस्कुराया करतीं। बस अम्मी जी
ख़ामोशी की चादर में बहुत ही मुदब्बिर लगतीं जैसे
कोई फ़्लोस्फ़र हों। जैसे अभी कोई फ़िज़िक्स का
फ़ार्मूला ईजाद कर लेंगी। यह अलग बात है कि जब वह
बोलने और समझाने पर आ जातीं तो उनके सामने
कोई ठहर नहीं सकता था। लेकिन अब्बाजी को उनकी
ख़ामोशी से वहशत होती थी और वह अम्मी जी की
ख़ामोशी को तोड़ने के लिए उन दिनों ख़ूब बोला करते थे
और उस वक्त तक अब्बा जी की आवाज़ आती रहती
जब तक अम्मी जी बोल न पड़ती थीं...

वक्त गुज़रने के साथ-साथ घर भर में तो क्या अब
सबज़ी वाला तक जानता था कि अम्मी जी की ख़ामोशी उस
वक्त सिवा हो जाती है जब वह करेले खरीदा करती हैं।
पर यह भी सच था कि करेले की ऊपरी ख़ूबसूरती से लेकर
उसकी अन्दरूनी खूबियों तक उनकी गहरी नज़र हम
सबको बेज़ार रखती है। अल्लाह के लिए अम्मी जी प्लीज़
कभी कुछ और भी पका लिया करें। जेबा बाजी अपनी
किताबें मेज़ पर रखते हुए कभी-कभी चीख़ पड़तीं। और
अम्मी जी का मुस्कुराता हुआ चेहरा उदास हो जाता। लेकिन
फ़ौरन कहतीं तुम्हारे लिए तुम्हारी पसंद के कोफ़ते बना दिए
हैं। जेबा बाजी का एहतेजाज अपनी जगह सही था क्योंकि

आजकल अम्मी जी कुछ ज्यादा ही करेले पकाने लगी थीं। अब तो करेले पकाते-पकाते आँसू भी गिर जाते थे जिसे वह चुपके से अपने आँचल से पोछ लिया करती थीं। रात को अक्सर नींद से उठ जाया करतीं और दरवाज़े तक कई चक्कर काट आतीं...

आज भी ऐसा ही हुआ था। अम्मी जी ने करेले बहुत शौक से ख़रीदे थे... ज़ेबा बाजी ने बकते-झकते काटे थे। अम्मी जी ने इबादत की तरह ख़ामोशी और लगन से पकाए थे। पर ज़ेबा बाजी ख़फ़ा हो गई थीं। इतनी ज्यादा कि कमरे से बाहर नहीं निकल रही थीं। मैंने सोचा कि अब्बा जी को इस मुक़द्दमे की पैरवी करना ही होगी। मैं यही सोचती हुई उनके कमरे की तरफ़ चल पड़ी। और दरवाज़े पर ही जैसे मेरे क़दम ठहर गए। अम्मी जी रो रही थीं वह कह रही थीं...

मुझे सुहैल बहुत याद आता है जी... वह पिछली बार फ़ोन पर कह रहा था कि वह कभी भी घर आ सकता है। आपको तो पता है उसे सरप्राइज़ देने का कितना शौक है। जाने कब मेरा बेटा घर आ जाए। उसे करेले बहुत पसंद हैं ना जी इसलिए रोज़ पका लेती हूँ। सोचें भला क्या सोचेगा मेरा बेटा कि माँ ने उसकी पसंद के करेले तक न बनाकर रखे... यह लड़कियाँ तो समझती नहीं। आप तो समझते हैं न मेरी बात। अब अम्मी जी यकीनन अपनी ग़िलाफ़ी आँखों में सुख़ डोरों के साथ अब्बा जी को ताईद में देख रही होंगी और साथ-साथ अपने नीले सूती दुपट्टे से अपनी आँखें भी बेदर्दी से साफ़ करती जा रही होंगी... मुझे यूँ लगा जैसे मेरी माँ के आँसू मेरी आँखों में रहने आ गए हों।

अम्मी जी अक्सर कहा करती थीं कि माँ की कुछ बातें माँ के जाने के बाद ही समझ आती हैं। लेकिन अम्मी जी हम तो आपकी कई बातें आपकी ज़िंदगी में भी समझ न पाए। ●

ऊँटों का मुक़ाबला



■ शहीद मुतहहरी

मुसलमान घुड़दौड़, तीर अंदाजी और ऊँटों की दौड़ वगैरह के मुक़ाबलों में काफ़ी दिलचस्पी लेते थे क्योंकि इस्लाम ने ऐसे कामों पर बहुत ज़ोर दिया है और इन्हें आम कर दिया है जिनका जानना और प्रेक्टिस करना फ़ौजियों के लिए ज़रूरी है। इसके अलावा खुद रसूल ख़ुदा^ﷺ ने भी ऐसे मुक़ाबलों में हिस्सा लिया था। यह मुसलमानों ख़ासकर नौजवानों को जंगी हुनर सीखने का शौक दिलाने के लिए बेहतरीन ज़रिया था। जब तक यह रस्म चलती रही और दीनी रहबर मुसलमानों को अमली तौर पर ऐसी चीज़ों का शौक दिलाते रहे उस वक़्त तक इस्लामी समाज में बहादुरी और जाँनिसारी भी ख़ूब बाकी रही। रसूल^ﷺ कभी घोड़े और कभी ऊँट पर सवार होते और बढ़-बढ़ कर मुक़ाबला करने वालों का मुक़ाबला करते थे।

रसूल इस्लाम^ﷺ के पास एक ऊँट था जो दौड़ में मशहूर था। जिस ऊँट से भी मुक़ाबला होता था वह बाजी ले जाता था। आहिस्ता-आहिस्ता आम लोगों में यह ख़याल पैदा हो गया कि चूँकि यह ऊँट रसूल^ﷺ का है इसी वजह से आगे निकल जाता है और अब दुनिया में ऐसा ऊँट पैदा ही नहीं हो सकता जो इसका मुक़ाबला कर सके।

यहाँ तक कि एक अरब अपने ऊँट के साथ मदीना आया और उसने दावा किया कि वह रसूल इस्लाम^ﷺ के ऊँट से

मुक़ाबले के लिए तैयार है। रसूल^ﷺ के सहाबी बड़े इत्मिनान के साथ उस दिलकश मुक़ाबले को देखने के लिए शहर से बाहर निकल पड़े। रसूल ख़ुदा^ﷺ भी चल दिए और तय जगह पर दोनों ऊँटों को तमाशाईयों की तरफ़ दौड़ाया गया। तमाशाईयों में अजीबो गरीब जोश पैदा हो गया था। लेकिन लोगों की उम्मीद के ख़िलाफ़ उस अरब का ऊँट रसूल^ﷺ के ऊँट से आगे निकल गया।

मुसलमानों का वह गुप जो पैग़म्बर^ﷺ के ऊँट के बारे में एक ख़ास सोच बनाए हुए था इस वाक़िए से बहुत रंजीदा हुआ क्योंकि यह उसकी उम्मीद के बिल्कुल उलटा हो गया था। उनके चहरों के रंग उतर गए। रसूल ख़ुदा^ﷺ ने उन लोगों से कहा,

“यह अफ़सोस करने की जगह नहीं। चूँकि मेरा ऊँट सारे ऊँटों के मुक़ाबले में आगे निकल जाता था इसलिए वह मगरूर हो गया था। उसने सोच लिया था कि मुझ से कोई बाजी ले जाने वाला नहीं है लेकिन ख़ुदा की सुन्नत यह है कि हर ताक़तवर के लिए उस से बड़ा और हर ऊँचाई के लिए एक गिरावट भी है और हर गुरुर करने वाले का गुरुर ख़ाक में मिल जाता है।”

रसूल ख़ुदा^ﷺ ने इस तरह की नसीहत के ज़रिए उन लोगों को उनकी ग़लती का एहसास करा दिया कि रसूल^ﷺ का ऊँट कभी हार नहीं सकता।





सेहत

■ डॉ. पैकर जाफरी

खुदा के नाज़िल किए हुए सारे अहकाम हमारी रूहानी और जिस्मानी सेहत को बाकी रखने के लिए हैं। कुरआन में है, “खाओ, पियो और इसराफ़ (फ़ुज़ूल खर्ची) न करो” अगर इस हुक्म पर इन्सान अमल कर ले तो उम्र भर बीमार न हो। खाने पीने में बैलेंस, जिस्म को मज़बूत करता है, रंगत साफ़ करता है, रूहानी और जिस्मानी ताकतों को ज़्यादा करता है, ज़रूरत के वक़्त पानी का इस्तेमाल हाज़मे को सही रखता है और रूह व दिल को सुकून पहुँचाता है।

इन्सान का सबसे बड़ा सरमाया सेहत और तन्दुस्ती है। इस्लाम हर तरह की बीमारी से जंग

करता है इसीलिए एहतियात से काम लेने की हिदायत करता है। इसके बावजूद अगर कोई बीमार हो जाए तो उसने इलाज का हुक्म भी दिया है। इस्लाम ने सेहत व सलामती की वजह से इजाज़त दे दी है कि अगर ज़रूरी हो तो शरीर वाजिबत को छोड़ा भी जा सकता है। इसीलिए बीमारी में, सफ़र में और बुढ़ापे के ज़माने में दीन ने कुछ ख़ास हुक्म बताए हैं जैसे अगर नमाज़ के लिए पानी नुक़सानदेह हो तो गुस्ल व वजू के बजाए तयम्मूम कर लो या सेहत के लिए नुक़सानदेह हो तो रोज़ा न रखो। यह सब इसलिए कि सेहत व तंदुरुस्ती इन्सान का बहुत कीमती सरमाया है। वह शख्स बड़ा खुश नसीब है जिसके

पास तंदुरुस्ती की नेमत है। इसके बिना आदमी कुछ नहीं कर सकता। एज़ुकेशन तंदुरुस्ती चाहती है, मेहनत व मज़दूरी सेहत चाहती है, राहे खुदा में जेहाद तंदुरुस्ती चाहता है यहाँ तक कि जिस्मानी सेहत को दीन की सलामती के तौर पर बताया गया है। इसमें कोई शक नहीं कि सेहत व तंदुरुस्ती एक बहुत कीमती दौलत है और बेमिसाल नेमत है। यह जोश व ज़ब्बा, यह हिम्मत व हौसला, यह बलवला सब सेहत व सलामती की वजह से है। इसी की वजह से इबादत व इताअत और इसी की वजह से रोज़ी-रोटी यानी हर चीज़ के लिए इसी की ज़रूरत है। लेकिन इन्सान को इसकी अहमियत का अंदाज़ा नहीं है।

अरबी की मिसाल है “चीज़ें अपने अपोज़िट से पहचानी जाती हैं” ग़रीबी के बाद अमीरी की क़द्र, रंज व गुम के बाद ऐशो आराम की लज़ज़त, रात के बाद दिन की अहमियत और बीमारी के बाद तंदुरुस्ती की नेमत का एहसास होता है।

खुदा ने किसी चीज़ को बेकार पैदा नहीं किया है। अगर इन्सान बीमार होता है तो इसमें भी हज़ार हिक्मतें और सैकड़ों फ़ाएदे मौजूद हैं। बीमारियाँ भी अपने रिज़ल्ट्स और असर के लिहाज़ से बे फ़ाएदा नहीं हैं।

बीमारियों के बारे में जो हिक्मतें इमाम सज्जाद^र की दुआओं में बताई गई हैं वह इसके अलावा और कहीं नज़र नहीं आएंगी। जब इमाम^र को कोई बीमारी होती थी तो आप फ़रमाते थे, “ऐ मेरे माबूद तारीफ़ तेरे ही लिए है बदन की इस सेहत व सलामती के लिए जिसमें मैं हमेशा जिंदगी बसर करता रहा और तेरे ही लिए तारीफ़ है इस मर्ज़ पर जो अब मेरे जिस्म में तेरे हुक्म से पैदा हुआ है। ऐ मेरे माबूद! नहीं मालूम कि इन दोनों हालतों में कौन सी हालत पर तेरा शुक्रिया अदा किया जाए। इन दोनों हालतों में कौन सा वक़्त तेरी हम्द व तारीफ़ के लिए ज़्यादा लाएक है। आया सेहत व तंदुरुस्ती के लिए जिसमें तूने पाकीज़ा रोज़ी को मेरे लिए खुशगवार बनाया और अपनी रेज़ा व खुशनूदी और फ़ज़ल व एहसान के तलब की उमंग मेरे दिल में पैदा कर दी और इसके साथ अपनी इताअत की तौफ़ीक़ देकर उस पर





एक शहजादा ऐसा भी

चलने की कुव्वत बख्शी या मेरी बीमारी का ज़माना जिसके ज़रिए मेरे गुनाहों को दूर किया और तरह-तरह की नेमतों के तोहफे अता फरमाए ताकि उन गुनाहों का बोझ हलका कर दे जो मेरी पुश्त को गराँबार बनाए हुए हैं और उन बुराईयों से पाक कर दे जिनमें मैं डूबा हुआ हूँ और तौबा करने पर मुतनब्बह कर दे और पिछली तंदुरुस्ती की नेमत को याद दिलाकर कुफ़राने नेमत के गुनाहों को खत्म कर दे और इस बीमारी के बीच आमाल लिखने वाले मेरे लिए वह पाकीज़ा आमाल भी लिखते रहें जिनका न दिल में कभी तसव्वुर था और न किसी हिस्से ने उसकी तकलीफ़ बर्दाश्त की। यह सिर्फ़ तेरा फ़ज़ल व एहसान था जो मुझ पर हुआ। ऐ मेरे अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद^{१०} और उनकी आल^{१०} पर। और जो तूने मेरे लिए पसंद फ़रमाया है वही मेरी नज़रों में भी पसंदीदा बना दे और जो मुसीबत मुझ पर डाल रखी है उसको सहल व आसान कर दे।”

इमाम^{१०} फ़रमाते हैं, “दो नेमतें ऐसी हैं जिनकी इन्सान कद्र नहीं करता और अगर करता भी है तो उनके चले जाने के बाद:- एक अमन और दूसरे आफ़ियत। इन दो नेमतों को भूल जाना एक गुनाह है और बीमारी इस नेमत की तरफ़ ध्यान दिलाने का नाम है और यही बीमारी कुफ़राने नेमत के बजाए शुक्रगुज़ारी का ज़ब्जा पैदा करती है।” (सहीफ़-ए-कामेला)

हज़रत अली^{१०} फ़रमाते हैं, जिस्म की छः हालतें हैं: (1) सेहत (2) मर्ज़ (3) मौत (4) ज़िंदगी (5) नींद (6) जागना।

इसी तरह रूह की भी छः हालतें हैं: (1) रूह की सेहत यकीन है (2) रूह का मर्ज़ शक है (3) रूह की मौत जहल है (4) रूह की ज़िंदगी इल्म है (5) रूह की नींद ग़ुफ़लत है (6) रूह की बेदारी हिफ़ाज़त है। ●

ह्युमन हिस्ट्री ऐसे किस्सों से भरी पड़ी है जिसमें अगर बाप खुदा पर यकीन रखने वाला है तो बेटा खुदा का नाफ़रमान जैसे हज़रत आदम^{१०} और उनका बेटा काबील। इसी तरह हज़रत नूह^{१०} और उनका बेटा।

साथ ही यह भी कि यज़ीद दुश्मने खुदा मगर उसका बेटा नेक और सालेह।

इसी तरह हिस्ट्री में एक और सच्चा और सबक देने वाला वाकिआ भी है।

अब्बासी ख़लीफ़ा हारुन रशीद के एक लड़के का नाम कासिम था जिसका ज़्यादातर वक़्त क़ब्रिस्तान में गुज़रता था। उसे दुनिया से कोई दिलचस्पी नहीं थी और उसका उठना-बैठना ग़रीबों, मिस्कीनों और यतीमों के साथ रहता था। एक दिन हारुन दरबार में बैठा हुआ था कि इतने में कासिम आ गया जिस पर हारुन का वज़ीर जाफ़र बरमकी हंसने लगा! हारुन ने पूछा, “क्यों हंस रहे हो?” बरमकी ने कहा, “हुज़ूर! इस लड़के की आदतें आप से बिल्कुल नहीं मिलतीं। यह तो हमेशा ग़रीबों के साथ रहता है और अपना सारा वक़्त क़ब्रिस्तान में गुज़ार देता है।” हारुन ने कहा, “शायद इसकी वजह यह हो कि हम ने हुकूमत का कोई काम इसको नहीं सौंपा है।” इसके बाद हारुन ने कासिम को नसीहत की और कहा, “मैं मिस्त्र की हुकूमत तुम्हें देना चाहता हूँ और अगर तुम इबादत में भी वक़्त गुज़ारना चाहते हो तो एक अच्छा वज़ीर भी दे दूंगा।” लेकिन कासिम ने कुबूल नहीं किया। फिर भी हारुन ने मिस्त्र की हुकूमत उसके नाम लिख ही दी। लोगों ने मुबारकबाद पेश की और तय हुआ कि दूसरे दिन कासिम मिस्त्र चला जाए लेकिन कासिम रात ही में फ़रार हो गया। हारुन उसके पाँव के निशान से नहर तक तो पहुँचा लेकिन उसके बाद अंदाज़ा नहीं लगा सका कि कासिम किधर गया है।

उधर कासिम कश्ती में सवार होकर बसरा चला गया था।

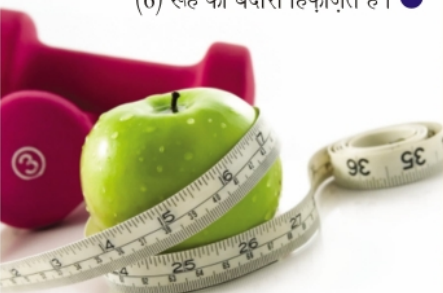
अब्दुल्लाह बसरी कहते हैं, “मेरे घर की दीवार गिर गई थी इसलिए मैं एक

मज़दूर की तलाश में निकला था। एक नौजवान को देखा कि बैठा हुआ कुरआन पढ़ रहा है और फावड़ा और बोरिया उसके पास रखा हुआ है। मैंने उस से कहा कि मज़दूरी करोगे? उसने पूछा कि मज़दूरी क्या दोगे? मैंने कहा कि एक दिरहम और उसने कुबूल कर लिया और सुबह से लेकर शाम तक दो आदमियों के बराबर काम किया। मैंने उसे मज़दूरी से ज़्यादा देना चाहा लेकिन उसने कुबूल नहीं किया। एक दिरहम लिया और चला गया।

दूसरे दिन उसकी तलाश में गया और लोगों से पूछा तो बताया गया वह जवान सिर्फ़ हफ़्ते के दिन काम करता है और बाकी दिनों में मशगूल रहता है।

हफ़्ते के दिन फिर उसके पास गया, वह आया, काम किया, मैंने भी उसकी मज़दूरी दी और वह चला गया। दूसरे हफ़्ते मैं फिर उसके पास गया लेकिन वह नज़र नहीं आया। पता लगाया तो पता चला कि तीन दिन से मरीज़ है और एक खंडर में रहता है।

मैं उसके पास गया और उस से कहा, “मैं अब्दुल्लाह बसरी हूँ।” उसने जवाब दिया, “हाँ! पहचानता हूँ।” मैंने पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?” उसने कहा, “हारुन रशीद का बेटा, कासिम।” मैं काँप कर रह गया। उसने कहा, “मेरी मौत क़रीब आ चुकी है, जब मैं मर जाऊँ तो यह बेलचा और बोरिया उसको दे देना जो मेरी क़ब्र खोदे और कुरआन भी उसको दे देना जो मेरे लिए पढ़ सके और इस अंगूठी को बग़दाद ले जाना। वहाँ पीर के दिन एक आम जलसा होता है, उस जलसे में इसे मेरे बाप को देना और कहना कि इसे अपने ही माल-दौलत में शामिल कर लीजिए, क़यामत में आप ही इसका जवाब दीजिएगा, यह कासिम ने भेजा है।” अब्दुल्लाह बसरी का बयान है, “कासिम ने उठना चाहा लेकिन न उठ सका, दोबारा कोशिश की लेकिन नाकाम रहा।” उसने कहा, “अब्दुल्लाह! मुझे सहारा देकर उठओ क्योंकि मेरे मौला हज़रत अली^{१०} आए हैं।” मैंने सहारा देकर कासिम को उठया और वह इस दुनिया से रुख़सत हो गया। ●





नफरत

■ फीरोज़ जबी आजमी

इस दुनिया में तरह-तरह के लोग रहते हैं। कोई निहायत खूबसूरत, कोई बदशक्ल, कोई बड़ा आफ़ीसर, कोई बेरोज़गार, कोई अमीर तो कोई ग़रीब, किसी के पास बेशुमार दौलत तो कोई पैसे-पैसे का मोहताज... और नफरत इसी भेदभाव के बीच पनपती है।

इन्सान की ख्वाहिश और ज़रूरतें उसके रुतबे और हैसियत की वजह से बढ़ती जाती हैं। यहाँ तक कि इन्सान ज़मीन के बजाए चाँद पर बसने की ख्वाहिश अपने दिल में रखे बैठा हुआ है।

इधर दुनिया में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो फ़कीरी की जिंदगी गुज़ार रहे हैं। उनके पास इतना पैसा भी नहीं है कि वह पेट भर के रोटी भी खा सकें।

ऐसे हालात में इन्सान अपनी फ़ितरत में झल्लाहट और चिड़चिड़ापन महसूस करता है, उसकी सोच में एक तूफ़ान उठा होता है और वह दुनिया की उन सारी चीज़ों को हासिल करना चाहता है जो उसके पास नहीं हैं।

अब अगर वह इन चीज़ों को आसानी से नहीं हासिल कर पाता तो उसके दिमाग़ में इन चीज़ों को ग़लत तरीक़े से हासिल करने के ख़याल आने लगते हैं। जैसे फ़्रॉड, चोरी, लूटमार और रिश्वत वगैरा।

अगर इन तरीकों से भी उसे कामयाबी नहीं मिलती और ख्वाहिश पूरी नहीं होती तो फिर ऐसे हालात में उसके दिल में अमीर लोगों के लिए

नफरत के शोले भड़कने लगते हैं।

यह नफरत के शोले इतने ख़तरनाक होते हैं कि इन्सान इन्सानियत को छोड़कर दरिन्दा बन जाता है और वह क़त्ल, ख़ूरेजी, चोरी, डाका, लड़ाई-झगड़े पर उतर आता है। अगर सच पूछिए तो इस नफरत की असली वजह यही नाइंसाफी है।

ज़्यादातर नौजवान नौकरी के लिए इंटरव्यू देते हैं। उनका इंटरव्यू काफ़ी अच्छा होता है। उन्हें पूरी उम्मीद होती है कि इस बार उन्हें नौकरी मिल जाएगी लेकिन सोर्सफुल लोग उस नौकरी को हथिया लेते हैं और बेचारे मेहनती ग़रीब बच्चे अपना सा मुँह लेकर रह जाते हैं।

यह नाइंसाफी इन्सान के ज़हन में ज़बरदस्त नफरत उभारती है। वह समाज के नाइंसाफ़ लोगों का बागी बन जाता है और जब उसकी बगावत कामयाब नहीं होती तो यह नफरत की आग़ खुद उसे तबाह व बर्बाद करके रख देती है।

कभी-कभी बेवजह जुल्म व सितम से भी दिल व दिमाग़ में ज़बरदस्त नफरत पैदा हो जाती है।

अभी भी बहुत सी जगहों पर ज़मीनदार या ऊँची ज़ात के लोग छोटी ज़ात वालों पर जुल्म करना अपना पसंदीदा शौक़ समझते हैं। बेचारे ग़रीब अपने ऊपर होते हुए जुल्म को देख कर भी खून का घूँट पी कर बर्दाश्त करते हैं।

मगर नफरत की आग़ उन ग़रीबों के दिल में अमीरों के लिए भड़कती रहती है। उनका दिल हर वक़्त यही कहता है कि बस किसी तरह से उनके

जुल्म का बदला ले लिया जाए। ऐसे हालात में वह हर पल नफरत की आग़ में जलते रहते हैं। और एक दिन यह नफरत की आग़ उन्हें जुल्म का बदला लेने के लिए मजबूर कर देती है।

नफरत है क्या?

नफरत एक भड़कता हुआ आग़ का शोला है। यह आग़ इतनी ख़तरनाक होती है कि जिसको बुझाना आसान काम नहीं है। इस आग़ को बुझाने के लिए मोहब्बत की ज़रूरत होती है जो आहिस्ता-आहिस्ता नफरत के शोलों को बुझाने का काम करती है।

अक्सर किसी की बातें दिल को इतनी बुरी लगती हैं कि इन्सान उस से नफरत करने पर मजबूर हो जाता है।

कभी-कभी यह नफरत की आग़ इतनी तेज़ हो जाती है कि उसके भड़कते हुए शोले इन्सान के जिस्म के हर हिस्से को झुल्सा कर रख देते हैं और इन्सान जीते जी एक ढाँचा बनकर रह जाता है।

नफरत की आग़ इन्सान ही को नहीं बल्कि अनगिनत कुन्बों, शहरों और मुल्कों को तबाह व बर्बाद करके रख देती है।

नफरत गुस्से को पैदा करती है और गुस्सा जिंदगी को तबाह कर देता है। यहाँ तक कि नफरत घर, ख़ानदान, नेक आमाल, दीन व ईमान तक को जलाकर राख़ कर देती है।

हज़रत अली^र का क़ौल है, “गुस्सा बेवकूफी से शुरु होता है और शर्मिन्दगी पर ख़त्म होता है।”

कभी-कभी यह नफरत हसद और जलन में तबदील हो जाती है। इन्सान जिस शख्स से हसद करता है उसे खुद से कमतर देखना चाहता है। उसके दिल में बार-बार यह ख़याल आता है कि काश! कुछ ऐसा हो जाए कि उसकी बड़ाई का मरतबा उस से छिन जाए और लोग उसे हकीर निगाहों से देखने लगें। यह हसद की आग़ बहुत भयानक होती है।

हसद करने वाला एक दिन खुद अपनी आग़ में झुलस कर राख़ हो जाता है।

नफरत से गुस्सा पैदा होता है और इस नफरत का इन्सान के जिस्म पर ज़बरदस्त असर पड़ता है। जब इन्सान गुस्से में होता है तो उसके खून में जोश आता है और शैतान भी उस पर पूरी तरह कंट्रोल कर लेता है।

एक बार हज़रत नूह^र ने शैतान से सवाल किया कि तू कब इन्सान पर आसानी से कंट्रोल कर पाता है? शैतान ने जवाब दिया कि उस वक़्त जब इन्सान गुस्से में होता है।

आज इन्सान नफरत की आग़ में इतना अंधा हो गया है कि वह भूल बैठा है कि यह आग़ एक दिन खुद उसे जलाकर राख़ कर सकती है।

नफरत दिल में भड़कने वाला वह आग़ का

HATE

शोला है जो दूसरों को कम, खुद को ज्यादा नुकसान पहुँचाता है।

अगर समाज पर नज़र डाली जाए तो देखने को मिलेगा कि इस नफ़रत की आग ने सारे समाज को तहस-नहस करके रख दिया है।

बहुत से घरों को इसी नफ़रत की आग ने देखते-देखते तबाह व बर्बाद कर दिया है।

इन्सान की बुरी आदतों में नफ़रत और गुस्सा बहुत ख़तरनाक आदतें हैं। जब इन्सान की फ़ितरत पर नफ़रत और गुस्सा छा जाता है तो अक्ल ग़ायब हो जाती है। जिसकी वजह से इन्सान बहुत से गुनाहों का शिकार हो जाता है। यह नफ़रत अक्ल व रूह को ही नहीं बल्कि जिस्म को भी नुक़सान पहुँचाती है।

गुस्से और नफ़रत की हालत में खून दिल और रगों में तेज़ी से हरकत करता है और खून में गर्मी बढ़ जाती है। यही वजह है कि गुस्से में इन्सान का चेहरा लाल पड़ जाता है। हाथ पैर बल्कि जिस्म के सारे हिस्से काँपने लगते हैं और ऐसा इन्सान जिस्मानी और रूहानी दोनों तरह की बीमारियों का शिकार हो जाता है।

नफ़रत से बहुत सी बीमारियाँ इन्सान की जिस्म में जन्म लेती हैं जैसे:

Anxiety: बेचैनी, उलझन

Insomnia: नींद न आना

Hyper-Tension: हॉयपर-टेंशन

Cardiovascular Diseases:

हार्ट-प्राब्लम

Schizophrenia:

जिस्मानी-दिमागी तनाव

Depression: डिप्रेशन

Suicidal Tendency: स्युसाइडल टेंडेंसी

Anxiety: इसमें इन्सान को उलझन और बेचैनी होती है। पूरे जिस्म में एक हार्मोन निकलता है जिसे Adrenaline Hormone कहते हैं। इसका असर जिस्म के बहुत से हिस्सों पर पड़ता है। इन्सान जिस्म में झनझनाहट महसूस करता है, जिस्म बेजान सा महसूस होता है और गैस की शिकायत भी होती है। उल्टी महसूस होती है लेकिन होती नहीं है। नींद नहीं आती है और बहुत चिड़चिड़ापन महसूस होता है। नींद न आने की शिकायत भी कभी-कभी होती है।

Insomnia: यानी नींद न आना। यह बीमारी भी नफ़रत ही की वजह से पैदा होती है। Anxiety और Insomnia में बहुत थोड़ा फ़र्क है। दोनों बीमारियों में इन्सान की एक सी कन्डीशन होती है। इस बीमारी ही में झल्लाहट महसूस होती है, नींद नहीं आती है और सारी रात तारे गिनते गुज़र जाती है।

Hyper-Tention: नफ़रत की वजह से इन्सान Hyper-Tention का शिकार हो जाता है।

नफ़रत की रफ़्तार कुछ इतनी तेज़ होती है कि ऐसी हालत में ब्लड प्रेशर हाई हो जाता है, चेहरा लाल, सर भारी और सर में अजीब तरह का दर्द होता है।

Cardiovascular Diseases: कभी-कभी नफ़रत के शोले इन्सान को हार्ट प्राब्लम का शिकार बना देते हैं क्योंकि नफ़रत की ज़्यादाती का असर सीधा दिल पर पड़ता है। नफ़रत में दिल की धड़कन तेज़ हो जाती है। कभी-कभी हार्ट अटैक की नौबत भी आ जाती है।

Schizophrenia: जिस्मानी और दिमागी तनाव, यह एक तरह की दिमागी बीमारी है। इन्सान की कन्डीशन इस बीमारी में दो तरह की हो सकती है। वह या तो बहुत खुश रहता है या बहुत दुखी। दिमागी तनाव की वजह से बुझा-बुझा सा रहता है। कभी-कभी कानों में अजीब सी आवाज़ें सुनाई देती हैं और उसे किसी तरह का अक्स दिखाई देता है। सोच बदल जाती है। वह कभी-कभी अपने आपको राजा महसूस करता है और अक्सर ऐसा महसूस होता है कि कोई उसे मारना चाह रहा है। ऐसी हालत में वह अपने को कमज़ोर महसूस करता है। उसे ऐसा लगता है कि उसकी काम करने की ताक़त कम होती जा रही है।

Depression: नफ़रत से जिस्म में पनपने वाली एक ख़तरनाक बीमारी है। घरेलू हालात इन्सान को डिप्रेशन का शिकार बना देते हैं। किसी चीज़ को पाने की ख्वाहिश को अगर इन्सान लाख कोशिश के बावजूद भी न पा सके तो उसे सख़्त अफ़सोस होता है और ऐसे हालात में उसे अपने आप से भी नफ़रत हो जाती है और वह सारा दिन बिस्तर पर पड़ा सोचता रहता है कि मेरी कैसी तक़दीर है कि मेरे दोस्तों और मेरे मिलने वालों को खुदा ने सब कुछ दिया और मैं लाख कोशिश के बाद भी कुछ न पा सका।

इस तरह वह अपने और दूसरों के बीच तरक्की, इज़्ज़त, शोहरत, रूतबे वग़ैरा को लेकर सारा दिन सोचता रहता है। किसी से बोलने का दिल नहीं करता, अकेले पड़े रहना अच्छा लगता है और देखते-देखते इन्सान मेंटली डिस्टर्ब होने

लगता है।

यह बीमारी जिस्मानी और दिमागी तनाव की वजह से होती है। एडजेस्टमेंट प्राब्लम, शिडयूल में गड़बड़ी, हालात का पेचीदा होना, ज़रूरतों का पूरा न होना, यह सब परेशानियाँ डिप्रेशन की वजह हैं।

यह तमाम बीमारियाँ जिस्म में नफ़रत की वजह से पैदा होती हैं। नफ़रत इन्सान की तन्दुरुस्ती को बर्बाद करते हुए दीन व दुनिया दोनों से दूर कर देती है।

Suicidal Tendency: नफ़रत स्युसाइडल टेंडेंसी की तरफ़ भी ले जाती है। ज़्यादातर लोगों में देखा गया है कि बच्चे पूरी तरह मेहनत से पढ़ते हैं मगर मार्क्स अच्छे नहीं आते। जिसका अफ़सोस उन बच्चों को खुद ही बहुत होता है। लेकिन कुछ पैरेंट्स को बच्चों की इस हालत का क़तई एहसास नहीं होता। वह उस से यही कहते हैं कि तुमने ठीक से पढ़ा नहीं और पढ़ाई को खेल समझा, इसीलिए मार्क्स अच्छे नहीं आए और फ़ेल हो गए। जबकि बच्चे ने मेहनत भी की, उसके बाद भी उस पर एतेराज़ पर एतेराज़ किए जा रहे हैं। इस तरह बच्चे के दिल व दिमाग़ में खुद से और अपने वालदेन से नफ़रत पैदा हो जाती है और यही नफ़रत की आग उसको स्युसाइडल टेंडेंसी की तरफ़ ले जाती है।

इस कन्डीशन में इन्सान नफ़रत की आग में सुलगता रहता है और फिर एक दिन ज़िंदगी से बेज़ार हो जाता है। यहाँ तक कि खुद अपनी ज़िंदगी से मोहब्बत करने का एहसास ख़त्म हो जाता है।

इस बीमारी से बचने के लिए इन्सान को नफ़रत के बजाए मोहब्बत के रास्ते पर चलना चाहिए। यह सोचना चाहिए कि अल्लाह ने ज़िंदगी बख़्शी है और वही इसका मालिक और हमारे हाथों में यह ज़िंदगी अल्लाह की एक पाकीज़ा अमानत है और इस अमानत को अच्छी तरह संभाल कर अल्लाह के हवाले कर देना ही हमारी कामयाबी है। ●



अच्छी-अच्छी बातें

दुश्मनी बुनियाद की मत डालिए

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराजी

हम क्यों अपनी बहस में किसी नतीजे तक नहीं पहुँच पाते?

नीचे लिखी हुई बातों वह हैं जिन्हें अपनी बहस व गुप्तगू के दौरान हम ने अक्सर देखा है:

1- हम ने अक्सर देखा है कि घंटों किसी सब्जेक्ट पर बातचीत करने के बावजूद हम किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाते जबकि हमारे मुताबिक हमारी बात बिल्कुल सही थी लेकिन जिस से हम बात कर रहे थे वह हमारी बात को कुबूल करने के लिए ज़रा सा भी राजी नहीं था।

2- अक्सर देखा जाता है कि एक लम्बी चौड़ी बातचीत के बाद जिस से बात की जा रही है वह अपने नज़रिए में और सख्त हो जाता है।

3- अक्सर ऐसा भी होता है कि एक लम्बी बातचीत के बाद हमारे अंदर यह एहसास पैदा होने लगता है कि अब हमारे दिल में सामने वाले के लिए पहली सी मोहब्बत और खुलूस नहीं रह गया है बल्कि इसके बजाए हमारे दिल में उसके लिए एक बे वजह की नफरत पैदा हो गई है।

4- मज़हबी व सियासी मुनाज़रों की तारीख़ इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि किसी अक़ीदे या मज़हब को साबित करने में लगाई जाने वाली ताक़तों और इस सिलसिले में सैकड़ों कोशिशों और बड़ी-बड़ी लागत से लिखी जाने वाली किताबों से कोई ख़ास फ़ायदा नहीं होता है।

5- यह भी आमतौर पर होता रहता है कि प्यार मोहब्बत के माहोल में शुरू होने वाले मुनाज़रे और डॉयलाग्स आपसी रंजिशों, ग़िले शिकवों और एक-दूसरे को नुक़सान पहुँचाने पर ख़त्म होते हैं जबकि आपसी रंजिश और इल्मी डॉयलाग्स में दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है और न ही इन में से किसी एक को दूसरे के ज़रिए साबित किया जा सकता है।

6- साथ ही यह भी अक्सर देखा जाता है कि सामने वाले के पास हमारी उसूली बातों के सामने

कोई जवाब नहीं है और वह ला जवाब होकर ख़ामोश हो गया है लेकिन इसके बावजूद हमारी बात मानने को तैयार नहीं होता।

यह सब वह हकीकतें हैं जिन से इल्मी, समाजी, सियासी डॉयलाग्स करने वाले लोग आमतौर पर टकराते रहते हैं।

ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है कि इस तरह की बहसों और मुनाज़रों हकीकत को तलाश करने के लिए नहीं होते बल्कि सामने वाले को अपने कंट्रोल में करने और उसे हराने के लिए होते हैं। ज़ाहिरी तौर पर इन दोनों का मक़सद एक ही है लेकिन सच्ची बात यह है कि इनमें एक बहुत बड़ा फ़र्क़ पाया जाता है।

हकीकत की तलाश का मतलब यह होता है कि जिसके पास न हो उसको वह चीज़ देना, वह भी इस तरह कि उस से कुछ लिया न जाए यानी यह कि उसको जानकारीयाँ दी जाएँ और उसको समझाने की नियत से कुछ बताया जाए न कि उसकी शख़्सियत और इज़्ज़त पर हमला किया जाए। लेकिन अलफ़ाज़ की इस जंग और एक दूसरे पर लफ़्ज़ी हमले करने का मतलब यह होता है कि सामने वाले की शख़्सियत और इज़्ज़त को ख़ाक़ में मिला दिया जाए और उसके ज़म्बाव व एहसासात को ठेस पहुँचाई जाये।

इसलिए अगर सामने वाला इस मौक़े पर ज़िद्दी अंदाज़ अपना ले तो यह कोई ताज़ुब की बात नहीं। इसी लिए एक्सपर्ट्स कहते हैं:

1- चीख़ कर चिल्ला कर यानी अपनी ज़बान की तेज़ी और तर्रारी से किसी को ख़ामोश तो किया जा सकता है लेकिन इस तरह सामने वाले के दिल को किसी भी कीमत पर नहीं जीता जा सकता।

2- जिहालत को उसूली बातों से कभी नहीं हराया जा सकता।

3- किसी भी सब्जेक्ट पर कामयाब होने का बेहतरीन रास्ता बहस से दूरी है।

उसूली तौर पर वह बहसों जो कशमकश, झड़पों, हमलों और डिफेंस वाली होती हैं उनमें बहुत कम ऐसा होता है कि सामने वाले शख्स के दिल को जीत सकें या उसको मुतमइन कर सकें और अगर हम देखते हैं कि सामने वाला शख्स अपनी बात पर अड़ा हुआ है तो इसकी वजह सिर्फ़ और सिर्फ़ यह है कि वह अपने ज़मीर और अपनी इज़्ज़त को ख़तरे में देखता है वरना किसी चीज़ को सीखने, जानने और समझने में अपने नज़रिए पर अड़े रहना एक बेकार सी बात है।

वह बहसों जिनकी वजह से सामने वाला भड़क उठता है और अपनी बात पर अड़ जाता है वह इन बातों में से किसी एक बुनियाद पर सामने आती हैं:

1- वह बहसों जिनमें सामने वाले या उसकी सोच की तौहीन शामिल हो जैसे यह कहा जाए कि आप बहुत ग़लत बात कर रहे हैं, आपका यह काम समझदारी नहीं है, कोई भी आपकी बात से एग्री नहीं हो सकता, आप से मुझे ऐसी बातों की उम्मीद नहीं थी, बहुत ताज़ुब की बात है कि आप...।

2- वह बहसों जो ऐसे किसी तीसरे शख्स के सामने हों जिसके मौजूद होने की वजह से सामने वाला खुलकर अपनी बात न कह सके या उसको इस तीसरे शख्स का किसी वजह से लेहाज़ करना पड़े।

3- वह बहसों जिनको इस तरह आगे बढ़ाया जाए जैसे पढ़ाया जा रहा हो और सामने वाला खुद को शार्गिद न होते हुए भी शार्गिद समझे या कम से कम वह खुद इस हालत का एहसास कर रहा हो और इस हालत से बाहर निकल जाना चाहता हो।

4- वह बहसों जिनमें अगर कामयाबी हासिल हो जाए तो उसको सामने वाले पर बढ़ाई का नाम दिया जाए और जिस से सामने वाले की अना को ठेस पहुँच जाए।

5- वह बहसों जिनमें सामने वाला या उसके रिश्तेदार और दोस्तों में से किसी के किसी काम या बात को सिर्फ़ और सिर्फ़ ग़लत साबित करना मक़सद हो।

6- ऐसी बहसों जो उस सब्जेक्ट पर की जा रही हों जिसके बारे में अपने समाज, पैरेंट्स व स्कूल वगैरा से इम्प्रेसड होने की वजह से सामने वाले ने एक ख़ास नज़रिया बना रखा हो और जिसको छोड़ने के बारे में वह सोचना भी न चाहता हो।

यह सारी वह बातें हैं जिनमें सामने वाले का दिल जीतने के लिए और उसको काएल करने के लिए लफ़्ज़ी जंग का बिल्कुल सहारा नहीं लेना चाहिए बल्कि इस सिलसिले में उन रास्तों को चुनना चाहिए जो पूरी तरह ज़बानी लड़ाई-भिड़ाई से پاک हों। ●

मरयम

की तरफ़ से

हम आपके घर लेकर आए हैं खूब सूरत और कीमती

- पहला इनाम : उमरा
दूसरा इनाम : फ़िज़
तीसरा इनाम : माइक्रोवेव
चौथा इनाम : मोबाईल सेट
पांचवां इनाम : डिनर सेट
छठा इनाम : ज्वैलरी
सातवां इनाम : मिक्सर
आठवां इनाम : पंखा
नवां इनाम : लेमन सेट
दसवां इनाम : घड़ी

तोहफ़े



दिसम्बर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ़ से दी जाने वाली आखिरी तारीख़ तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।
अगर आप मरयम के सब्सक्राइबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।
खुद भी सब्सक्राइब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राइब कराईए और इस स्कीम से फ़ायदा उठाने का मौका हाथ से मत जाने दीजिए!



नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छापे जाएंगे। दिसम्बर 2011 से नवम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फैसला ही आखिरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एपेलाज़ का हक़ नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:

+91-522-4009558

+91-9956620017 (Lucknow)

+91-9892393414 (Mumbai)

maryammonthly@gmail.com

السلام عليكم يا باجى الهدى



GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN

403 & 404, A Block

REGALIA HEIGHTS

Ahmadabad Palace Road

KOHE-FIZA

BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.

+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"

G-1, Krishna Apartment

Plot No. 2, Firdaus Nagar

Bairasia Road, BHOPAL

+91-755-2739111

